रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 10, अक्टूबर 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
वार्षिक - 720/-
आजीवन – 10000/-

अनुक्रमणिका

स्कूल चले हम 6
पुष्प 7
वीर सिपाही बनकर मैं 8
पंचतंत्र की कथाएँ- हाथी और चूहे 9
नन्हीं चींटी 11
बारिश 13
मेरा वतन 15
सूरज का घमंड 17
भोर 18
तिरंगा 19
भारत भूमि 20
अधूरी कहानी पूरी करो 22
ईमानदार वीर बालक 22
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 22
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी 23
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 24
अमित के गणित शिक्षक 24
आया सावन झुमके 26
शिक्षक 28
कोरोना कोरोना तू दूर कहीं चले जाना 30
बाल पहेलियाँ 31
मेरे गुरुजी 33
मेरा वतन हिन्दुस्तान 35
राखी 36
गाँव के सुरता 37
लाल रंग की कार 39
भ्रूण हत्या 40
सूरज 42
अब मीना भी स्कूल जाती है 43
मच्छर 45
चूहे 46
आत्म प्रशंसा एक बीमारी 47
बरसे पानी 49
नन्ही सी कली 50

हरियाली 52
रक्षा बंधन 53
सिरतोन कहत हव संगी 54
सम्मान 55
मोर मुंगेली के नाव ह 56
शिक्षक 57
कृष्ण जन्म 58
परिवार 60
लूट कर खाने का मजा 62
अच्छे बच्चे 63
आयी दीवाली 65
मम्मी 66
ओभर कांफिडेंस 67
चलो चांद पर मम्मी 68
शिक्षा की ज्योति 70
प्राचीन शिव मंदिर 71
मेरी स्कूल यात्रा 72
बढ़त मनखे के आबादी 74
गुरु माँ की महिमा 76
मर्दानी 77
हमर छत्तीसगढ़ के भोजली तिहार 78
मेरी दीदी 79
चलें स्कूल 80
दशहरे का मेला 82
टमाटर 85
नन्ही सी गुड़िया 86
ठंड की बात 87
हमारे प्रेरणा स्रोत 89
मजा बारिश का 92
मेरी अभिलाषा 93
बर का पेड़ 95
समाधान 96
फूलों का ककहरा 99
शिक्षा 100
शिक्षक 101
छत्तीसगढ़िया के चिन्हारी 102
वृक्ष 104

कौन रोक पाया है 105
कोरोना का कहर 106
बाल पहेलियाँ 107
बादल की धुन 108
घमंडी हाथी 109
दो सहेलियाँ 110
शिक्षक है निर्मल नभ 113
गुरु नमन 115
प्यारा मुन्ना 116
मुझे गर्व है शिक्षक होने में 117
दिशा ज्ञान 119
चतुर गाड़ीवान 120
माँ को नमन 122
संघर्ष 124
The Cat 125
माँ-बाप मेरे घर के 126
गाजर लाल, टमाटर लाल 127
संकल्प गीत 129
आषाढ़ के सुघ्घर महीना 130
तीज 131
अगर ना होते 132
मेरी माँ 133
सिक्छित कोन 134
हिंदी मेरी भाषा 136
शिक्षक जी 138
बचपन की यादें 139
छत्तीसगढ़ 141
सब पढे-सब बढे 142
जुगाली 143
मातृभाषा हिंदी 144
इनको सच ना मानो 145
गढ़बो नवा भविष्य 146
हिंदी दिवस 147
मेरी टीचर 148
माँ 149
जन, जल व जंगल 150
हिंदी दिवस 152

अलविदा, मेरे प्यारे बेटे! 153
भारत देश हमारा 155
वृक्षारोपण 156
कुकरी पिला के जान बाहचगे 157
सावन आया झूम के 159
कैलाश में सावन 160
शंकर भोला 162
सावन के सुवागत हे 163
चल रहा हूँ 164
ज्ञान -भक्ति का स्वरूप 166
जंगल के जीव 168
गुमनाम हो गई 170
गरमी के छुट्टी 171
हिन्दी हिन्द की शान है 172
ओ हो काली निराली कोयल 173
माटी के मुसवा 174
जल की रानी है मछली 175
गुरु ऋण 176
हमें बताओ 177
पितर पाख 178
ताल-तलइया 179
चित्र देख कर कहानी लिखो 180
रजनी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी 180
वृक्षनरी 180
सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी 181
टिंकू की शरारत 181
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 182
चींटी और किसान 182
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 183
भाखा जनऊला 184

संपादक- डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक- डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ- पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

हम सब ने बीते लगभग 2 वर्षों से "कोरोना का कहर" का कठिन परिस्थितियों में सामना कर अपनी जीत हासिल करने की ओर अग्रसर हैं, वह दिन अब दूर नहीं. किंतु अभी भी हमें उन नियमों का पालन करते हुए, अनुशासन में रहना होगा, इसका मतलब है- मास्क, सोशल डिस्टेंस, हाथ धोना यह हमें भविष्य में भी अपनाना होगा. बच्चों आपने और शिक्षकों ने मिलकर स्कूल खुलने उपरांत पिछले 2 वर्षों की बिगड़ी पढ़ाई की भरपाई के लिए जो मेहनत और संघर्ष कर रहे हैं, वह बहुत ही प्रशंसनीय हैं.

इस माह हमारे राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गांधी जी की और पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. लालबहादुर शास्त्री जी एवं मिसाइल मेन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम जी की जयंती है, अपेक्षा है कि आप अपने शिक्षकों के साथ मिलकर उपरोक्त इन महान महापुरुषों का देश पर किए अतुल्य योगदान को याद करते हुए उनकी जीवनशैली की विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं एवं उनके उदाहरणों को हम अपने जीवन में उतारने के लिए बेहतर सोंच के साथ, हम सब संकल्पित होंगे.

जय हिंद

आपका
आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित.

संपादक
डॉ. आलोक शुक्ला

स्कूल चले हम

रचनाकार- खेमराज साहू

स्कूल चले हम; स्कूल चले.
अब तो बच्चे स्कूल चले.
बहुत दिन हुए स्कूल गए.
हमको स्कूल अब जाना है.
रोज पढ़ाई करना है.

कब से हम स्कूल से दूर रहे.
मानो; हम सब कुछ भूल रहे.
पढ़ना-लिखना सब कुछ छूटा.
खेलकूद से नाता टूटा.
अच्छा इंसान बनने,स्कूल चले.

जल्दी से टीका लगवाएं.
ज़रूरी है मास्क लगवाएं.
सामाजिक दूरी भी रखनी है.
नाश्ता-पानी ले साथ चले हम.
स्कूल चले,स्कूल चले हम.

हे प्रभु! अब विनती सुनो हमारी.
मुश्किलें हट जाएँ अब सारी.
कोरोना को भारत से हटा दो अब.
बहुत दिन हुये घर पर हमको.
स्कूल जाना है मिलकर हमको.

*****

पुष्प

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

लाली पीली बैंगनी, बागों खिलते फूल.
उपवन में रहते सभी, कलियाँ जाती झूल.

कलियाँ जाती झूल, प्रेम की बात बताती.
अपने खुशबू संग, बाग को वह महकाती.

रंग-बिरंगे फूल, सजे पेडों की डाली.
मधुर-मधुर मुस्कान, बिखेरे सुंदर लाली.

काँटे सँग रहते सदा, सुंदर-सुंदर फूल.
कोमल-कोमल पंखुड़ी, नहीं चुभते शूल.

चुभे कभी नहीं शूल, बीच रहकर मुस्काती.
सदा बाँटती प्रेम, ईश चरणों में जाती.

ममता के ये फूल, हमेशा खुशियाँ बाँटे.
मिले ईश वरदान, करे रक्षा ही काँटे.

*****

वीर सिपाही बनकर मैं

रचनाकार- लुकेश ध्रुव

माँ मेरी बस्ता दो.
स्कूल पढ़ने जाना हैं.
पढ़-लिख कर मुझको,
ऊंचा नाम कमाना हैं.

बड़ा होकर फिर मैं.
फौज में भर्ती हो जाऊँगा.
वीर सिपाही बनकर मैं
दुश्मनों से लड़-भिड़ जाऊँगा.

मातृभूमि की रक्षा के लिए.
मैं भी शपथ खाऊंगा.
कितनी भी मुश्किल आये.
बिल्कुल नहीं घबराउंगा.

नाम मेरा अमर हो जाए,
कुछ ऐसा काम कर जाऊँगा.
दुश्मन देख थर-थर कांपे,
कुछ ऐसा कमाल दिखाऊंगा.

*****

पंचतंत्र की कथाएँ- हाथी और चूहे

किसी समय में किसी नदी के तट पर एक बड़ा नगर बसा हुआ था. नगर बहुत संपन्न था. वहाँ के लोग बहुत सुख से अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे. पर कहावत है न, "सब दिन जात न एक समान". वहाँ भी कुछ ऐसा ही हुआ. उस वर्ष बहुत वर्षा हुई. नदी ने अपना रास्ता बदल दिया. अब नगर से बहुत दूर बहने लगी.

धीरे-धीरे नगर के सभी जल स्रोत सूख गए. लोग इस नगर को छोड़ दूसरे नगरों और ग्रामों में बस गए. एक-दो वर्षों में नगर विरान खंडहरों में बदल गया. अब इन खंडहरों में चूहे रहने लगे.

इस नगर से कुछ ही दूर एक घना जंगल था. जंगल में और सब जानवर तो थे ही, हाथी भी बड़ी संख्या में रहते थे. महाकाय नाम का विशाल हाथी इनका नेता था. नगर के आस - पास पड़े सूखे का प्रभाव जंगल पर भी पड़ने लगा था. जंगल के सरोवर और तलैये धीरे-धीरे सूखते चले गए. हाथियों के कई छोटे बच्चे पानी के अभाव में जीवन न बचा सके.

एक बार हाथियों का दल पानी की खोज में जंगल से निकला और उस नगर से होते हुए गुजरा. नगर को पार करने पर उन्हें सँयोग से एक सरोवर मिला. गहरा होने के कारण वह पूरी तरह सूख नहीं पाया था. हाथियों का दल अपनी इस खोज से बहुत आनंदित था.

अब वे प्रतिदिन जंगल से निकलते और उस वीरान पड़े नगर से होते हुए सरोवर तक आते और फिर वापस जंगल लौटते. उनकी इस आवाजाही से खंडहरों में रहने वाले चूहे कुचल-कुचल कर मरने लगे.

इन चूहों का एक राजा था तीव्रदंत. उसे यह सब देख कर बहुत दुख होने लगा. अपनी प्रजा को इस तरह मरते देखना उससे सहन नहीं हो रहा था. उसने हाथियों के दल के नेता से मिलना निश्चित कर लिया.

अगले ही दिन वह अपने कुछ साथियों को लेकर जंगल में उस स्थान पर पहुँचा जहाँ हाथियों का दल रहता था. एक बड़ी चट्टान पर खड़े होकर उसने अपने हाथ जोड़ लिए और कहा, "हे महाबली गजराज ! मैं एक प्रार्थना लेकर आपके पास आया हूँ."
महाकाय ने उसे देखा और उसके निकट आकर कहा, "कहो, निर्भीक होकर अपनी बात कहो."
तीव्रदंत ने बड़ी ही विनम्रता से अपनी पीड़ा व्यक्त की और उनसे अपना रास्ता बदलने का अनुरोध किया.

महाकाय दयालु था. वह समझता था अपनों की मृत्यु कितनी पीड़ादायक होती है. उसने तीव्र दंत की बात मान ली.

तीव्रदंत ने आभार व्यक्त करते हुए कहा "आपका बड़ा उपकार है. आप सब बलवान और समर्थ हैं. आपको किसी की सहायता की आवश्यकता संभवत कभी न पड़े. फिर भी मैं वचन देता हूँ कि यदि कभी मैं आपके काम आ सकूँ तो अवश्य उपस्थित होऊँगा."

कुछ काल व्यतीत हुआ. एक बार उस जंगल में शिकारियों का एक दल पहुँचा. वे अपने राजा के लिए हाथियों को पकड़ने के लिए आए थे. उन्होंने धीरे-धीरे बहुत से हाथियों को अपने बड़े-बड़े जालों में फंसा लिया.

महाकाय भी मोटी रस्सी से बांध लिया गया था. बहुत प्रयत्नों के बाद भी वह स्वयं को और अपने किसी सदस्य को बंधनों से छुड़ा न सका. ऐसे में उसे तीव्रदंत का स्मरण हो आया.

उसने पूरे बल से चिंघाड़ना आरंभ किया. उसके साथी भी साथ-साथ चिंघाड़ने लगे. निस्तब्ध रात्रि में उनकी यह करुण पुकार दूर तक गूंजने लगी. यह आवाज तीव्रदंत ने सुन ली. उसने अविलंब समझ लिया कि हाथियों का दल अवश्य ही किसी संकट में है. सैकड़ों चूहों को अपने साथ लेकर वह जंगल की ओर दौड़ पड़ा.

कुछ ही समय में वे सभी हाथियों के समीप पहुँच गए.

उन्होंने देखा कि उनका अनुमान सही था. बिना विलंब किए अपने साथियों की सहायता से उसने सभी जाल और और रस्से काट डाले.

महाकाय और उसके साथियों ने बड़ी कृतज्ञता व्यक्त की. महाकाय ने कहा, "मित्र! इस संकट की घड़ी में आपने हमारे प्राणों की रक्षा की है. सच है, किसी को भी छोटा समझ कर उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती. पता नहीं किसे कब किसकी आवश्यकता पड़ जाए."

*****

नन्हीं चींटी

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

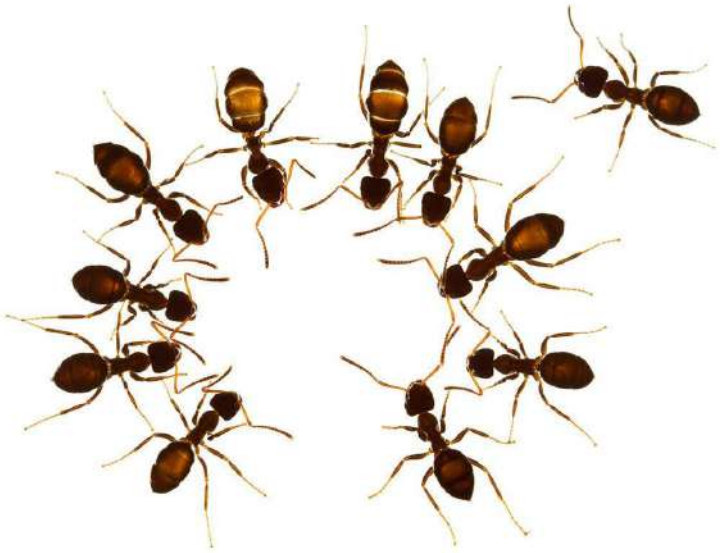

नन्हीं चींटी देखो,
हरदम चलते रहती.
न लड़ते, न झगड़ते,
हरदम खुश रहते.
हमेशा साथ चलते
न किसी को छोड़ते.
जो भी मिलता,
सब मिल-जुल कर खाते.

नन्ही चींटी देखो,
हरदम चलते रहती.
कोई भी कठिनाई आए,
अपना रास्ता स्वयं बनाएं.
अपने से कई गुना बोझ,
लिए मंजिल तक जाती.
ना थकती, ना कभी रुकती,
हरदम चलते रहती.

नन्हीं चींटी देखो,
इनके एकता में इतना दम.
मिल-जुल कर वे आपस में,
कई गुना बड़े बोझ को भी.
कितनी ऊंची डगर हो,
वे पार कर ही जाते.
इतनी शक्ति एकता में इनकी,
एक महल को भी ध्वस्त कर दे
नन्हीं चींटी देखो.

*****

बारिश

रचनाकार- सपना यदु

बारिश आई बारिश आई,
ढेर सारी खुशियां लाई.
रंग-बिरंगे छाते ओढ़ो,
रेनकोट भी पहनो भाई..
बच्चे देखो नाव बनाते,
बारिश के पानी में बहाते.
उछल कूद करते रहते,
धमा चौकड़ी खूब मचाते.

भीग- भीग कर नाच रहे हैं,
इधर -उधर सब भाग रहे हैं.
हरे- हरे मैदानों में सभी,
पकड़म पकड़ाई खेल रहे हैं.

बिजली चमकी देखो भाई,
और बादल भी गरजते.
रंग -बिरंगे पंख फैलाकर,
मोर भी है नाच करते.

टर-टर मेंढक टर्राते,
नदी तालाब खूब भर जाते.
तरह-तरह के कीट पतंगे,
बारिश में ही हम देख पाते.

बारिश आई खुशियां लाई,
प्रकृति ने ली अंगड़ाई.
हरे -भरे पौधों से देखो,
धरती में हरियाली छाई.

*****

मेरा वतन

रचनाकार- अविनाश तिवारी

कर समर्पण सर्वस्व अपना,
आजाद हमको कर गये.
सींच कर लहू से अमन,
वतन गुलजार कर गए.

पायी है आजादी हमने,
दी है उन्होंने कुर्बानियां.
माताओं ने लाल दिये है,
बहनों ने सुहाग निशानियां.

है वतन की मिट्टी में,
वो खाक बनकर मिल गए.
हंसते-हंसते जाने कितने,
फांसी पर वो झूल गये.

उनकी रहमत से हमने,
आजादी की नेमत पायी है.
खिल रही कली डाली पर,
खुशियों से चमन मुस्काई है.

आजादी के दीवाने वो,
ओढ़ा बसन्ती चोला था.
देखकर अपना वतन वो,
मस्तानों का टोला था.

खुश रहे चमन तुम
महके सदा गुलजार हो.
हम सफर करते हैं आखिर,
मेरे वतन की जयजयकार हो.

*****

सूरज का घमंड

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बहुत साल पहले की बात है. सूरज और बादल में गहरी दोस्ती थी. दोनो एक साथ रहते और घुमते थे. एक दिन बादल और सूरज में छोटा बडा होने की बात को ले कर झगड़ा हो गया. सूरज बोला मैं तुमसे बड़ा हूँ क्यों कि मैं सारी धरती के जीव जन्तुओ पेड़-पौधों और मनुष्यों को उर्जा देता हूँ. मैं सबको दिन का उजाला देता हूँ. अगर मैं उगना बंद कर दूं तो सारी पृथ्वी पर त्राहि-त्राहि मच जाएगी. सूरज कह कर खामोश हो गया. बादल की बारी आने पर उसने कहा मैं अपने आप पर घमंड नही करता हूँ. मैं अगर न रहूँ तो सारी पृथ्वी तुम्हारी गर्मी से जल मरेगी मैं पथ्वी के सारे जीव- जन्तुओं, पेड़- पौधों और मनुष्यों को जल दे कर नया जीवन देता हूँ, पर बड़ा होने का घमंड नही करता हूँ. यह कह कर बादल वहां से चला गया. अगले दिन बादल ने बिना किसी को कुछ बताए पूरे आकाश को ढंक लिया, अब सूरज परेशान हो जाता हैं, बोलता है बेहद अफसोस है कि मैं अपने ही दोस्त बादल से झगड़ा कर बैठा. मैं अपना बड़ा होने की बात वापस लेता हूँ तथा वादा करता हूँ कभी बड़ा होने का घमंड़ नही करूंगा. जाओ बादल से कह दो हमारे राह से हट जाए. हवा ने आ कर जब बादल से सूरज की बात कही तो बादल हंसते हुए बोला मुझे खुशी है कि सूरज का घमंड टूट तो गया. इतना कह कर बादल आकाश से हट गया. फिर बादल और सूरज में दोस्ती आज तक न हो सकी.

*****

भोर

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

रोज सुबह उठा करो,
नित्य योग किया करो.

मिलती वायु शुद्ध है,
होती काया विशुद्ध है.

देखो सविता निकल आई,
अंशुमाली में लालिमा छाई.

सुबह उठने से होते निरोग,
कभी न आता है भई रोग.

चेहरे पर मुस्कान खिलती,
तन-मन में ताजगी मिलती.

फिर दिन होता है गुलजार,
बच्चों लगता नहीं बेकार.

*****

तिरंगा

रचनाकार- तबरेज़ अहमद

यूं ही नहीं ये तिरंगा महान है,
यही तो मेरे देश की पहचान है.
हो गए कितने ही प्राण न्यौछावर इसके सम्मान में,
आज भी तिरंगे के लिए सबकी हथेली पर जान है.
मेरे दिलों जिस्मों जान से ये सदा आती है,
ये आवाज तिरंगा ही तो मेरा ईमान है.
मिट गए देश के खातिर कितने देश भगत यहाँ,
गांधी,तिलक,सुभाष, जवाहर इस तिरंगे की पहचान है.
भूला नहीं सकता कभी ये देश इन वीर जवानों को,
भगत सिंह,राज गुरु,सुखदेव इस तिरंगे के लिए हुए कुर्बान है.
घटा अमृत बरसाती, फिज़ा गीत सुनाती धरा हरियाली बिछाती है,
कई रंग कई मज़हब के होकर भी सबके हाथो में, एक ही तिरंगा है.
उत्साह की लहर शांति की धारा बहाती ये नदियाँ है,,
भारतीयता की पहचान बताती ये धरती सुनहरी नीला आसमान है.
करते है वतन से मुहब्बत कितनी ना पूछो हम दीवानों से,
वतन के नाम पर सौ जान भी कुर्बान है.
लिखी जाती है मुहब्बत की कहानियां पूरी दुनिया में,
मगर मुहब्बत का अजूबा ताज को बताकर मिलता हिंदुस्तान को स्वाभिमान है.
ज़मी तो इस दुनिया में बहुत है पैदा होने के लिए,
"तबरेज़" तू खुशनसीब है जिस ज़मी पर पैदा हुआ वो हिंदुस्तान है.

*****

भारत भूमि

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

धन्य धन्य हे भारत भूमि,
हो तेरी सदा जय-जयकार.
स्वर्ग सा सुन्दर हो धाम तेरा ,
हो तेरी सदा जय-जयकार.
हरितिमा ओढ़ाकर प्रकति,
सुन्दरता बिखरे चहुँओर.
उत्तर दिश में शीश मुकुट सा
अटल हिमालय बन प्राचीर.
सिन्धु तेरे चरण पखारता,
शीश झुका कर बारम्बार.
धन्य धन्य हे भारत भूमि,
हो तेरी सदा जय-जयकार.

तू है वीर बहादुरों की जननी,
कहते तुझे वीर भोग्या बसुन्धरा.
सुभाष, भगत, आजाद सा बेटा,
तुझको वन्दन करते बारम्बार.
अविरल प्रेम माधुर्य बहाकर,
करते धरा को सदा गुलजार.
धन्य धन्य हे भारत भूमि,
हो तेरी सदा जय-जयकार.

विविध बोली, भाषा से सजा देश,
जैसे विविध फूल हो गुलदस्ते में.
प्रेम सद्भावना रग-रग में बहती,
करते हैं विश्वास सदा प्रेम बहाने में.
रहते सब आपस में मिलजुल कर,
जाति-पाति, रंग रुप में ना कोई भेद.
रखते सब आपस में मेल मिलाप,
छल-कपट और रंज दिलो से मेट.
वसुधैव कुटुम्बकम भाव दिल मे,
जहाँ बहती हैं सदा बन रसधार.
धन्य-धन्य हे भारत भूमि,
हो तेरी सदा जय-जयकार.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी –

ईमानदार वीर बालक

रमेश बहुत ही प्यारा बालक था. वह कक्षा दूसरी में पढ़ता. रमेश विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय त्यौहार मनाया जाने वाला था. रमेश बहुत उत्साहित था इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए. रमेश को उसकी कक्षा अध्यापिका ने स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग लेने के लिए बोला था. उसके हर्ष का कोई ठिकाना नहीं था, वह खुशी-खुशी इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए तैयारियां करने लगा.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

रमेश स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग लेने के लिए अपनी स्कूल की यूनिफॉर्म, जूते एर्व मोजे की स्थिति देख रहा था. शर्ट पैंट और मोजा तो ठीक-ठाक था लेकिन जूता फटा हुआ था. फटे जूते को देखकर वह बहुत दु:खी हो गया क्योंकि जूता पहनने लायक ही नहीं था.रमेश अपने माता-पिता से नए जूते खरीदने के लिए भी नहीं कह सकता था. उसके माता-पिता इतने गरीब थे कि तुरंत नया जूता खरीदने में असमर्थ थे. रमेश की खुशी में कमी न आए यह सोचकर उसके पिताजी ने जूतों की मरम्मत करवाकर पहनने लायक बनवा दिया. स्वतंत्रता दिवस की परेड में रमेश ने भाग लिया था लेकिन उसे डर लग रहा था कि जूता पुनः फट ना जाए. उसकी अध्यापिका ने रमेश को चिंतित देखकर कहा-रमेश बेटा क्या बात

है? क्यों चिंतित दिखाई दे रहे हो? सिर नीचा कर रमेश अपनी अध्यापिका से कुछ न कहकर आगे बढ़ गया. तभी अध्यापिका की नजर उसके जूतों पर पड़ी. रमेश के जूतों की हालत देखकर अध्यापिका रमेश की परेशानी समझ गई.

स्वतंत्रता दिवस की परेड पूर्ण होने के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारंभ हुए. रमेश भी कार्यक्रम में शामिल हुआ था. सभी बच्चों ने कार्यक्रम में अपनी-अपनी प्रस्तुति दी. उपस्थित ग्रामीण, जनप्रतिनिधि एवं अतिथि रमेश की प्रस्तुति देखकर बहुत खुश हुए. इनाम के रूप में नगद राशि भी प्राप्त हुई. रमेश की अध्यापिका ने इनाम में प्राप्त राशि में, कुछ राशि अपनी ओर से मिलाकर रमेश के लिए नये जूते खरीदकर दिए. रमेश अध्यापिका से जूते लेने से मना करने लगा. अध्यापिका ने प्यार से समझाया कि यह जूते, जो इनाम में प्राप्त राशि से लिये गये हैं, तुम्हारी मेहनत का फल हैं. नये जूते पाकर रमेश बहुत खुश हो गया और उसने अपनी अध्यापिका को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया.

<u>यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी</u>

रमेश एक ईमानदार बच्चा था. वह अपनी परेड की तैयारियाँ जोरों से करने लगा. वह नियमित रूप से ईमानदारी के साथ अभ्यास करने लगा तथा उसकी लगन देख लोग काफी उत्साहित थे. रमेश अपने मम्मी के साथ बाज़ार जाकर स्वतंत्रता दिवस के एक दिन पहले ही जूता, कैप आदि आवश्यक सामग्रियाँ खरीद लिया अगले सुबह रमेश उठ गया और स्नान आदि कार्य पूरा करके परेड हेतु तैयार हो गया जब वह अपने मम्मी के साथ स्कूल की ओर जाने लगा उसने रास्ते में देखा की किसी का पर्स गिरा पड़ा है उसने अपने मम्मी को स्कूटी रोकने कहा और झट से पर्स उठा लिया और खोलकर देखने लगा उसमें एक परिचय पत्र था जिसे देखकर उसने मम्मी को फोन लगाने के लिए बोला तथा उसे अपना परिचय देते हुए बताया कि आपका पर्स हमारे पास है जिसमें आपके पैसे, एटीएम और अन्य दस्तावेज हैं. आप हमारे स्कूल आकर इसे प्राप्त कर लें. सज्जन बहुत खुश हुआ और मन ही मन बच्चे की ईमानदारी से काफी प्रभावित हुआ और झट से स्कूल पहुँच गया. रमेश स्कूल जाकर पूरी घटनाक्रम की जानकारी अपने शिक्षक को दिया और पर्स को सौंप दिया. सज्जन ने पूरी परेड देखी और वीर बच्चे के जुनून को देखा. शीघ्र ही मंच से ऐलान हुआ कि सज्जन आकर अपना पर्स ले लें ईमानदार रमेश के हाथों से. तभी सज्जन मंच पर आए और अपना पर्स प्राप्त किया और उसी पर्स से राशि निकालकर ईमानदार रमेश को पुरस्कृत किया जिससे रमेश काफी खुश हुआ उसकी मम्मी को भी काफी गौरव का एहसास हुआ कि उसका बेटा सही दिशा में आगे बढ़ रहा है एक दिन वह एक काबिल इंसान बनेगा और समाज में अपना और हमारा नाम रोशन करेगा.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

अमित के गणित शिक्षक

रजनी अपनी मित्र लीला के घर गई थी. दोनों साथ-साथ बाजार जाने वाले थे. लीला ने रजनी को बताया कि आज ही अमित का रिजल्ट आ गया है. अमित स्कूल से आ जाए फिर चलते हैं. दोनों बैठकर अमित की प्रतीक्षा करने लगे. रजनी ने लीला से मिठाई तैयार रखने को कहा, क्योंकि अमित हमेशा अच्छे नंबरों से पास होता रहा है.

थोड़ी ही देर में अमित स्कूल से आ गया. उसका चेहरा उतरा हुआ था. उसने अपना रिपोर्ट कार्ड माँ को देते हुए कहा कि मैंने आपसे पहले ही गणित की ट्यूशन लगवाने को कहा था.

लीला ने रिपोर्ट कार्ड देखा तो अमित को गणित में केवल 72 अंक मिले थे. लीला बोली कि तुमने तो सारे सवाल ठीक किए थे. तुम्हें कम से कम पंचानवे नंबर मिलने चाहिए थे. रजनी ने लीला से लेकर रिपोर्ट कार्ड देखा. अन्य विषयों में अमित को क्रमशः 86, 80, 88, 82, 90 अंक मिले थे. सबसे कम अंक गणित में मिले थे.

अमित गुस्से व दुख से कहने लगा कि सर बार-बार गणित की ट्यूशन लगवाने कहते थे तथा न लगाने पर परिणाम भुगतने की चेतावनी देते थे. पर माँ ने ट्यूशन नहीं लगवाई.

लीला ने कहा कि यह तो अंधेरगर्दी है. रजनी ने अमित से बातचीत कर सारी बातों की जानकारी ली.

उसे पता चला कि अमित के गणित शिक्षक मिस्टर पाठक हर बच्चे को ट्यूशन लेने के लिए कहते हैं. अमित के छमाही परीक्षा में छियानबे नंबर आए थे. पाठक सर ने फिर भी उसे ट्यूशन आने के लिए कहा था.

अमित इस स्थिति के लिए अपनी माँ को जिम्मेदार मान रहा था. रजनी ने उसे समझाया कि उसे इस बारे में अपने शिक्षक से बात करनी चाहिए. रजनी ने लीला से कहा कि उसे अगले दिन अमित के स्कूल जाकर पाठक सर से मिलना चाहिए.

यह सुनकर अमित डर गया और उन्हें स्कूल जाने के लिए मना करने लगा.

आगे क्या हुआ होगा, इसके बारे में आप सोचना शुरू करें और इस कहानी को पूरा कर हमें ईमेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज देवें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

आया सावन झुमके

रचनाकार- सपना यदु

आया सावन झूम- झूम,
धरती नाचे रुम -झुम, रुम -झुम.

चारों तरफ हरियाली छाई.
खेतों ने भी ली अंगड़ाई.

सभी किसान खुश हो जाते,
हल चलाते, फसल लगाते.

काले- काले बादल देख,
झूम -झूम कर मोर नाचते.

भोले भंडारी का दिन है आया,
सावन इनको खूब है भाता.

कांवर ले कांवरिया जाते,
भोले बाबा के ये भक्त कहलाते.

बच्चे देखो खुश हो जाते,
बारिश के पानी में नहाते.

कागज के ये नाव बनाकर,
बारिश के पानी में बहाते.

महिलाओं को भी सावन है भाता,
हरी चूड़ियां हाथों को सजाता.

पेड़ों की डालियों पर बांध के रस्सी,
सावन झूला इन्हें झुलाता.

चारों ओर हरियाली छाई.
धरती दुल्हन सी सजी है भाई.

*****

शिक्षक

रचनाकार- अंकुर सिंह

प्रणाम उस मानुष तन को,
शिक्षा जिससे हमने पाया.
माता-पिता के बाद हम पर,
उनकी है प्रेम मधुर छाया.

नमन करता उन गुरुवर को,
शिक्षा दें मुझे सफल बनाए.
अच्छे बुरें का फर्क बता,
उन्नति का सफल राह दिखाऐं.

शिक्षक अध्यापक गुरु जैसे,
नाम अनेकों मानुष तन के,
कभी भय, कभी प्यार जता,
हमें जीवन की राह दिखाते.

कभी भय, कभी फटकार कर,
कुम्हार भांति रोज़ पकाते.
लगन और अथक मेहनत से,
शिक्षक हमें सर्वश्रेष्ठ बनाते.

कहलाते हैं शिक्षक जग में,
बह्म, विष्णु, महेश से महान.
मिली शिक्षक से शिक्षा हमें,
जग में दिलाती खूब सम्मान.

शिक्षा बिना तो मानव जीवन,
दुर्गम, पीड़ित और बेकार.
गुरुवर ने हमें शिक्षा देकर,
हम पर कर दिए बहुत उपकार.

अपने शिष्य को सफल देख,
प्रफुल्लित होता शिक्षक मन.
अपने गुणिजन गुरुवर को मैं,
अर्पित करता श्रद्धा सुमन.

*****

कोरोना कोरोना तू दूर कहीं चले जाना

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

कोरोना-कोरोना, तू दूर कहीं चले जाना.
कसम है तुझे इस मिट्टी की, वापस फिर ना आना.
अगर तू वापस आएगा, फिर बहुत पछताएगा.
सैनिटाइजर के छिड़काव से, बच नहीं पाएगा.

कोरोना-कोरोना, तू दूर कहीं चले जाना.
बच्चे-बड़े-बुजुर्गों को, तूने बहुत रुलाया है.
अलग-अलग रूपों में आकर, दिल में खौफ जगाया है.
दो गज दूरी मास्क है जरूरी, यह तरीका भी अपनाया है.
पर तेरे विकराल रूप के सामने, यह भी काम ना आया है.

कोरोना-कोरोना, तू दूर कहीं चले जाना.
तेरे आ जाने से, मृत्यु दर कितनी बढ़ गई है.
जीवन तो लोग जी रहे हैं, पर रूहें उनकी डर गई हैं.
लोग घरों में सिमट गए हैं, गली मुहल्ला सुनी है.
पशु-पक्षी की आवाज भी, भू-आकाश में अनसुनी है.

कोरोना-कोरोना, तू दूर कहीं चले जाना.
स्कूल कॉलेज बंद कराकर, तू खुश मत हो जाना.
ऑनलाइन शिक्षा से पढ़ाएंगे, हम शिक्षकों ने है ठाना.
सुन ले कोरोना एक बात, तू जीत नहीं पाएगा.
वैक्सीनेशन के दो डोज से, तेरा वजूद खत्म हो जाएगा.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

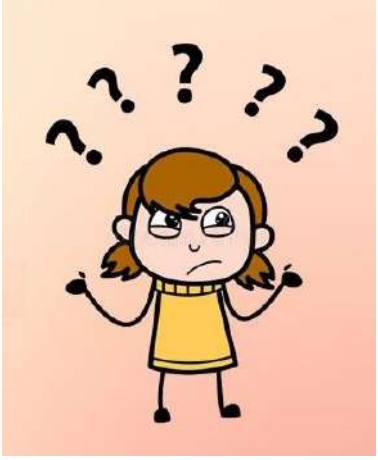

1. जीवन जिसके बिना अधूरा,
मिल जाये तो लगता पूरा.
दो अक्षर का मेरा नाम,
है अनेकों मेरे काम.

2. ऐसा तरल निराला हूँ,
चुस्ती फुर्ती देने वाला हूँ.
अंग्रेजों की खोज हूँ भैया,
नाम बता पाओ रुपइया.

3. तीन खम्ब जब मिल जाते,
गणित की आकृति बन जाते
तीन अक्षर का उसका नाम
नाम बताओ पाओ ईनाम.

4. तीन अक्षर का मेरा नाम
लिखने के मैं आती काम
बताओ मेरा क्या है नाम

5. सब देशों की खबर मैं लाता,
चार अक्षर का मेरा नाम.
बच्चे बूढ़े सब कोई चाहे,
नाम बताओ भोलूराम.

6. हरे पौधे बड़े निराले
खूब आक्सीजन देने वाले,
अपना भोजन स्वयं बनाते.
बोलो बच्चों क्या कहलाते,

7. मैं एक पक्षी अजब निराला,
सबसे तेज में चलने वाला.
प्यारे बच्चों नाम बताओ
कुछ तो बोलो मत घबराओ.

8. शांति मुझको अति प्रिय लागे,
तुरंत मुझे लो पाल.
लोग डाकिया कहते मुझको,
बतलाओ तत्काल.

उत्तर- 1. जल, 2. चाय 3. त्रिभुज, 4. कलम, 5. अखबार, 6. स्वपोषी पौथे, 7. शुतुरमुर्ग, 8. कबूतर

*****

मेरे गुरुजी

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

आँखों मे चश्मा चमक रहा,
है गेहुंआ रंग.
धोती कुर्ता पहन कर आते,
अजब निराले ढंग.

पतली छड़ी साथ वो लाते,
जब कक्षा में आते.
सब डर जाते देख छड़ी को,
दौड़ दुबक सब जाते.

फिर कहते एक पाठ निकालो,
मोनू जरा पढ़ो तुम,
ध्यान कहाँ है प्यारे बच्चे,
क्यों बैठे हो तुम गुम सुम.

मोनू भैया थर-थर कांपे,
कुछ बोल ना पाए.
आँखों में चमक सी आयी,
सुब्रत सर जब आये.

सुब्रत सर जब बोले सर से,
दूर छड़ी तुम फेंको.
अच्छे प्यारे बच्चे है ये,
फिर होशियारी देखो.

सर बोले फेंक छड़ी को,
डर कर कभी पढ़ो मत.
अच्छी बातें अपना लो,
गंदे काम की छोड़ो लत.

कक्षा बिल्कुल सुधर गयी,
जम कर नाम कमाया.
नाम हो गया मेरे सर का,
पुरुस्कार भी पाया.

*****

मेरा वतन हिन्दुस्तान

रचनाकार- मईनुदीन कोहरी "नाचीज"

मेरा वतन - मेरा वतन प्यारा है हिन्दुस्तान,
सबसे प्यारा मेरा प्यारा वतन है हिन्दुस्तान.

गगन को छूले ऊँचा शिखर जहाँ हिमालय,
जहाँ से निकले नदियाँ वो मेरा हिन्दुस्तान.

उत्तर का बड़ा मैदान नदियों से है खुशहाल,
खाद्यान जहाँ निपजे वो वतन है हिन्दुस्तान.

अनेकता में भी एकता जहाँ नजर आती हो,
विभिन्न जाति धर्मो का प्यारा है हिन्दुस्तान.

कशमीर से केरल तक एकता का संचार,
पूर्व से पश्चिम एक सूत्र में बँधा हिन्दुस्तान.

एक संविधान की छत्रछाया में सवा अरब,
एक भाषा से जुड़ा मेरा प्यारा हिन्दुस्तान.

हिन्दु, मुस्लिम,सिक्ख ईसाई वतन के लाल,
इनकी ताकत से फले-फूले मेरा हिन्दुस्तान.

मेरे वतन की महक से महके दुनियाँ सारी,
नाचीज' तकदीर से तू जन्मा वो हिन्दुस्तान.

*****

राखी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

कितना सुंदर है यह रिश्ता, दिल से सभी निभाते है,
भाई बहना दोनों मिलकर, गीत खुशी के गाते है.

मीठे-मीठे पकवानों की, महक घरों से आती है,
बच्चों के सँग दादी अम्मा, बैठ साथ में खाती है.

सुबह सबेरे उठकर बहना, सुंदर थाल सजाती है,
चंदन बंदन कुमकुम टीका, भैया माथ लगाती है.

बाँध कलाई रेशम डोरी, कितनी खुश हो जाती है
रक्षा करना मेरे भैया, मीठा बहन खिलाती है.

हर वचनों को पूरा कर के, वादा सभी निभातें हैं,
अपनी छोटी सी बहना को, सब उपहार दिलाते है.

*****

गाँव के सुरता

रचनाकार- तुलस चंद्राकर

मया-पिरित के धार बोहावत
घेरी- बेरी गोहरांव रे.
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मैं गाँव रे.

मोर चिन्हारी धुर्रा-माटी,
चिखला, छानही - परवा हे.
डोली - धनहा, मुही- पार अउ,
तरिया, डबरा, नरवा हे.
अंतस ल जुड़वाथे जिहां,
रुखराई के छांव रे.
गुरतुर बोली - भाखा जेखर,
अबड़ सिधवा मैं गाँव रे.

मोर अंगना म अटकन - बटकन
रेंहचुल, भंवरा- बांटी हे,
गिल्ली- डंडा फूगड़ी म
लइकन अड़बड़ खांटी हे.
बरसत पानी के रगड़ म,
जिहां बोहाथे नाव रे.
गुरतुर बोली - भाखा जेखर,
अबड़ सिधवा मैं गाँव रे.

होत बिहनिया चले नगरिहा,
जांगर टोर कमावत हे.
खेत में चटनी -बासी के संग,
ज़िनगी ल अपन चलावत हे.
धरती दाई के जतन करइया,
जेखर पखारंव पांव रे.
गुरतुर बोली -भाखा जेखर,
अब्बड़ सिधवा मैं गाँव रे.

मोर कुरिया म किसम-किसम के
तिहार बार मनावत हें.
ठेठरी- खुरमी, बरा- सोंहारी
खावत अउ खवावत हें.
कोरा हे मोर सरग बरोबर
लेथे दुनिया नाव रे.
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मैं गाँव रे.

निबल - पातर मनखे के संग
हावय मोर मितानी.
खोरबहरा अउ मंगलू, चैतू
करथे इहां सियानी.
सुरता करके दया - मया के
करथे कउवां कांव रे.
गुरतुर बोली -भाखा जेखर
अब्बड़ सिधवा मैं गाँव रे.

*****

लाल रंग की कार

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

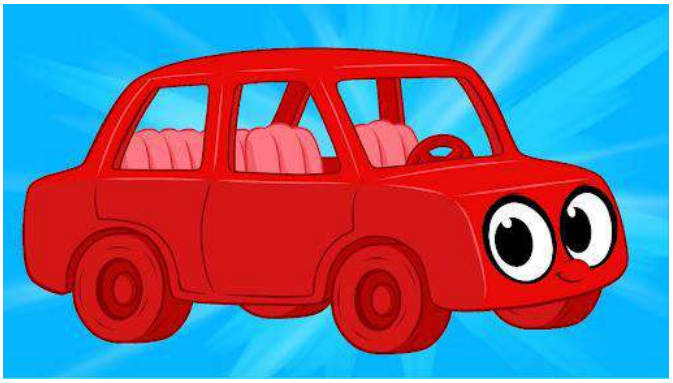

देखो बिटिया! सूरज की,
लाल रंग की कार.

सात रंगों वाली लाइट.
बहुत बढ़िया बहुत ब्राइट.

चक्के चमकीले चार.
लाल रंग की कार.

आई है देख गौरैया.
खड़ा है मुर्गा भैया.

कौआ पंख पसार.
लाल रंग की कार.

उनके साथ जाना है.
घूम-घाम कर आना है.

चल हो जा तैयार.
लाल रंग की कार.

*****

भ्रूण हत्या

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

बेटी अपनी माँ से कहती है-

मैं एक छोटी भ्रूण हूँ, आपका ही सुपाच्य आहार पीती हूँ.
मुझे मत मारो माँ, मैं आपके ही कोख में जीती हूँ.
मैं हूँ एकदम नादान, दुनिया के रिवाजों से अनजान.
मैंने क्या गलती की है, जिसका करती हूँ हरदम भुगतान.
क्या मैं लड़का नहीं, ये मेरी गलती है.
पर खून तो हम दोनों में, एक सा ही बहती है.
मुझे इस जग में आने दो, सांसारिक बंधनों में बंध जाने दो
मम्मी पापा का मान बड़े, ऐसे काम करके दिखलाने दो.
घर के सारे काम करूँगी, मुंह से फिर भी उफ्फ ना कहूँगी
जो भी दोगे सहर्ष लूंगी, इस बात पर भाई से नहीं लड़ूँगी.
बड़ी होकर ऐसा काम करूँगी, जग मे आपका नाम करूँगी
बेटा नहीं हूँ तो क्या हुआ, घर के सारे बोझ ढोऊँगी.
शादी होकर चली भी जाऊँ, मायके ससुराल का मान रखूँगी
कितने तकलीफों को सहकर भी, तुझसे माँ कुछ ना कहूँगी.
बेटी होने का हक दिला दो माँ, मुझे इस जग में दिला दो माँ
इस समाज के अन्याय से लड़ो माँ, मुझे मारने का पाप मत करो माँ.

माँ अपनी बेटी से कहती है-

मैं तो तेरी माँ हूँ, मुझमें ही तू पलती हैं
कैसे कहूँ मैं बेटी, तुझसे ही सांसे चलती हैं.
तुझसे ही मेरी खुशियाँ है, तुझसे ही मेरे गम हैं
तेरे आने की आहट से ही, मेरे दिल में उठी नई तरंग है.

मैं भी चाहती हूँ तू इस दुनिया में आए,
अपनी सारी इच्छाओं को पूरी कर पाए.
चाहे मेरी काम में मदद ना कर,
किंतु मुझे माँ कहकर तो बुलाए.
परिवारवालों की चाह है, तुम इस दुनिया में न आए
मुझे इतना मजबूर किया कि, घर की भेदी ना लंका ढाए.
मैं बेबस लाचार हूँ, किसी से कुछ ना कह पा रही
अपनों के ही दिए घाव को, चुपचाप बस सहते जा रही.
मुझे माफ कर देना बेटी, मैं तुम्हारी दोषी हूँ.
पर मेरी गलती क्षमा लायक नहीं, क्योंकि मैं तो आरोपी हूँ.

*****

सूरज

रचनाकार- अजय कुमार यादव

रोज सवेरे आकर हम सबको जगाता हैं,
चारों ओर देखोअपना प्रकाश फैलाता है.
दिन- दुनिया की यह समझ हमारी बढ़ाता हैं,
सूरज हम सबको संघर्ष करना सिखलाता है.

ठंड के मौसम में रहता हैं इसका इंतजार,
गर्मी के मौसम में ये करता हैं अपना प्रहार.
करोड़ो वर्षों से है दुनिया में ये प्रकाशमान
हम तो माने है सूरज को अपना भगवान.

धरती पर सूरज तो है जीवन का मूल आधार,
यहां पर हैं जीव जंतु, पेड़ -पौधे नाना प्रकार.
बड़ी मुश्किल होगी धरती पर जीवन का आधार,
सूरज ना रहा तो दुनिया में हो जायेगा अंधकार.

*****

अब मीना भी स्कूल जाती है

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

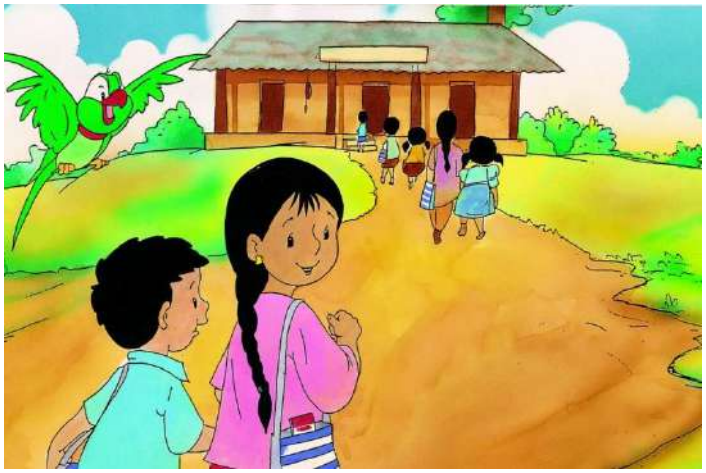

पाँच साल की मीना बहुत प्यारी बच्ची है. मीना के माता-पिता काम करने गाँव से बाहर गए हुए हैं. मीना अपनी दादी के साथ गाँव में रहती है. मीना अपने घर के पास चबूतरे पर खेल रही थी दिन के लगभग दस बजे थे, बहुत सारे बच्चे अपना-अपना बस्ता लिए स्कूल जा रहे थे. मीना खड़ी उन्हें देख रही थी. एक बच्ची ने कहा- मीना तुम भी स्कूल चलो, अपनी दादी से कहो कि स्कूल में तुम्हारा भी नाम लिखवाएँ. मीना ने सिर हिलाकर हाँ में जवाब दिया.

मीना दौड़ते हुए दादी के पास गई, और बोली- दादी मैं भी स्कूल जाना चाहती हूँ. मेरे सारे दोस्त अब स्कूल जाने लगे हैं और मैं अकेली रह जाती हूँ. मुझे भी स्कूल जाना है.

दादी- नहीं मीना, तुम स्कूल नहीं जा सकती, हमारी बिरादरी में किसी भी लड़की को स्कूल जाने की अनुमति नहीं है.

मीना को बहुत बुरा लगा और वह उदास हो गई. हर रोज मीना स्कूल जाते हुए बच्चों को देखा करती. एक दिन वह बच्चों के पीछे- पीछे स्कूल तक पहुँच गई. सभी बच्चे कक्षा के अंदर चले गए और मीना बाहर दीवार के पीछे बैठकर गुरूजी को पढ़ाते हुए सुन रही थी. पढ़ाई खत्म करके गुरूजी जब कक्षा से बाहर आए तो उसनें मीना को वहाँ बैठे हुए देखा.

गुरूजी को देखकर मीना उठकर भागने लगी.

गुरूजी- अरे बेटा! तुम कौन हो? तुम्हारा क्या नाम है?

मीना- नहीं गुरूजी! मैं यहाँ पढ़ती नहीं हूँ, मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझे यहाँ नहीं आना था. ऐसा कहकर वह डरकर रोने लगी.

गुरूजी- अरे बेटा डरो मत, मैं तुम्हें कुछ नहीं करूँगा. गुरूजी ने प्यार से कहा

मीना- जी, गुरूजी.

गुरूजी- बताओ तुम्हारा क्या नाम है? और तुम स्कूल पढ़ने क्यों नहीं आती हो?

मीना- गुरूजी! मेरा नाम मीना है, मैं पढ़ना चाहती हूँ लेकिन मेरी दादी कहती है कि हमारी बिरादरी में किसी भी लड़की को पढ़ने का अधिकार नहीं है और इसलिए वह स्कूल में मेरा दाखिला नहीं कराती है.

गुरूजी सोच में पड़ गए और वह मीना से बोले, चलो मैं तुम्हारी दादी से मिलना चाहता हूँ. मीना गुरूजी को दादी के पास लेकर गई. गुरूजी को मीना के साथ देखकर दादी को बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने गुरूजी से कहा- क्या हुआ गुरूजी? क्या मीना ने कोई गलती की है?

गुरूजी ने कहा- माताजी मीना ने कोई गलती नहीं की है गलती तो आप कर रहीं हैं. माताजी आजकल समय बदल गया है, लड़कों और लड़कियों में कोई अंतर नहीं है. लड़कियों को भी लड़कों की तरह हर चीज का अधिकार है. किसी भी वर्ग, बिरादरी की लड़कियों के पढ़ने लिखने पर कोई पाबंदी नहीं है, शिक्षा का अधिकार हर किसी को है. आप कल मीना को स्कूल लेकर आना. अब मीना अपनी सहेलियों के साथ पढ़ाई करेगी. ऐसा कहकर गुरूजी घर चले गए.

अगले दिन दादी मीना को लेकर स्कूल आईं और उसका दाखिला करवा दिया. अब मीना अपने दोस्तों के साथ रोज़ स्कूल जाती है और वह अपनी कक्षा की होशियार और होनहार छात्रा है.

*****

मच्छर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

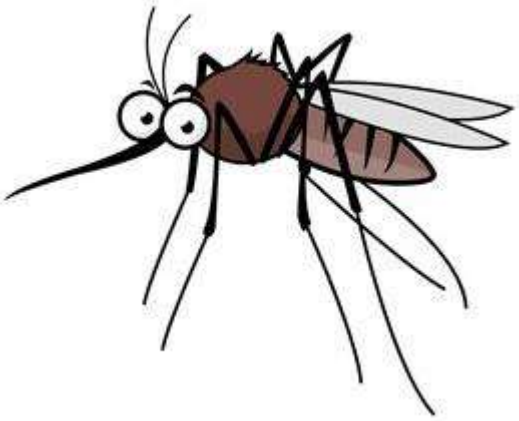

भन-भन-भन की आवाज,
सदा निकालता रहता मच्छर.
झाड़ी और नाला-नाली में,
तेजी से पनपता मच्छर.

रोज रात को झुंड में निकल कर,
गांव शहर में फैल जाते मच्छर.
घुस-घुस कर घर के अन्दर,
लोगों को सताते मच्छर.

खून के बड़े भूखे होते हैं,
खून ही बस पीते मच्छर.
मलेरिया और डेंगू का रोग,
चारों ओर फैलाते मच्छर.

रोज रात को नींद में आकर,
सब पर आफत काट-काट कर.
बदन में खुजुली,
हर एक को दे जाते मच्छर.

*****

चूहे

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बिल्ली ने खोली स्कूल,
चूहों को जब भूख लगी,
किताब कुतर कर खाए.

बिल्ली को यह देख कर,
चूहों पर गुस्सा आयी,
सबको मारने के लिए,
छड़ी हाथ में तुरंत उठाई.

डर के मारे चूहे सारे,
बस्ता ले कर भागे,
तभी आ गया हाथी,
सब चूहो के आगे.

बोला हाथी चूहों से,
कल से सबको मिलेगा खाना
सुन हाथी की बात,
चूहे गाने लगे सब गाना.

मान गए सब चूहे,
वापस स्कूल में आए,
बिल्ली मौसी ने सबको,
इतिहास भूगोल पढ़ाया.

*****

आत्म प्रशंसा एक बीमारी

रचनाकार- सीमा यादव

आत्मप्रशंसा अर्थात् अपनी प्रशंसा स्वयं (आप) ही करना है. इसी को "अपने ही मुँह मियाँ मिट्ठू बनना" कहा जाता है. यह एक मुहावरा है, जिसे हम आम बोलचाल की भाषा में सहज ही प्रयोग में लाते हैं. आत्मप्रशंसा कोई बुरी बात नहीं है, किन्तु अपने ही गुणों का गुणगान यदि व्यक्ति स्वयं ही करने लग जाता है तो उसकी गरिमा वहीं पर घट जाती है. आपने देखा होगा या गौर किया होगा कि विद्वान महापुरुष कभी भी अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं बल्कि अपने सारे अच्छे कर्मों का श्रेय भगवान को या अन्य को दे देते हैं, यही उनकी महानता का प्रथम परिचय भी होता हैं.

ऊँचे या शीर्ष पद पर आरुढ़ व्यक्ति को आपने देखा होगा कि उनके खान-पान, बोल-चाल एवं वेश-भूषा एकदम साधारण होते हैं. उनमें कोई दिखावा नहीं होता है. वे बहुत ही सरल, सहज एवं सादगी से परिपूर्ण होते हैं. ऐसे सरल व्यक्ति ही वास्तव में महामते और महाज्ञानी होते हैं. उनके शब्दों में मिठास होती हैं. वे शांत होते हैं. धीरे से अपनी बातों को सहजतापूर्वक समझाते भी हैं. ऐसे लोग सफलता की चरम सीमा के उस पार हो जाते हैं कि जहाँ कोई भी कार्य उनके लिए असम्भव नहीं होता है. वे जीवन के विभिन्न परिस्थितियों से गुजर चुके होते हैं. इसीलिए उनके स्वभाव में स्थिरता आ जाती है और ऐसे व्यक्ति ही वास्तव में मनुष्यता के वास्तविक स्वरूप को परिभाषित करते हैं अपने नेक और लोकहित के कार्यों के माध्यम से. ये ईश्वर द्वारा भेजे गये परमार्थी और प्रतिनिधि होते हैं, जिनका उद्देश्य ही परमार्थ के कर्मों में जीना होता हैं.

वर्तमान परिवेश की बात करें तो हमारे आस पास ऐसे सैकड़ों व्यक्ति मिल जाएंगे, जो अपने छोटे-छोटे कर्मों को रिकार्ड, फोटोग्राफी, अखबारों एवं मीडिया में बढ़ा -चढ़ाकर प्रेषित करते फिरते हैं. ऐसे लोगों की वाहवाही भी खूब होती है. आजकल लोगों को स्वयं ही बताना पड़ता

है कि मैंने फलां ट्रस्ट या संगठन या फिर अनाथालय को इतना दान किया आदि, वगैरह वगैरह. मेरे भाई! ये अच्छी बात है कि आपने अच्छा और अनुकरणीय कार्य किया और समाज के लिए एक सकारात्मक पहल वाले भी है आपके सारे कार्य. लेकिन जरा विचार कीजियेगा और खुद से प्रश्न भी कीजियेगा कि क्या मैं अपनी प्रशंसा करुँगा तभी लोगों को मेरे कर्मों के बारे में पता चलेगा? तब देखिएगा, आपके अंतर से आवाज आएगी कि नहीं, अच्छे कर्मों को बखान करने कि आवश्यकता नहीं पड़ती है. बल्कि आपका व्यक्तित्व ही आपके कर्मों की पहचान हैं. इसमें तनिक भी संदेह नहीं कीजियेगा. आजकल तो प्रत्येक क्षेत्र में पुरस्कार रख दिया गया है, जो उस पुरस्कार को पाने की योग्यता रखता है उसे खुद ही आवेदन करना पड़ता है. इसके लिए विशाल मात्रा में लोगों के मध्य अंधाधुंध होड़-सी लगी होती हैं. यही सबसे दुःखद और बड़ी विडंबना है. मुझको बहुत ही कष्ट होता है जब लोगों को खुद ही अपने बारे में बताना पड़ जाता है कि मैं अमुक अधिकारी हूँ. मैंने ऐसा किया, वैसा किया इत्यादि. ये सब चीजें व्यर्थ एवं बाह्य आडंबर को बढ़ावा देने का एक मात्र तरीका है और इसके अलावा कुछ भी नहीं है. आत्मप्रशंसा के भूखे लोग बड़े ही स्वार्थी, चापलूसी और ईर्ष्यालु होते हैं. वे अपने समकक्षी मित्रों के साथ धोखा करने से भी नहीं चूकते हैं. हमेशा दूसरों को नीचा दिखाने के प्रयास में लगे होते हैं. इस तरह से ऐसे लोग खुद के ही शत्रु बन जाते हैं. दूसरों की नजरों से तो गिरते ही हैं स्वयं की दृष्टि से भी गिर जाते हैं. जब उन्हें अपनी भूल या गलती का एहसास होता है तब तक बहुत देरी हो चुकी होती है.

अतः भलाई इसी में है कि लोगों को आत्मप्रशंसा नामक बीमारी से बचे रहने की हर सम्भव कोशिश की जानी चाहिए, क्योंकि हम तो मनुष्य शरीर में कर्म करने के उद्देश्य से ही धरती पर अवतरित हुए हैं. ये हमारा परम एवं सर्वोच्च कर्तव्य है. अच्छा कर्म करना हमारा नैतिक धर्म है. फिर क्यों इतनी अपेक्षा करते हैं. यदि हमारा कर्म उत्तम हैं तो उसका मीठा फल हमें ही प्राप्त होगा और यदि हमारा कर्म नीचा है तो उसका कड़वा फल भी हमको ही चखना पड़ेगा. फिर इतनी आतुरता क्यों? क्या एक पुरस्कार या मेडल ही आपकी योग्यता को सिद्ध करता है? नहीं, बिल्कुल नहीं, अतः स्वयं से ही विचार मंथन कीजियेगा कि हमारा वास्तविक धर्म क्या है? इसी से आपके सारे सवालों का जवाब मिल जायेगा.

*****

बरसे पानी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

रिमझिम-रिमझिम बरसे पानी,
चहक उठी है चिड़िया रानी.
हरियाली पेड़ो पर छायी,
डाल-डाल पर वह लहरायी.

गलियाँ सारी सूनी रहती,
रिमझिम पानी उसमें बहती.
मिट्टी की खुशबू है आती,
सबके मन को वह बहलाती.

रंग- बिरंगी तितली आती,
बैठ पुष्प पर वह मुस्काती.
पुष्प रसों को वह पी जाती,
जीवन में खुशियाँ बिखराती.

पानी की बौछारें आती,
सब के तन मन को भीगाती.
जब-जब आती बरसा रानी,
सबको लगती बड़ी सुहानी.

*****

नन्ही सी कली

रचनाकार- यक्ष चंद्राकर

गर्भ मे माँ तेरी, आशाओं की बांधी डोरी,
रग रग मे बहती, माँ ममता है तेरी.
तेरी ममतामयी मुखड़ा देखने की चाहत,
पूरी कर लेने दो,
नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो.

सुनी आंगन, सनसनाती ये गलियाँ,
मेरे इंतजार मे ये फूलो की कलियाँ
चाहत भी इनकी, संग मेरे खेलने की,
आंगन मे गौरया सी चहकने की चाहत,
पूरी करने दो,
नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो.

चाहत है पढ़ने की, चाहत है बढ़ने की,
अशिक्षा का ये अंधकार भगाने,
समाज के बुराइयों से लड़ने की.
किरण सा प्रकाश फैलाने की चाहत,
पूरी कर लेने दो,
नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो.

नदियो से निरंतरता, आकाश सी ऊँचाई,
हवा सा बहाव, बादलो सी भलाई,
कल्पना सी उड़ान भरने का चाहत,
पूरी कर लेने दो,
नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो.

रह जाएगा यह संसार अधुरा, बिन मेरे,
बेटी, बहन, पत्नी, माँ जैसे, जाने कितने रूप है मेरे
सरस्वती, लक्ष्मी, काली, दुर्गा, आदि रूपो मे पूजी जाती हूँ.
प्रतिभा सी प्रतिष्ठा पाने की चाहत,
पूरी कर लेने दो,
नन्ही सी कली हूँ, मुझे खिल जाने दो.

*****

हरियाली

रचनाकार- वीरेंद्र कुमार

सावन आगे सावन आगे,
बारिश की रिमझिम फुहार आगे.
खुशबू की मिठ बयार आगे
धरती दाई की खुशहाली
चलो मनाबो आज हरियाली.
हरियाली के पावन तिहार
बंधागे गांव गांव के सियार.
सावन अमावस्या हरेली तिहार,
सबो मनाबो खुशियां हजार.

धरती दाई के सेवा बजाबो
सुघ्घर सुघ्घर फसल उगाबो
धरती दाई संग खुशियां मनाबो.
नवा नवा रोटी पीठा संग,
अऊ बोबरा चिला हे
नवा नवा बोली भाखा संग
गुरतुर बोली के चिन्हा हे.

सावन महिना रिमझिम फुहार
धरती दाई करे सिंगार.
चिरई चिरगन नाचे डाली डाली
चलो मनाबो आज हरियाली.

*****

रक्षा बंधन

रचनाकार- मईनुदीन कोहरी "नाचीज बीकानेरी"

जात-पाँत से ऊपर उठकर
सदियों से
रक्षाबंधन का
पुनीत पर्व मनाते हैं.

राष्ट्रहित में
समाज के हर वर्ग के लोग
हिल-मिल कर
इस पर्व को मनाते हैं.

बहनें अपने भाइयों की
कलाई पर
राखी का धागा बाँध
पवित्र पर्व मनाती हैं.

संकट की घड़ी में
साथ देना बहन का
याद दिलाने को
यह पर्व मनाते हैं.

यह पर्व भाई बहन के
पवित्र प्यार को
अक्षुण्ण रखता है,
इसीलिए यह पर्व मनाते हैं.

*****

सिरतोन कहत हव संगी

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

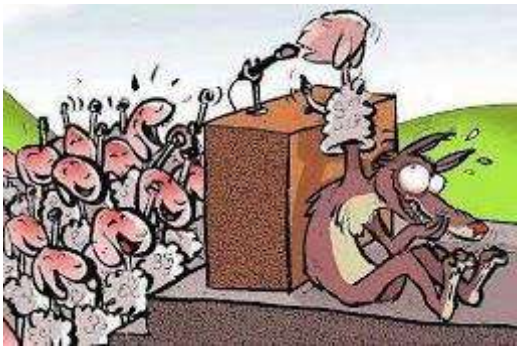

कथनी अउ करनी म अंतर देखें हव भारी,
सिरतोन कहत हव संगी नई मारत हव लबारी.
कइथे कुछु करथे कुछु, दुनियाँ के रीत बड भारी,
बस देखावा के दुनियाँ म सब निभावत हे दुनियादारी.
सिरतोन कहत हव संगी नई मारत हव लबारी.
थोरकों लाज नई आवय इनला, नाक बाढ़य इखर नव बिता .
जबान के कीमत का हे जाने बस मोर मैया सीता.
सिरतोन कहत हव संगी नई मारत हव लबारी.
झूठ, फरेब, देखावा,लालच के चीखला म जेन गड़े हे.
अंतस इखर धिक्कारय तको नहीं मुर्दा बन परे हे.
सिरतोन कहत हव संगी नई मारत हव लबारी.
कथनी अउ करनी म अंतर देखें हव भारी.
सिरतोन कहत हव संगी नई मारत हव लबारी.

*****

सम्मान

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

जीवन है नित सम्मान का,
माता –पिता के वरदान का.
सम्मान उन गुरुओं के लिए ,
जिन्होंने जीवन की समझ बनाई.

सम्मान उस किसान का,
जो उगाते अन्न जीवन के लिए.
देश की सेवा के लिए जिसने,
तन-मन वार दिया
सम्मान उस जवान का.

जीवन है नित सम्मान का,
डाक्टर नर्स और जवान का.
सम्मान उनके लिए भी जो,
जुटे हैं नित देश की प्रगति में.

सम्मान उन सबके लिए भी
जो जीवन को महका देते हैं
नन्हें मुलायम से पौधे को,
जो सुदृढ़ बना देते हैं.

मैं सबके गुणों का सम्मान करूँ,
सबके पग में अपना शीश धरूँ.

*****

मोर मुंगेली के नाव ह

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

मोर मुंगेली के नाव ह,
रुख राई के छाँव ह.
मोला निक लागे न,
मोर मुंगेली के गुरतुर बोली.
मोर मुंगेली के सुग्घर बोली,
मोला निक लागे न.
मोर मुंगेली के नाव ह,
रुख राई के छाव ह,
मोला निक लागे.
हरियर हरियर छाये हरियाली,
हरियर खेती खार हावय मोर भाई.
देख के ऐला बढ़ नीक लागे न,
मोर मुंगेली के नाव ह.
रुख राई के छाव ह,
मोला निक लागे न.
मोला सुघर लागे न.

*****

शिक्षक

रचनाकार- मनोज कश्यप

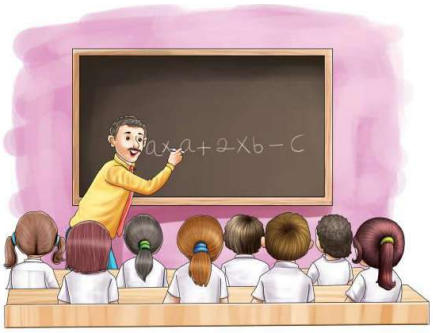

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है.
जहान सारा शिक्षक के पीछे चलता है.
शिक्षक का बोया पेड़ बनता है.
छात्र रूपी हर बीज शिक्षक की छत्र छाया में पलता और बढ़ता है.
काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है.
शिक्षक धरा से अंबर को जोड़ सकता है.
शिक्षक की महिमा महान होती है.
शिक्षक बिन अधूरी वसुंधरा रहती है.
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था.
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था.
बालक चंद्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था.
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था.
संदीपनी से गुरु, सदियों से होते आए हैं.
कृष्ण जैसे नन्हें-नन्हें, बीज बोते आए हैं.
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम हैं.
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है.
शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक बन जाते राम हैं.
शिक्षक की अनदेखी से वह रावण भी कहलाते हैं.
हम सब ने भी शिक्षक बनने का सुअवसर पाया है.
बहुत बड़ी जिम्मेदारी को हमने गले लगाया है.
आओ हम संकल्प करें कि अपना फर्ज निभाएंगे.
अपने प्यारे भारत को हम जगतगुरु बनाएंगे.
अपने शिक्षक होने का हरपल अभिमान करेंगे.
इस समाज में हम सब अपना शिक्षा दान करेंगे.

*****

कृष्ण जन्म

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

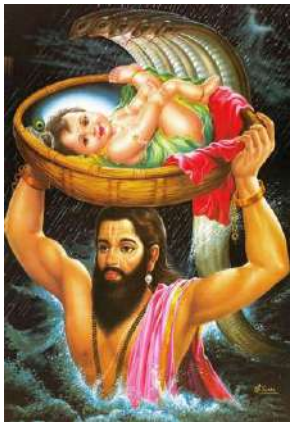

जन्म लिये जब कृष्ण, घना बादल था छाया.
बरसे पानी मेघ, देख मन भी घबराया.

टूटे बेड़ी हाथ, पाँव के बंधन खोले.
देख देवकी मात, तनिक कुछ भी नहि बोले.

बाल रूप में आज, प्रगट हो गये मुरारी.
दिखे साँवला रूप, कृष्ण मारे किलकारी.

मधुर-मधुर मुस्काय, देवकी मात निहारे.
अपने धुन में खेल, लगे हैं कितने प्यारे.

पकड़े वासुदेव, सूप में कृष्ण सुलाये.
गड़-गड़ गरजे मेघ, नन्द बाबा घर जाये.

करते यमुना पार, राह कठिनाई आये.
लेते प्रभु का नाम, राह को ईश दिखाये.

खुश होते हैं ग्वाल, सभी त्यौहार मनाते.
बजते ढ़ोलक ताल, गीत खुशियों के गाते.

खुशी-खुशी से देश, जलाते दीपक प्यारे.
कृष्ण जन्म में आज, मनाते उत्सव सारे.

*****

दाई

रचनाकार- द्रोणकुमार सार्वा

बबलू, गुड्डी, भोलू, मुन्नी,
सब बर मया दुलार ए दाई.
काम बुता सब जतन-रतन ले,
सँवरे घर संसार हे दाई.

रोटी, सब्जी दार भात म,
ममता भरे बघार हे दाई.
सुर म लोरी, परी कहानी,
तोर कोरा भरमार हे दाई.

धर के अँगरी नान्हे पाँव ले,
नपा डरे संसार ल दाई.
भूख पियास छुपा के दुख ला,
खुशी घोरे हर तिहार म दाई.

सुआ अस बाँचत भर डारे,
भाखा के भंडार ल दाई.
तोर असीस हर बार मिले हे,
जिनगी मोर उधार हे दाई .

*****

परिवार

रचनाकार-वंदिता शर्मा

परिवार को बनते और बिगड़ते देखा,
रिश्तों को अपना रंग
गिरगिट की तरह बदलते देखा.
परिवार को मजबूती से पकड़कर चले.
तो रिश्तों में मजबूती आते देखा.

टूटते परिवारों को
बुजुर्गों की सूनी आँखों में पिघलते देखा.
पिता के त्याग और माता के स्नेह से
परिवार को बढ़ते देखा.

बुढ़ापे में परिवार का बोझ फिसलते देखा.
इस परिवार की खातिर,
माता-पिता पर कर्ज़ को चढ़ते देखा.
जायदाद पर परिवार को बेदख़ल होते देखा.

सात जन्मों का साथ निभाने वाले परिवारों को देखा.
धरती ,पर्वत, सूरज, चाँद,
इनसे भी रिश्ते जुड़ते देखा.
अहंकार में परिवार का दोहन होते देखा.

सबसे जुड़ता है परिवार जब आप में हो सामंजस्य.
पर आपसी मनमुटाव से टिकता नहीं परिवार,
दो दिन की है जिन्दगी साथियो,
आपस में कर लो प्यार

समेट के रख लो ये परिवार
आज की इस महामारी में
परिवार को अलग होते देखा.

वो दिन कब आएँ,
जब सब मिलकर पुनः एक हो परिवार.
सुखी जीवन जीने का कर्णधार है परिवार.

*****

लूट कर खाने का मजा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

टनटन बंदर से सारे वनवासी बहुत परेशान थे. वह आए दिन जानवरों के खाने की चीजें लूट कर खा जाता था. एक रोज बंटू खरगोश अपने जन्म दिन पर कालू हाथी से केक बनवा कर घर ले जा रहा था. उसी वक्त रास्ते में उसकी भेंट टनटन से हो गई. टनटन बंटू को रोक कर पूछ पड़ा. बताओ इस डिब्बे में क्या ले जा रहे हो? आज मेरा जन्म दिन है. इस डिब्बे में मैं अपने जन्म दिन का केक ले जा रहा हूँ. अच्छा तो आज तेरा जन्म दिन है. मगर मैंने तो आज तक अपना जन्म दिन नही मनाया. आज मैं अपना जन्म दिन मनाऊंगा. इतना कह कर टनटन बंटू से केक का डिब्बा छीन कर बोला मैं आज इसे खाऊंगा. तुम दुसरा केक खरीद कर घर ले जाओ. इतना कह कर टनटन केक का डिब्बा ले कर पेड़ पर चढ गया. फिर उसे खोल कर खाने लगा. बंटू को दूसरा केक खरीद कर ले जाना पड़ा. एक रोज ब्लैकी भालू एक डिब्बे में कुछ ले कर जा रहा था. उसी समय टनटन भी वहां आ गया. टनटन ने ब्लैकी भालू को रोक कर पूछ पडा ब्लैकी इस डिब्बे में क्या ले जा रहे हो? गरम गरम रस गुल्ले. रसगुल्ले का नाम सुनते ही टनटन के मुंह में पानी भर आया. वह बोला आज मैं यह रसगुल्ला खाकर ही रहूंगा. इतना कह कर टनटन ब्लैकी से रसगुल्ला का डिब्बा छीनने लगा. यह देख ब्लैकी बोला रसगुल्ला हमसे छीन क्यों रहे हो लो यह डिब्बा और प्रेम से रसगुल्ला खाओ. इतना कह कर ब्लैकी ने रसगुल्ला का डिब्बा टनटन को पकड़ा दिया. टनटन रसगुल्ला का डिब्बा ले कर पेड़ पर चढ़ गया.

*****

अच्छे बच्चे

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

हम अच्छे बच्चे कहलाएँ.

कर्तव्यों के लिए सजग हों,
बने नागरिक जिम्मेदार.
वातावरण बनाएँ सुंदर,
बुराइयों पर करें प्रहार.

गाँव, गली या कार्यस्थल पर,
कहीं गंदगी न फैलाएँ.
हम अच्छे बच्चे कहलाएं.

हम सब बचत करें पानी की,
नल की टोंटी खुली न छोड़ें.
इधर-उधर थूकना गलत है,
अच्छाई से नाता जोड़ें.

कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
डस्टबीन को प्रयोग में लाएँ.
हम अच्छे बच्चे कहलाएं.

खाने को बर्बाद न करना
मूल्यवान है अन्न का दाना.
कागज व्यर्थ न फाड़े-फेकें
इससे सीखें पेड़ बचाना.

बिजली के उपकरण बंद कर,
आवश्यकता हो तभी चलाएँ.
हम अच्छे बच्चे कहलाएँ.

*****

आयी दीवाली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

दीप जले, आयी दीवाली
जगमग हुई अमावस काली.

खील, खिलौने, गट्टा, चूरा
पूजा का सामान है पूरा.

श्रीलक्ष्मी, गणेश जी बैठे
सजी हुई है सुंदर थाली.

क्या शोभा विद्युत लड़ियों की
धूम मची है फुलझड़ियों की.

सबके मन उत्साह भरा है
मुख पर प्रसन्नता की लाली.

बाँटें शुभकामना - बधाई
मित्रों को दें भेंट - मिठाई.

दूर करें अज्ञान अँधेरा
और हो नया सवेरा.

जीवन में छाए खुशहाली
दीप जले, आयी दीवाली.

*****

मम्मी

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

कितनी प्यारी मम्मी हैं,
हमारी प्यारी मम्मी हैं.
जिसने हमको चलना सिखाया,
दुखों से लड़ना सिखाया.
महान् हमारी मम्मी हैं,
हमको प्यारी मम्मी हैं.

जिसने प्यार करना सिखाया,
जीने की राह दिखायी.
वह प्यारी हमारी मम्मी हैं,
हमको भाती मम्मी हैं.
बच्चों की प्यारी मम्मी हैं,
हमारी प्यारी मम्मी हैं.

*****

ओभर कांफिडेंस

रचनाकार-आशा उमेश पान्डेय

गगन और अमन एक ही कक्षा में पढ़ते थे. गगन पढ़ने में थोड़ा कमजोर था पर उसका व्यवहार सरल था. अमन पढ़ने में तो होशियार था पर बहुत अहंकारी था. एक दिन लघु अवकाश में अमन ने गगन से गणित का एक प्रश्न पूछा, गगन उसका जवाब नहीं दे सका तो अमन ने अन्य साथियों के सामने गगन का बहुत मजाक उड़ाया और कहा कि अगर तुझे इतने सरल से सवाल का जवाब नहीं आता तो तू पढ़ाई छोड़ दे और जाकर कुछ काम कर. मांॅ बाप के पैसे क्यों बर्बाद कर रहा है. गगन को बहुत दुख हुआ पर उसने उस समय कुछ भी नहीं कहा. पर अब वह पूरी मेहनत से पढ़ाई करने लगा.

लगभग 6 माह बाद वार्षिक परीक्षा हुई. जब परिणाम आया तो गगन कक्षा में प्रथम स्थान पर रहा और अमन दूसरे नम्बर पर आया. अमन को अब अपने गलत व्यवहार के कारण बहुत आत्मग्लानि और पश्चाताप हुआ.

अमन, गगन के पास गया और उसने अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी. उस समय अमन को महसूस हुआ कि ओवर कांफिडेन्स में कभी भी नही रहना चाहिए, हमेशा सोच समझ कर ही बोलना चाहिए. ओवरकॉन्फिडेंस से काम बिगड़ता है बनता नहीं है.

*****

चलो चांद पर मम्मी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

चलो चांद पर मम्मी,
यहां नही है रहना.
बहुत बुरे हैं लोग यहां के,
इनसे बच के रहना.

देश हमारा कंगाल हो रहा,
रह कर यहां क्या करेंगे.
भीख मांगने पर भी,
यहां रोटी नहीं मिलेंगे.

घूम रहे हैं यहां पर,
चारो तरफ अपराधी.
और बड़े है कातिल,
पहने कुर्ता खादी.

चंदा मामा से कह कर,
थोड़ी सी जगह मांग लेंगे.
अपने रहने के लिए,
एक झोपड़ी डाल लेंगे.

चांद पर चल कर मम्मी,
अपना जीवन बचा लेंगे.
देश के तड़ीपारों से,
छुटकारा तो पा लेंगे.

रोज यहां पर होते रहते है,
हिन्दू मुसलीम दंगे.
देश के रखवाले,
इनसे लेते रहते पंगे.

चांद पर चल कर मम्मी,
इन सब से छुटकारा पा जाएंगे.
चैन से वहां रहेंगे,
चैन की रोटी खाएंगे.

चाहें कुछ भी हो जाए,
हमें चांद पर जाना है.
वहां पहुंच कर हमको,
एक नई दुनिया बसाना है.

*****

शिक्षा की ज्योति

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

जो हैं अटके, भूले-भटके उनको राह दिखाएँगे.
ज्ञान-विज्ञान संस्कार सिखा शिक्षा जोत जलाएँगे.
शिक्षक हैं हम, शिक्षा की ज्योति जलाएँगे.

देश-धर्म और जात-पात से हम ऊपर उठ जाएँगे.
समता का नवगीत रचेंगे ज्ञान का अलख जगाएँगे.
शिक्षक हैं हम, शिक्षा की ज्योति जलाएँगे.

छूट गए जो अंधियारे में अब अलग नहीं रह पाएँगे.
शिक्षा के अमर उजाले में उनको भी हम लाएँगे.
शिक्षक हैं हम, शिक्षा की ज्योति जलाएँगे.

खेल-खेल में पढ़ना होगा, ढंग नए अपनाएँगे.
महक उठेगा सबका जीवन, सब बच्चे मुस्काएँगे.
शिक्षक हैं हम, शिक्षा की ज्योति जलाएँगे.

*****

<u>प्राचीन शिव मंदिर</u>

रचनाकार- अलका राठौर

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले का ग्राम गतौरा, बिलासपुर से 15 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है जो पुरातत्विक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है. यह स्थान उन लोगो के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिन्हें प्राचीन मंदिरों और स्मारकों में भ्रमण करना पसंद है. आइये एक नजर डालते हैं इस पर्यटन स्थल प्राचीन शिव मंदिर गतौरा पर.

गतौरा का यह प्राचीन शिव मंदिर बहुत सुंदर है और छत्तीसगढ़ के अन्य पुरातात्विक मंदिरों की तरह यह मंदिर भी तालाब के किनारे स्थित है यह मंदिर पुरातत्व की दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके उत्खनन के समय प्राप्त अवशेषों से पता चलता है कि यह मंदिर कलचुरियों द्वारा बनवाया गया था. तेरहवीं शताब्दी में बने इस मंदिर का संरक्षण भारतीय पुरातत्व विभाग करता है और इस मंदिर को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा एक संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है.

बिलासपुर शहर से यह मंदिर लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यहाँ पहुँचने के लिए गतौरा तक ट्रेन से या सड़क मार्ग से आया जा सकता है. इस मंदिर में शिवरात्रि में काफी चहल पहल होती है और लोग इस प्राचीन मंदिर में शिव जी की पूजा करने आते हैं.

*****

मेरी स्कूल यात्रा

रचनाकार- अलका राठौर

हर प्यारी सी
सुबह-सुबह को
शुरू होती मेरी स्कूल यात्रा.
कुछ कच्ची गलियाँ,
एक सुंदर सड़क.
कहीं पकोड़े की खुशबू,
कहीं उबलती चाय कड़क.

पूरब से निकलता सूरज,
लालिमा फैलाता है.
पंछी अपना घोंसला छोड़,
दाने की तलाश में उड़ता है.
परवाज उनकी देख,
मन पंछी बन जाता है.
पंखों के बिना ही,
आसमान छू आता है.

बावरा मन जाने क्यों,
इतना जिद्दी हो जाता है.
चलते-चलते मन में,
चिंतन चलता रहता है.
बच्चों का चेहरा मन को,
खुश करता चलता है.

बच्चों से मिलने की,
खुशी के क्या कहने,
रोज सुबह तैयार रहती हूँ,
उनसे बहुत कुछ कहने.

कुछ कार- बसों से,
दो-चार होती हूँ.
कुछ ट्रकों की धूल से,
रोज लड़ती हूँ.
मंदिर की घंटियाँ,
भजन कानों को,
मधुर लगते हैं.

इन सबको पार करके,
जब मैं स्कूल पहुँचती हूँ.
सारा दुख, सारी थकान
गाड़ी की डिक्की में,
बंद करती हूँ.

चहक उठती हूँ मैं,
बच्चों का साथ पाकर.
महक उठती हूँ मैं,
अपने स्कूल जाकर.

*****

बढ़त मनखे के आबादी

रचनाकार- सोमेश देवांगन

बढ़त मनखे के आबादी,
देखव कइसे चारो ओर.
जात पात मा लीपा पोता,
बढ़ावत जनसंख्या घोर.

बढ़ावत जनसंख्या घोर,
सीना जोरी करत हे चोर.
बढ़त हावय जी मंहगाई,
देखव अब दांत निपोर.

दाँत निपोरे अब जी बइठे,
मनखे मन सब अब रोवय.
ए जात मा मनखे बढ़गे,
टुकुर टुकर ओला देखय.

बड़े के परिवार ये मनखे,
लइका ला कुछ न देवय.
पढ़ाय लिखाय ला भुला,
बुता काम मा वोला भेजय.

कमाई हवय जी सौ रुपिया,
खर्चा बाढ़े होंगे दु सौ रुपिया.
रहे बर जगह नई पुरत हे,
बोये पर नई दिखत हे भुंइया.

अपन गलती ला सुधारव,
अब फर्ज ला सब निभाववं.
समस्या के होही समाधान,
परिवार नियोजन ल अपनाववं.

*****

गुरु माँ की महिमा

रचनाकार- वंदिता शर्मा

गुरू माँ की महिमा क्या लिखूँ.
गुरु का स्थान ईश्वर से ऊँचा है.
जिसकी महिमा अपरंपार है.

गुरु माँ हो चाहे शिक्षक हो.
हमें जीने का तरीका सिखाती है .
गुरु माँ तेरी महिमा अपरंपार है.

दुनिया से अवगत करवाती है.
अच्छे-बुरे का भेद बताती है.

गुरु का सच्चे मन से ध्यान करें.
वे नवजीवन ज्योर्तिमय कर दें.
नई ऊर्जा शक्ति का हो संचार.
गुरू माँ तेरी महिमा अपरंपार.

*****

मर्दानी

रचनाकार- बिन्दु लता राठौर

वीरांगनाओं का ज़िक्र चला, जुबां सभी की बतलाती है.
मर्दानी अवतरण हुआ धरा पर, लक्ष्मीबाई कहलाती है.

देश, धर्म रक्षा की खातिर, इतिहास नवीन दे जाती है.
इस वीरांगना की वीर कथा, जिह्वा कहने में सकुचाती है.

मणिकर्णिका बनी मनु, झांसी के ठाठ निराले थे.
तन-मन न्यौछावर करने को, वीर बाँकुरे मतवाले थे.

थी गिद्ध-दृष्टि फिरंगी की, देख वैभव ललचाते थे.
जयचंद समाये निज घर में, रण बिगुल बजाया करते थे.

काल-चक्र भी धन्य हुआ, उसकी प्रतीक्षा का अंत हुआ.
युगों-युगों तक चर्चा हो, ऐसी रानी का प्रादुर्भाव हुआ.

आन-बान के साये में, तन फिरंगी हाथ लगने ना दिया.
ज्वाला स्वराज प्रज्ज्वलित कर, ऐसा महानिर्वाण हुआ.

*****

हमर छत्तीसगढ़ के भोजली तिहार

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू

छत्तीसगढ़ के लोक संसकिरिती हमर पारम्परिक तिहार भोजली ह कई सौ बछर ले अइसने चलत आत हे. भोजली छत्तीसगढ़ी परम्परा म सावन के महीना सुरु होय के बाद सुरु होथे. गाँव म दाई-बहिनी मन नान-नान टुकरी म गहूँ, चउर अउ जवा के दाना ल बोवाई कर के भोजली जगा के खेती-किसानी अउ परकीरति के हरियाली होवय कई के बिनती करथे. हमर संसकिरिती म भाई-बहिनी के मया, सुग्घर तिहार रक्षाबंधन के दुसरइया दिन भोजली के तिहार ल सब्बो जगह मनाथे. ये तिहार ल हमरो नानकुन गाँव लोहदा घलो म मनाय के परंपरा हे. ओही दुसरइया दिन भोजली दाई ल बिदा करे बर नदिया-तरिया म भोजली घाट तक भोजली ल मुड़ी म बोह के लइका-सियान मन सुग्घर भोजली गीत गा के भोजली दाई ल बिदाई देथे. हमर गाँव लोहदा म टेसुवा नदिया के तीर भोजली घाट (बाड़ा घाट) हे. इहाँ हमन भोजली दाई ल बिदाई देथन. भोजली घाट (बाड़ा घाट) कना परकीरीति ल देख के मनखे मन के संगे-संग भोजली दाई के मन घलो ह मगन हो जाथे.

हमर गवई गाँव म बड़-धुमधाम ले भोजली तिहार ल रंगझांझर ले महोत्सव के जइसे मनाथे. भोजली दाई के बिदा के बाद हमर छत्तीसगढ़ म मितान बदे के सुग्घर परम्परा हे. मनखे मन अपन पसंद के मनखे संग जिनगीभर संगवारी रहे के परण ले के मितान बदथे अउ एक-दूसर के कान म भोजली, दूबी ल खोचथे. एला कइथे हमर छत्तीसगढ़ के भोजली तिहार. आप जम्मो झन ल जय जोहर.

*****

मेरी दीदी

रचनाकार- अज्ञात

नाम है उसका तानी,
करती बहुत शैतानी.
घर की है वह रानी,
है मीठी उसकी वाणी.

उसको पसंद है,
इमली का खट्टा पानी.
गलती करने पर,
याद दिलाती है नानी.
स्कूल में बोलते उसको,
तानी मेरी रानी.

*****

चलें स्कूल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

आहा! फिर से शुरू पढ़ाई.
आओ! चलो चलें स्कूल .

कोरोना ने बहुत सताया.
हमको घर में बंद कराया.

अब जाकर कुछ हुआ है धीमा.
ढीली कर दी सबकी चूल.
आओ!चलो चलें स्कूल.

बहुत दिनों तक मारी छुट्टी.
सबने खूब पिलायी घुट्टी.

पढ़ाई बंद रही बहुत दिन.
बीता सब,उस पर डालें धूल.
आओ!चलो चलें स्कूल.

बन न जाएँ कोरोना रोगी.
बहुत सजगता रखनी होगी.

चहल-पहल फिर से लौटेगी.
अब न करना कोई भूल.
आओ! चलो चलें स्कूल.

विद्यालय में रौनक आयी.
हुई फिर से रँगाई और पुताई.

सजा हुआ मैदान खेल का.
खिले क्यारियों में हैं फूल.
आओ! चलो चलें स्कूल.

मेहनत कर अब खूब पढ़ेंगे.
हम सब आगे सदा बढ़ेंगे.

कोरोना अनुशासन मानें.
जाएँ नहीं प्रकृति प्रतिकूल.
आओ! चलो चलें स्कूल.

*****

दशहरे का मेला

रचनाकार- रंगनाथ द्विवेदी

बंटी ने अपने दोस्त चुन्नू से बात करते हुए कहा कि तुम्हें पता है चुन्नू, इस बार हम सभी लोग दशहरे की छुट्टियाँ बिताने कहाँ गए थे? चुन्नू बोला नहीं पता. बंटी बोला,- हम लोग इस बार दशहरे की छुट्टियों में दादाजी के पास गाँव गए थे. हमारे दादाजी के गाँव का नाम रतनूपुर है.

वहाँ दशहरे पर विशाल मेला लगता है, जिसे देखने बहुत दूर-दूर से लोग आते हैं, हमें भी दादाजी मेले में लेकर गए थे. अगर मेरे साथ तुम भी होते तो तुम्हें भी डर से नानी याद आ जाती.

अच्छा चुन्नू ने चौंकते हुए कहा, ऐसा क्या देख लिया तुमने मेले में?

बंटी ने एक झुरझूरी सी ली और माथे पर बह आए पसीने को रुमाल से पोंछते हुए बोला कि, उस मेले में जो व्यक्ति रावण बना हुआ था न, वह इतना डरावना लग रहा था कि पूछो मत. मै तो उसे देखकर बुरी तरह डर गया था और थरथर काँपने लगा था. अगर साथ में मेरे दादाजी न होते तो मैं वहीं डरकर बेहोश हो जाता.

उस समय मैंने दादाजी की अंगुली कसकर पकड़ ली थी और उनके पीछे छिप गया था. दादाजी मेरी हालत देखकर समझ गए कि मैं क्यों डर रहा हूँ. फिर उन्होंने उस डरावने रावण को अपनी कड़क और रोबदार आवाज़ में कहा कि रावण तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुमने मेरे सामने मेरे बच्चे को डरा दिया, चल जल्दी से मेरे पोते से माफी माँग नही तो आज तेरी खैर नहीं.

फिर तो मैं जिस रावण से डर रहा था, उसी रावण के सामने ऐसे तनकर खड़ा हो गया कि जैसे मैं उससे कह रहा हूँ कि, तुझमे हिम्मत है तो मुझे डराकर दिखा, फिर उस डरावने रावण की मेरे दादाजी के सामने पूरी हेकड़ी निकल गई . वो अपने हाथ जोड़कर, बोला कि, मुझे माफ कर दो बेटा.मैं अब तुम्हें ही नही बल्कि इस पूरे मेले में किसी भी बच्चे को नही डराऊँगा. मैंने अपने दादाजी की तरफ ऐसे देखा जैसे उनसे कह रहा हूँ कि, माफ कर दो इस बेचारे रावण को दादाजी.

मेरे दादाजी अपनी जवानी के दिनों में बहुत बड़े पहलवान थे. उनका उस समय पहलवानी में बड़ा नाम था. कई नामचीन पहलवानो को उन्होंने धूल चटाई थी, इसलिए उनकी रतनूपुर में बड़ी इज्जत है. इसी इज्जत और डर की वजह से ही तो उस रावण ने मुझसे मेले में माफी माँगी थी. जबकि उस बेचारे की कोई गलती नहीं थी. उसने मुझे डराया भी नही था वह तो मैं ही उसको देखकर डर गया था.

रावण के माफी माँग लेने के बाद मुझे दादाजी मेले में उस तरफ लेकर गए जहाँ गरमा-गरम जलेबी और खिलौनों की दुकानें लगी थीं. हमने और दादाजी ने खूब मजे से गरमगरम कुरकुरी जलेबियाँ खाईं. इसके बाद उन्होंने मुझे खिलौनों की दुकान से कई सारे खिलौने भी दिलवाए.

दादाजी बोले तो आओ अब हम लोग घर चलें क्योंकि अँधेरा बहुत हो गया है . मैंने दादाजी की अंगुली पकड़ी और हम घर की ओर चल पड़े रास्ते भर मुझको दादाजी यह समझा रहे थे कि, बेटा! हमें इतनी जल्दी किसी भी बात या घटना से डरना या घबराना नहीं चाहिए, बल्कि हमें उस परिस्थिति का धैर्यपूर्वक और बहादुरी से मुकाबला करना चाहिए.

तुम जिस रावण को मेले में देखकर इतना डर गए थे, वो कोई सचमुच का रावण नहीं था वो तो नकली रावण था. वह पिछले18 वर्षो से इस दशहरे के मेले में रावण बनता आ रहा है. वह इतना डरावना या अट्टहास करने वाला आदमी नही बल्कि वह तो गाँव का सीधा-सादा व्यक्ति गौरी शंकर है. जब दादाजी जी ने गौरी शंकर कहा तो मैं बोल पड़ा अरे! दादाजी वही गौरी शंकर न जिनसे आपने मुझे परसों मिलवाया था? अरे! वे बेचारे तो कितने सीधे-सादे हैं. मैं उन्हें मेले में असली रावण समझकर डर गया था. पर अगर सच मे असली रावण भी होता तो वो भी उतना डरावना न लगता जितना की गौरी शंकर दादा रावण के रूप मे लग रहे थे. मैं उनको उस रूप मे पहचान ही नहीं पाया था.

कोई बात नहीं बेटा गौरी शंकर बहुत बढ़िया कलाकार है. अगर कोई उनका घर संभालने वाला होता तो आज दशहरे के मेले मे रावण बने गौरी शंकर हिंदी सिनेमा में बहुत बड़े और चर्चित हीरो होते, गरीबी के चलते वे वहाँ तक नहीं पहुँच पाए.लेकिन जानते हो बंटी कि कितने लोग

तो केवल इसलिए दूर-दूर से इस दशहरे के मेले में आते हैं कि वे इस मशहूर कलाकार को एक बार देख सकें.

तब तक हम घर पहुँच गए थे. मैंने सोचा कि काश! हमारा ये घर थोड़ी और दूर होता जिससे कि मैं दादाजी से ढ़ेर सारी बातें कर पाता.

मैं जब तक गाँव मे रहा अपने दादाजी के पास ही सोता था. वे मुझे ढ़ेर सारी अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते थे. सच! चुन्नू जब से हम अपने गाँव से दशहरे की छुट्टियाँ बिताकर लौटे हैं तबसे मेरा मन इस शहर या स्कूल की पढ़ाई में नही लग रहा.काश! ऐसा होता कि मैं हर महीने अपने दादाजी के पास जा पाता.

तभी स्कूल की घंटी बजी और बंटी, चुन्नू के साथ अपने क्लासरूम की तरफ चल पड़ा.

*****

टमाटर

रचनाकार- सपना यदु

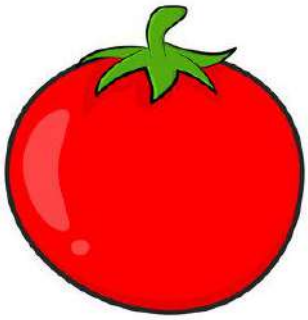

लाल टमाटर खाऊंगी,
लाल-लाल हो जाऊंगी.
मुझे स्लेट पेंसिल दे दो,
स्कूल पढ़ने जाऊंगी.

*****

नन्ही सी गुड़िया

रचनाकार- पूर्णिमा देशमुख

नन्ही-सी मेरी गुड़िया,
तू है जादू की पुड़िया.
गुड़िया ओ गुड़िया,
मेरी जादू की पुड़िया.
रोना नहीं-रोना नहीं,
हंसती-खिलखिलाती रहना.
यूं ही सदा-यूं ही सदा,
नन्हीं-सी मेरी गुड़िया.

नन्ही-सी मेरी गुड़िया,
तू है जादू की पुड़िया
ऐसी है तेरी सब अदा,
भाती है मुझको जो सदा.
प्यारी सी मुस्कान तेरी,
जीवन मैं भर देती खुशी.
सबको तू देती खुशियाँ,
नन्हीं-सी मेरी गुड़िया.
नन्हीं-सी मेरी गुड़िया,
तू है जादू की पुड़िया

*****

ठंड की बात

रचनाकार- कामिनी जोशी, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय दुल्लापुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

आओ मिलकर रहे साथ,
हम करें ठंड की बात.
पढ़ने में आता खूब मजा,
जब आसमान में धूप सजा.

किट किट करके बजते दांत,
सर्दी में जम जाते हाथ.
ऊनी स्वेटर भाये तन को,
गरम चाय ललचाये मन.

सन-सन हवा खीजवाती हैं,
तब भीनी धूप याद आती हैं.
मन न आते रोजमर्रा के काम,
कहे रजाई में घूसकर करें आराम.

पर घड़ी शोर हैं मचाती,
सबकों ठंडी में हैं भगाती.
दिन चढ़े भी गहरा अँधेरा,
चारो तरफ घना हैं कोहरा.

लगता हैं बादल मिलने आते हैं,
ठंडी का मल्हार गाते हैं.
गर्म पकोड़े,चटनी का स्वाद,
मन को भाए साथ मे प्याज़.

हमको है ठंडी का इंतजार,
अक्टूबर महीना जल्दी आओ पास.

*****

हमारे प्रेरणा स्रोत

हमारे 'मिसाइल मेन'

मेरे प्यारे बच्चो!

आज मैं तुम्हें एक नई कहानी सुनाने जा रही हूँ. यह कहानी है एक ऐसे बच्चे की जिसका जन्म गाँव में रहनेवाले एक बहुत साधारण परिवार में हुआ था. यह गाँव था तमिलनाडु का रामेश्वरम. वह बच्चा बचपन से ही आकाश के रहस्यों और पक्षियों के उड़ने में बहुत दिलचस्पी लेता था. वह बड़ा होकर एयर फोर्स पायलट बनना चाहता था. जानते हो, यही बच्चा बड़ा होकर एक दिन बहुत प्रख्यात वैज्ञानिक बना और फिर हमारे देश का राष्ट्रपति भी. अब तुम समझ गए होगे मैं बात कर रही हूँ अब्दुल कलाम साहब की. इनका पूरा नाम था, अबुल पाकिर जैनुलअब्दीन अब्दुल कलाम.

तुम शायद सोच रहे होगे कि एक छोटे से कस्बे में रहने वाला यह बच्चा वैज्ञानिक कैसे बना और बाद में देश का राष्ट्रपति भी ? बच्चो! यह असंभव नहीं है. यदि सच्ची लगन से निरंतर परिश्रम किया जाए तो कोई भी इंसान कुछ भी हासिल कर सकता है.

कोई भी माने कोई भी, "तुम भी."

एक बहुत अच्छी बात कही गई है-

"सपने वह नहीं होते जो रात को सोने पर आते हैं;

सपने वह होते हैं जो रात को सोने नहीं देते."

कलाम साहब का कहना था कि जब आप किसी चीज को शिद्दत याने पूरे मन से चाहते हैं तो पूरी कायनात याने सृष्टि उसे मिलाने में आपकी मदद करती है.

उनके माता-पिता ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे.उनके घर की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी. पर वह खुद घंटों पढ़ाई किया करते थे. उनके एक दोस्त जो बाद में चलकर उनके उनके बहनोई बने, ने उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित किया. वह रोज उन्हें विज्ञान व मेडिकल साइंस में हो रहे नए प्रयोगों की जानकारी देते. जिस कारण वह छोटे गाँव में रहते हुए भी बाहर हो रहे नए शोधों से अनजान नहीं थे. वह बड़े होकर देश के लिए कुछ करना चाहते थे. उनके शिक्षक भी उन्हें बार-बार प्रोत्साहित करते कि कैसे कम पढ़े लिखे मां-बाप के बच्चे भी जीवन में सबकुछ कर सकते हैं.

यह उन दिनों की बात है जब दूसरा विश्वयुद्ध खत्म हुआ था. हर कोई स्वतंत्रता का इंतजार कर रहा था.तभी उन्हें भी लगा कि इन स्वतंत्रता सेनानियों की तरह मुझे भी अपने देश के लिए कुछ करना होगा.उसके लिए मुझे एक अच्छे स्कूल में पढ़ना होगा. परंतु वह जानते थे कि मेरे माता-पिता फीस का खर्चा नहीं उठा पाएँगे. पर उनकी लगन देखकर उनके अब्बा एक दिन पास आकर बोले कि तुम जहाँ चाहते हो वहाँ पढ़ो. हम तुम्हारी फीस का इंतजाम करेंगे. उन्होंने बताया कि वह रामेश्वरम के एक अँग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ना चाहते हैं. उनके बड़े भाई पहले दिन स्कूल ले गए और एडमिशन की औपचारिकताएँ पूरी की.

एक दिन वह जल्दी में दूसरी कक्षा में चले गए.जहाँ गणित के शिक्षक पढ़ा रहे थे. उन्होंने उन्हें इस गलती पर खूब डाँटा. सबके सामने छड़ी से मारना शुरू कर दिया. वह बहुत उदास थे. उन्हें घर की याद आ रही थी. वह वापस घर आना चाहते थे. फिर उन्हें याद आया कि मेरे माता-पिता ने इस स्कूल में भेजने के लिए बड़ी कड़ी मेहनत की है. मुझे उनके सपने पूरे करने ही होंगे. उन्होंने कड़ी मेहनत की और गणित में सौ में सौ नंबर ले आए. स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे मद्रास चले गए जहाँ उन्होंने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण की.

यह लगभग सत्तर साल पहले की बात है. उस समय लोग धर्म को लेकर बहुत कट्टर हुआ करते थे. उनके स्कूल में एक विज्ञान के टीचर शिवा सुब्रमण्यम थे. वे बहुत उदार प्रकृति के सुलझे हुए व्यक्ति थे. वे लोगों को एक दूसरे से मिलकर रहने की बात करते थे. उन्होंने एक बार अब्दुल कलाम से पूछा कि क्या वह उनके घर खाना खाने चलेंगे. कलाम बहुत खुश हुए. वह जब उनके घर गए तो गुरुजी की पत्नी ने उन्हें भोजन नहीं परोसा. तब उनके गुरुजी ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें खाना परोसा. गुरुजी ने चलते हुए कहा, घबराओ मत. समाज में परिवर्तन कभी-ना-कभी तो आएगा. उनकी बातें उनके लिए प्रेरणा बनीं और उन्होंने जीवन में चुनौतियों का सामना करना सीखा.

वर्ष 1969 में उन्होंने भारतीय अनुसंधान संगठन इसरो में काम किया. उन्हीं के मार्गदर्शन में पृथ्वी का कृत्रिम उपग्रह रोहिणी पृथ्वी की कक्षा में वर्ष 1980 में स्थापित किया गया. उन्होंने भारत के लिए पृथ्वी, त्रिशूल,आकाश, नाग,ब्रह्मोस आदि कई मिसाइलें बनाईं. इसलिए उन्हें

भारत का मिसाइल मैन भी कहा जाता है. वर्ष 1992 से लेकर 1999 तक डॉ. कलाम रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन डीआरडीओ के सचिव भी रहे. 25 जुलाई 2002 को डॉ. कलाम ने भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लिया.

एक बार स्कूल में वह अतिथि बनकर गए. एक बच्चे ने पूछा, जीवन में सफलता कैसे मिलती है? तो उन्होंने कहा कि उसके लिए चार बातों को याद रखना बहुत जरूरी है. पहला बड़ा लक्ष्य,दूसरा अनवरत ज्ञान प्राप्त करते रहना, तीसरा कठिन परिश्रम और चौथा यह विश्वास रखना कि मैं सीखता रहूँगा और एक दिन अपने लक्ष्य को पा लूँगा.

उन्होंने अपनी पुस्तक "इंडिया 2020, ए विज़न फॉर द न्यू मिलेनियम" में लिखा है कि वह भारत को वर्ष 2020 तक एक विकसित देश और नॉलेज सुपर पावर बनाना चाहता हूँ. वे एक प्रख्यात वैज्ञानिक, प्रशासक, शिक्षाविद और लेखक के तौर पर हमेशा याद किए जाएँगे और आने वाली कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत रहेंगे.

बच्चो! मुझे आशा है कि कभी तुम्हारे मन में भी जीवन में कुछ विशेष बनने की इच्छा जागेगी और तुम उसे पूरा करने के लिए आगे बढ़ोगे.

तुम्हारी दीदी.

*****

मजा बारिश का

रचनाकार- देविका बंजारे, कक्षा 7वी, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय दुल्लापुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

पानी आया, पानी आया
साथ अपने लिए खुशिया लाया.
मेढक बहुत मस्ती करते,
टर्र-टर्र करके कान भरते,
जब-जब आती बरखा रानी,
खुशियों के फूल खिलाती,
चारो ओर होती हरियाली.
किट पतंगों का लगता मेला,
उस पर जुगनुओं का पहरा.
इस मौशम कि अलग ही बात,
क्या दिन और क्या रात.
लगता हर पल बड़ा सुहाना,
गर्म गर्म भजिया का खाना.
मन बदल जाये जब बादल गरजे,
जोर जोर से जब पानी बरसे.
ऐसा है ये बरसात सुहाना,
पानी आया पानी आया.

*****

मेरी अभिलाषा

रचनाकार- कामिनी जोशी, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय दुल्लापुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

कब तक परजीवी बनकर, अमरबेल से लिपटी रहूंगी
कब तक परजीवी बनकर, अमरबेल से लिपटी रहूंगी,
मैं कुएं के मेंढक नहीं, जो दायरे में सिमटी रहूँगी.

कभी संस्कारों के नाम पर, मुझे जंजीरों में जकड़ा जाता है.
कभी श्रद्धामयी ममतामयि बनाकर,
मुझे अपनों से लूटा जाता है.

कभी परिस्थितियां मेरे विपरीत कर दी जाती है.
मेरी आंतरिक आशाएं, अभिलाषाएं छीन ली जाती है.

कभी मेरी आकांक्षाएं पुरुष प्रधानता के आगे नत्मस्तक हो जाती है.
मेरे अंदर उम्र की भावनाएं बाहर आने से ध्वस्त हो जाती है.

मुझे यह समाज कोमल हृदय हैं, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति कहता है.
फिर मेरे अधिकारों का हनन कर, यह मुझ से कैसा बदला लेता है.

सामाजिक मर्यादाओं के उल्लंघन का, दुस्साहस मुझ में नहीं है.
पर मेरे अधिकारों की कोई उपेक्षा करें, यह मुझे बर्दाश्त नहीं है.

मैं भी अपनी प्रतिभाओं का, स्वर्णिम दिखाना चाहती हूं.
अपने अंदर के इस अंतर्द्वंद को, समेटना चाहती हूं.

मुझे अपनी आकांक्षाओं, अभिलाषाओं के साथ, आगे बढ़ने दो
समाज में फैली इस विकृतियों से, मुझे भी लड़ने दो.

मुझे दया नहीं, सहयोग चाहिए.
आपके प्रेम और बड़प्पन का साथ चाहिए.

मैं भी आपके समाज का, एक हिस्सा हूं
कभी न खत्म होने वाला, किसका हूं
कभी न खत्म होने वाला, किस्सा हूं.

*****

बर का पेड़

रचनाकार- रानू साहू, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय दुल्लापुर बाजार, पंडरिया, कबीरधाम

बहुत लुभाता है गर्मी में,
अगर हो बर का पेड़.
निकट बुलाता पास बिठाता
ठंडी छाया वाला पेड़.
बढ़ता धरती का तापमान,
दिन-दिन ऊंचा होता जाता.
झुलस रहा गर्मी से आंगन,
गांव-मोहल्ला कूंचा-कूंचा.
राहत भरी सांसे देता,
यह बरगद का पेड़.
बहुत लुभाता है गर्मियों में,
अगर हो बर का पेड़.

*****

समाधान

रचनाकार- किशन भावनानी

भारतीय सभ्यता में संस्कार, आज्ञाकारिता और मान सम्मान का महत्वपूर्ण स्थान है. भारत की मिट्टी में अनेक मानवीय गुण समाए हैं जो हर नागरिक की काया में जन्म से ही समाहित होते हैं. भारतीयता की यह पहचान रही है कि किसी भी समस्या को उग्रता, गुस्से या उद्दंडता से नहीं बल्कि संवाद के माध्यम से सुलझाने का प्रयास किया जाए. भारत की यह विशेषता विश्व प्रसिद्ध है और इस भारतीय मंत्र के कारण भारत की पहचान एक शांतिप्रिय देश के रूप में प्रसिद्ध है.

साथियों बात अगर हम समस्याओं के कारण होने वाली चिंता की करें तो, बड़े बुजुर्ग कहते हैं चिंता चिता के समान है. यदि मानसिक रोग से बचना है तो किसी भी समस्या पर सोचने के बजाय उसका हल तलाशें. पूरी नींद से दिमाग को आराम मिलेगा नहीं तो मानसिक रोगों की समस्या उत्पन्न होगी.

मानसिक रोग चिकित्सकों इस बात पर जोर देते हैं कि लोग किसी भी समस्या के बारे में लगातार न सोचें. लगातार सोचने की आदत मृत्यु के मुँह तक ले जा सकती है. हर एक मिनट का हिसाब रखती, भागदौड़ भरी आज की जीवनशैली में सबसे बड़ी और उभरती हुई समस्या है मानसिक तनाव. हर किसी के जीवन में मानसिक तनाव स्थाई रूप से अपने पैर पसार चुका है. तनाव व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है. इसके प्रति जागरूक होने के साथ तनाव को दूर करना होगा.

साथियों तनाव से मिलेंगी बीमारियाँ. तनाव आपको सिरदर्द, माइग्रेन उच्च या निम्न रक्तचाप, हृदय से जुड़ी समस्याओं का शिकार बनाता है. हृदयाघात का प्रमुख कारण मानसिक तनाव है. यह आपका स्वभाव चिड़चिड़ा करने के साथ आपकी मुस्कान को चुरा लेता है. इससे बचने के लिए तनाव पैदा करने वाले हर एक अनावश्यक कारण को जीवन से दूर करना जरूरी है.

साथियों अगर हम समस्याओं के समाधान की बात करें, तो समस्याओं का सही तरीके और कुशलता से समाधान करें, प्रायःअंतरवैयक्तिक कौशल का मतलब छोटी या बड़ी समस्या का आप पर होने वाला प्रभाव एवं उस समस्या के समाधान से ज्यादा आपका उस समस्या के प्रति आपका अपना व्यवहार प्रदर्शन होता है कि आप कैसे उसका समाधान ढूँढ़ते हैं. इसलिए ऐसी परिस्थिति में शांतचित्त होकर समस्या के समाधान के लिए प्रभावी कदम उठाने की क्षमता ही आपके अंतर वैयक्तिक कौशल का विकास करेगा. यह आपकी समस्या का समाधान करेगा तथा संवाद को टूटने से बचाएगा. संवाद टूटने से समस्याएँ बढ़ती हैं. शांतचित्त रहना भी आपकी मदद करता है, क्योंकि जब आप तनाव में होते हैं तो सही संवाद स्थापित नहीं हो पाता है.

अगर हम समस्याओं की बात करें तो, आधुनिकता के इस दौर में हम सभी एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं. कैसे सबसे आगे निकला जाए, यही सोच-सोचकर हम खुद को बीमार बना रहे हैं घर- परिवार, नौकरी या किसी भी विषय पर जरूरत से ज्यादा सोचना सेहत के लिए नुकसानदेह है. यह हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी रूप में आता है और मानवीय स्वभाव से वशीभूत होकर कई मनुष्य नकारात्मकता के घेरे में चले जाते हैं. अगर इसे हम आध्यात्मिक भाषा में कहें तो काल हमेशा मनुष्य को भटकाने के लिए तत्पर रहता है, परंतु यह मनुष्य पर निर्भर है कि वह सचेत होकर काल से बच जाए. अर्थात समस्या से मुकाबला कर उसके समाधान के बारे में सोच कर हल का रास्ता निकालना ही भारतीयता का परिचय है जो हमारी मिट्टी में समाया है, इसका मूल आधार है संवाद. समस्या के समाधान के लिए सुलह, शांति और बातचीत ही एकमात्र विकल्प है.

साथियों बात अगर हम संवाद की करें तो संवाद से ही हर समस्या का समाधान निकलता है. हमने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी देखा है कि कई बड़े-बड़े मसले और परेशानियाँ संवाद के आधार पर ही सुलझाई गई हैं और आज भी संवाद का यह मंत्र काफी कारगर सिद्ध हो रहा है. समस्याओं को पटखनी देने में सफल सिद्ध होता है. परंतु संवाद की भी अपनी सीमाएँ होती हैं, कठिन हालात मैं संवाद पर सावधानी से काबू पाएँ. संवाद के दौरान कठिन परिस्थितयों में आपको अपनी भावनाओं पर काबू पाने की क्षमता होनी चाहिए तथा दूसरों की भावनाओं का भी ख्याल रखना चाहिए. हमें लोगों की भावनाओं के बारे में पूर्वानुमान लगाना चाहिए, जब आप मुश्किल हालात पर बात कर रहे हों. यदि आवश्यक हो तो हमे लोगों को समझने के लिए समय देना चाहिए ताकि वे भी अपनी भावनाओं पर काबू पा सकें. प्रायः किसी भी प्रकार के परिवर्तन की स्थिति में संवाद स्थापित करना मुश्किल

होता है. अतः उन परिवर्तनकारी परिस्थितियों को समझना आवश्यक है न कि तुरन्त नकारात्मक प्रतिक्रिया जता देना. क्योंकि इससे सामान्य ढंग से काम करना मुश्किल होता है. परिवर्तन अपने साथ नए अवसर भी लाता है तथा परिवर्तन को टाला नहीं जा सकता. अतः सकारात्मक नजरिया होना तथा ऐसे कठिन हालातों में संवाद स्थापित कर पाना ही मुश्किल परिस्थतियों से पार पाने का सबसे महत्पूर्ण तरीका है.

अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन और विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि समस्या के बारे में सोचने से परेशानी मिलती है तथा समाधान के बारे में सोचने से रास्ते मिलते हैं इसलिए हमें किसी की समस्या के समाधान के लिए सकारात्मक संवाद के विकल्प को ही चुनना चाहिए. क्योंकि यह विकल्प एक मूल्यवान अवसर है. यह सफलता की सीढ़ी का प्रथम पहिया हैं जिसके आधार पर हम सफलता की पूरी सीढ़ी चढ़कर मंजिल तक पहुँच सकते हैं.

*****

फूलों का ककहरा

रचनाकार- श्रीमती रजनी

सब फूल पहुंचें पाठशाला में,
बैठ कर डालियों के झूलों में.
सोनधूप की कागज, मसि लेकर,
मौसम ज़िल्दवाली किताब लेकर.
पलाश का चेहरा ज़रा सूर्ख़ाब है,
गुलाब लिए मन में कई ख़्वाब हैं.
रात की रानी कितनी बातूनी है,
कनकचंपा ने सुनाई ये कहानी है.
गेंदा तो कुछ कुछ गुनगुनाती है,
भटकटैया नित बहाना बनाती है.
चंपा झटपट पूरा लिखती है,
मोगरा मगन मनन करती है.
कनेर देखे चुप कनखिंयों से,
पराग उलझते पंखुड़ियों से.
धूप छांव सरपट पहाड़ा पढ़ते हैं,
पत्ती पहुना सुख दुख बांचते हैं.
सीख लें इनसे जीवन का ककहरा
लगा हास अठ्ठाहास का जयकारा.

*****

शिक्षा

रचनाकार- सीमा यादव

हमें सम्पूर्ण बनाती है शिक्षा.
हमें गुप्त रहस्यों का ज्ञान देती है शिक्षा.
हमें दुर्गम पथ से उबारती है शिक्षा.
हमें तर्क -वितर्क सिखाती है शिक्षा.
हमें ईश्वर से भेंट कराती है शिक्षा.
हमें जीवन जीने की प्रेरणा देती है शिक्षा.
हमें असम्भव को सम्भव बनाती है शिक्षा.
हमें आत्मबोध कराती है शिक्षा.
हमें सतत् सीखने की कला सिखाती है शिक्षा.
हमें जमाने के विविध रूप दिखाती है शिक्षा.
हमें अदम्य साहस व शक्ति देती है शिक्षा.
हमें मानवता की राह दिखाती है शिक्षा.
हमें ज्ञान -विज्ञान का भेद बताती है शिक्षा.
हमें सद्मार्ग पर चलना सिखाती है शिक्षा.
हमें दुर्लभ विद्यार्जन करने की शक्ति देती है शिक्षा.
हमें अंधकारमय जीवन से मुक्ति दिलाती है शिक्षा.
हमें परमात्मा का साक्षात्कार कराती है शिक्षा.
हमें मानव रूप में परिपूर्ण बनाती है शिक्षा.

*****

शिक्षक

रचनाकार- सीमा यादव

वही शिक्षक श्रेष्ठ हैं,
जो हमारे सारे प्रश्नों का समाधान धैर्यपूर्वक करते हैं,
जो हमारे जीवन को गति प्रदान करके,
हमें नित्य लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हैं.

वही शिक्षक श्रेष्ठ हैं,
जो हमें सतत् प्रश्न करने के लिए उद्यम करते है,
जो हमें आत्मविश्वास और निर्भयता की शिक्षा देते हैं,
जो हमें जीवन पथ पर निरंतर चलने की प्रेरणा देते हैं.

*****

छत्तीसगढ़िया के चिन्हारी

रचनाकार- सपना यदु

हमन हरन छत्तीसगढ़िया
बासी चटनी म नून डारके खवईया.
मइनखे पहिरथे धोती कुर्ता,
अउ माई लोगन ह लुगरा.
बेर निकलगे जगावत हावय,
कुकड़ू कु करके कुकरा.

पंथी नाचे, सुआ नाचे
अउ नाचे करमा, ददरिया.
ठेठरी, खुरमी, चीला, फरा खावय
अउ निक लागे गुलगुल भजिया.

तीजा, पोरा, हरेली, भोजली
हमर कतको तिहार.
मया के अब्बड़ गांठ बांधके,
बन जाथे जम्मो चिन्हार.

हल्बी, गोंडी, सरगुजिया, बस्तरिया,
इहे हरय हमर बोली.
पहुंची, अंइठी, सांटी, मुंदरी दाई पहिरे हे, माथ लगै सिंघरौली.

बोहर, चेंच, चुनचुनिया अउ, निक लागे अम्मट भाजी.
कोदो, कुटकी, मड़िया के पेंच अउ, पसहर चऊंर संग खाथे मुनगा भाजी.

अटकन- मटकन, फुगड़ी, लंगडी अउ खेलय गिल्ली डंडा.
करू, केसरवा जिमी कांदा खाथन, निक लागे उसनलो बंडा.

सिधवा सिधवी हवय जम्मो मइनखे मन, का लइका का महतारी.
छल कपट जानय नहीं कोन्हों,
इही हवय छत्तीसगढ़िया के चिन्हारी.

*****

वृक्ष

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

वृक्षों से जग हरा भरा.
मोहक लगती वसुंधरा.

चहुँदिश छाए हरियाली,
घर-घर आए खुशहाली.

डाली-डाली पर खग बैठें,
गीत सुनाएँ प्रेमभरा.

वृक्ष मेघ को लाते हैं.
वर्षा-जल बरसाते हैं.

प्राणवायु दें जीवों को,
स्वस्थ प्राकृतिक परंपरा.

पर्यावरण की करें सुरक्षा,
जिससे होती जीवन रक्षा.

धरती के उपहार अनोखे,
रूप फूल-फल से निखरा,
वृक्षों से जग हरा-भरा.

*****

कौन रोक पाया है

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

कौन रोक पाया है,
उड़ते काले बदलों को.
बहती नदियों की धाराओं को,
बहती इन हवाओं को.

कौन रोक पाया है
सूरज की रोशनी को,
चंदा की शीतलता को,

कौन रोक पाया है
उड़ते हुए परिंदों को,
समुद्र की लहरों को.

कौन रोक पाया है,
पर्वतों के खड़े अडिग इरादों को,
पेड़ों की हरियाली को,

ऐसे ही यदि मन में.
मजबूत इरादा हो तो,
कौन रोक पाया है जीत को.

*****

कोरोना का कहर

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

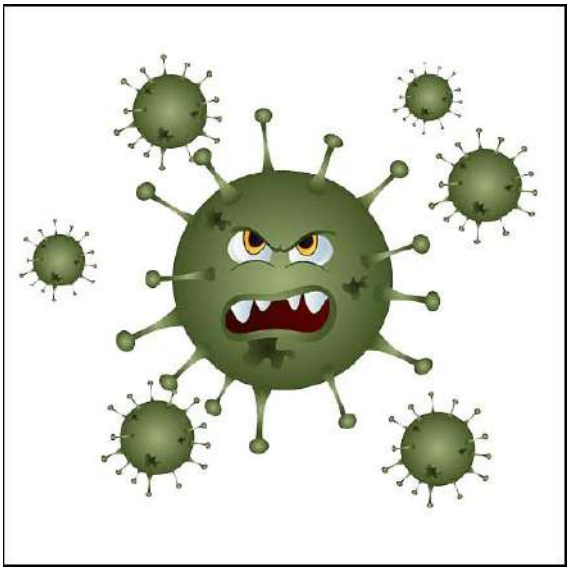

कोरोना का कहर, छाया है हर पहर.
मानो जीवन मे, घुल गया हो जहर.
न जाने कब थमेगा, कोरोना का ये लहर.
ऐसा लग रहा है, इंसान सभी सो गए.
जाग उठा है, सिर्फ कोरोना का कहर.
सुनी बस्ती, सुना उपवन.
जाने कब, पुलकित होगा मन,
स्कूलों और मंदिरो के, पट हुए बंद.
अस्पतालों के द्वार खुले, गलियां हो गई तंग.
शमशानो मे शवों की ज्वाला है, मुंह पर लगा मास्क का ताला.
ना जाने कितनी जिंदगी बची है, और कौन जाने वाला है कल.
नित नए आँकड़ों को छूता, संक्रमण का हैं बोल बाला.
दुनिया मे कोरोना है काला चोर,
और वैक्सीन ही रखवाला.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- कमलेंद्र कुमार

1. मुझमें होते धूल और कण,
   और होती जल वाष्प।
   टायरों में खूब भरो तुम,
   करो न तुम संताप।।

2. धरती में मैं पाया जाता,
   लोग कहें मुझको द्रव सोना।
   सोच समझ उपयोग करो,
   पड़ न जाये सबको रोना।

3. तीन अक्षर से बनता हूँ,
   जरा राज बतलाना तुम।
   विश्व गुरु मैं कहलाया,
   क्यों बैठे हो तुम गुम-सुम ।।

उत्तर- 1. वायु, 2. पेट्रोलियम, 3. भारत

*****

बादल की धुन

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

बादल छाया आसमान में,
बिजली चमकी चम चम.
फिर बादलों ने धुन बजाया,
बारिश हुई झम झम.

बादल की धुन से,
मोर पपीहा नाच उठे टम-टम.
प्यारे इन्द्रधनुष ने भी,
आसमान में अपना जमाया रंग.

मिट्टी ने भी सौंधी खुशबू से,
धरती का कोना-कोना महकाया.
पेड़-पौधे भी थिरके उठे,
बादलों ने शोर मचाया.

पत्ते-पत्ते झूम उठे,
झूम उठा उपवन सारा.
रिमझिम रिमझिम बरसात से,
खेतों खलिहान भी लहलहाया.

किसानों को अमृत मिला
उसका मन भी झूमकर गाया.

*****

घमंडी हाथी

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

आसमान में हाथी आया.
उड़ता-उड़ता हाथी आया.

कभी बिल्ली कभी कुत्ता.
उसने अपना रूप बनाया.

जो चाहे बन जाता था.
सबको बहुत सताता था.

फिर गर्म हवा के झोंको ने.
हाथी को परेशान किया.

तभी हाथी उड़ना भूल गया.
सब संग रहना सीख गया.

*****

दो सहेलियाँ

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

वैशाली और गरिमा आज सालों बाद तीज के अवसर पर एक दूसरे से मिली, जब दोनों बाजार गई थी अपने-अपने भाइयों के साथ अपनी पसंद की साड़ी खरीदने. वैशाली गरिमा को देखते ही पहचान गई. उसने उसे आवाज दिया, " हैलो गरिमा. "गरिमा ने पलटकर देखा, अरे ये तो वैशाली है. वह बहुत खुश हो गई अपनी प्यारी सखी को देखकर. उसने मुस्कुराके उसे कहा, "हैलो वैशाली! कैसी हो?" गरिमा ने अपने भाई का परिचय वैशाली से कराया. "गरिमा ये मेरे बड़े भैया हैं." वैशाली- "नमस्ते भैया!" भैया जी ने मुस्कुराकर हाथ जोड़े और कहा - "नमस्कार. " दोनों सहेलियां साथ में अपने लिए साड़ी खरीदने लगीं.

वैशाली को एक सुन्दर-सी बनारसी साड़ी पसंद आई, जो बहुत भारी और काफी महंगी थी. उसके साथ उसके भैया थे जो कुछ चिंतित व असमंजस में थे. खैर इधर गरिमा ने भी अपने लिए एक सुंदर-सी साड़ी खरीदी, जो शायद वैशाली को पसंद नहीं आई. पर गरिमा को टोकना उसे अच्छा नहीं लगा. आखिर दोनों इतने ज्यादा खुश जो थे. दोनों सहेलियाँ तीज मनाकर अपने-अपने ससुराल चली गई. दोनों बहुत खुश थी.

वैशाली जब अपने ससुराल वापस जा रही थी तो रास्ते में उसे गरिमा अपने भैया के साथ दिखी. वैशाली ने ड्राइवर से कार रोकने के लिए कहा और वह कार से उतरकर गरिमा के पास आई, "क्या हुआ गरिमा?"

"यहाँ क्यों ख़डी हो?"

गरिमा ने कहा, "शायद भैया की गाड़ी के इंजन में कचड़ा आ गया है. अचानक बंद हो गई. वह परेशान-सी हो रही थी. "

वैशाली ने कहा, "तु मेरे साथ चल. मैं तुझे छोड़ देती हूँ. भैया अपनी गाड़ी बनवाकर घर चले जायेंगे."

गरिमा ने कहा, "नहीं री, बस भैया ठीक कर लेंगें. तू परेशान ना हो."

भैया ने कहा, "तुम दोनों वहा पेड़ की छाया में बैठो तब तक मैं इसे ठीक करता हूँ."

गरिमा ने कहा - "ठीक है भैया."

वैशाली ने कहा-"भैया! क्यों ना हम दोनों मेरी गाड़ी में बैठें."

भैया- "हाँ! हाँ! क्यूँ नहीं."

दोनों सहेलियाँ वैशाली की गाड़ी में बैठ गई.

वैशाली- "गरिमा! तुम कितनी मूर्ख हो गई हो शादी के बाद."

गरिमा- "क्यूँ, क्या हुआ?"

वैशाली- "हाथ आये अवसर को कोई कैसे छोड़ सकता है?"

गरिमा- "क्या मतलब? मैं कुछ समझी नहीं."

वैशाली- "जब तीज पे तेरे भैया तुझे अपनी पसंद की साड़ी लेने बोले तो तू कोई महंगी और कीमती साड़ी ले सकती थी. तीज साल में एक बार ही तो आता है."

मुझे देख. मेरे भैया जो साड़ी मेरे लिए लाये थे मैंने तो उनके मुँह पर मार दिया कि इससे बढ़िया साड़ी तो हमारी नौकरानी पहनती है. मैंने तो साफ-साफ उनसे कह दिया था मुझे तो मेरे पसंद की ही साड़ी लेनी है वो भी बढ़िया वाली.

हाँ! गरिमा मुस्कुरा के रह गई. उसे उस दिन वैशाली के भैया का फीका पड़ा चेहरा याद आ गया.

गरिमा- "देख वैशाली तीज साल में एक बार आता है."

गरिमा ने आगे कहना शुरु किया. इसका इंतजार हम शादीशुदा लड़कियों और हमारे मायके में हर किसी को होता है. तो क्या हम महंगी साड़ी के पीछे उन सारी खुशियों को बर्बाद कर दें? "

वैशाली-"क्या मतलब! मैं कुछ समझी नहीं. "

गरिमा- "देख वैशाली, बुरा मत मानना,. तुम बताओ, क्या हम बहने अपने मायके इसलिए लिए आती है कि हम अपने भैया और मायकेवालों पे बोझ बन जाये."

वैशाली- "तु कहना क्या चाह रही है?"

गरिमा - "तुझे मेरी साड़ी बहुत हल्की और सस्ती लगी है ना?"

वैशाली- " हाँ!"

गरिमा- "पर ये साड़ी मेरे लिए बहुत कीमती है."

वैशाली- " वो कैसे?"

गरिमा- "क्योंकि इसमें मेरे भैया का प्यार, दुलार बसा है, मेरे मायके की याद जुड़ गई है."

गरिमा अपनी ही धुन में बोले जा रही थी. जाने कितनी कोशिशों के बाद बचत कर करके मेरे भैया ने मेरे लिए तीज के शगुन का इंतजाम किया होगा. मेरे कहने से वो मुझे महंगी साड़ी दें भी देते पर फिर वे उसके लिए और भी अपने कुछ अरमानों का गला घोंटते या अपने बीवी बच्चों की आवश्यकताओं में कटौती करते, जो उनके लिए तकलीफदेह होता. साड़ी का क्या है? सस्ती हो या महंगी वो तो फट ही जायेगी. पर हमारे रिस्तो में कड़वाहत नही आनी चाहिए."

यह तीज का उत्सव हमारे जीवन में मिठास घोलने वाली होनी चाहिए ना कि कड़वी यादें दे जाये.

वैशाली- "मुझे माफ कर दे गरिमा मैंने तुझे मूर्ख कहा. अरे मूर्ख तो मैं थी जो इतनी-सी बात समझ ना पाई."

गरिमा- "देख वैशाली बहन!तीज की वजह से या कोई और त्यौहार की वजह से हमारे अपनों के साथ प्रेमभरे रिस्तो में कभी भी कड़वाहत नहीं आनी चाहिए. इन्ही रिश्तों में ही तो हमारी जिंदगी में खुशियाँ है ना कि चीजों से."

दोनों सहेलियों की आँखे नम हो चली थी. दोनों एक दूसरे का हाथ मजबूती से थामे बैठीं थी. वैशाली की आँखों में पश्चाताप के आंसू देखकर गरिमा खुश थी कि उसे अपनी गलती समझ में आ गई थी.

कुछ देर बाद गरिमा के भैया भी अपनी गाड़ी बनाकर आ गए. गरिमा अपने ससुराल चली गई और वैशाली वापस अपने मायके अपनी गलती सुधारने के सुखमय उम्मीद के साथ.

*****

शिक्षक है निर्मल नभ

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर

निर्मल नभ-सा उच्च विचार,
जो बन जाते हैं जीवन की धार.
सरल, सहज, सहनशक्ति के,
होते साक्षात् वे अवतार.

नवसृजन, नवपुष्प-सा,
करते शिक्षक नव -निर्माण.
गढ़ते भविष्य उनके,
जो होते कल के जीर्णोधार.

इंद्रधनुष के रंगो-सा जो,
जीवन को रंगीन बना देते हैं.
तारों सा चमका देते हैं,
सूरज-सा तेज फैलाते हैं.
पवन सा निर्मल भाव बहाते हैं.

देकर सबको ज्ञान,
जो बढ़ाते देश का मान,
ज्ञान -विज्ञान सिखाते हैं,
देश का गौरव बढ़ाते हैं,
पुलकित चहुँ दिशाओं में,
जो उज्ज्वलता फैलातें हैं.

रौशन जिनसे सारा जहाँ,
जिनके विचारों से कल आज और कल है.
जिनके दम से गढ़ते, बढ़ते, चढ़ते
सफलताओं की सीढियों में और
छूते नील गगन को.

इसलिए शिक्षक होते बड़े अनमोल,
मीठे लगते उनके बोल.
शिक्षक होते राष्ट्रनिर्माता,
हमको उनकी हर बात सिखाता.

बिन शिक्षक है दुनिया सूना,
ध्यान से उनकी हर बात सुनना.

*****

गुरु नमन

रचनाकार- सपना यदु

ज्ञान के देवैया,
हमर सृजन के रचैया,
हमर चरित्तर के संवरिया,
गोठ बानी के सुधरैय्या,
प्रतिभा के उभरैय्या,
जेहर पार लगावे नैय्या,
जतका तोर बखान करौं सब्बो हवय कम.
दाई ददा ईश्वर ले पहिले गुरु आपला नमन.

*****

प्यारा मुन्ना

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

हम सब का प्यारा मुन्ना,
देखो राज दुलारा मुन्ना.

लगता प्यारा भोला भाला,
हँसता सदा हमारा मुन्ना.

गोल गोल आँखें चमकाता,
लगता चाँद सितारा मुन्ना.

आता जाता धूम मचाता ,
मस्ती भरा पिटारा मुन्ना.

भूख लगे तो चिल्लाता है ,
वरना ख़ुशी से शोर मचाता मुन्ना.

कोई कहता भोंदूमल है ,
होशियार इक तारा मुन्ना.

*****

मुझे गर्व है शिक्षक होने में

रचनाकार- सुधारानी शर्मा

मैं ज्ञान दान कर,
सपने साकार करती हूँ.
नवीन सृजन कर,
चिंतन मनन करती हूँ.
मुझे गर्व है शिक्षक होने में.

बाधाओं को पार करना,
सिखलाती हूँ.
नवंअकुरो को प्यार करना,
सिखलाती हूँ.
अमूल्य जीवन हैं,
उसे जीना सिखलाती हूँ.
तम को दूर कर,
रोशनी फैलाती हूँ,
मुझे गर्व है शिक्षक होने में.

कोशिश रहती हूँ सदा करूं
उनके सपने साकार,
बच्चों को सिखाऊ,
कर्तव्य सेवा के उच्च विचार
अनैतिकता छोड़,
करे मानवीय व्यवहार.

माँ शारदे की कृपा से,
मै हूँ कलमकार.
रचती हूँ इन्द्रधनुषी संसार,
मुझे गर्व है शिक्षक होने में.

सारे समाज को प्रेरणा देती हूँ,
अनगढ को गढ लेती हू.
अंतर्द्वद्वो को पढ़ लेती हूँ,
जग में सजग प्रहरी बनकर.
विद्यादान देती हूँ मै.
मुझे गर्व है शिक्षक होने में.

नैतिक मूल्यों की शिक्षा देकर
जीवन क्लेश हर लेती हूँ
राह में बिखरे कांटे चुनकर
जीवन में सुमन खिलाती हूँ
भूले भटके पथिको को भी
सही,सन्मार्ग दिखाती हूँ
मुझे गर्व है शिक्षक होने में.

आदर्शों की लड़ी हूँ मै
बाधाओं के समक्ष खड़ी हूँ मैं
पालको और बच्चों के बीच की
विचारो की सुंदर कड़ी हूँ मै
मुझे गर्व है शिक्षक होने में.

*****

दिशा ज्ञान

रचनाकार- रंजय कुमार सिंह

एक चिड़िया के बच्चे चार,
बच्चे चार, बच्चे चार.

उड़ते थे वो पंख पसार,
पंख पसार, पंख पसार.

एक गया पूर्व की ओर.
एक गया पश्चिम की ओर.
एक गया उत्तर की ओर.
एक गया दक्षिण की ओर.

घूम घाम कर वापस आए,
अपनी माँ को वचन सुनाए.

घूम आये हैं हम जग सारा माँ,
सबसे सुंदर घर हमारा माँ.

*****

चतुर गाड़ीवान

रचनाकार- अर्चना त्यागी

एक बहुत बड़े विचारक थे. बड़े बड़े शहरों,गाँवों, कस्बों, सभी स्थानों पर उनके प्रवचन हुआ करते थे. लोग आनंदित होकर उन्हें सुनने आते थे. वे जहाँ भी जाते, घोड़ा-गाड़ी से ही जाते. उनका गाड़ीवान पढ़ा लिखा तो नहीं था, पर आज्ञाकारी बहुत था. यही कारण था कि सालों से उनके साथ ही था. एक बार एक बड़े शहर में उनका प्रवचन होने वाला था. गाड़ीवान हर बार की तरह साथ ही था. अचानक विचारक महोदय की तबीयत बिगड़ गई. आयोजक बड़े परेशान. दूर-दूर से लोग प्रवचन सुनने आए थे. बहुत बड़े-बड़े ओहदे वाले लोग भी थे. आयोजक विचारक महोदय के पास आए और उन्हें अपनी समस्या बताई. वो भी सोच में पड़ गए. दस्त होने के कारण शरीर निढाल हो गया था. उल्टियां होने से कमजोरी अधिक थी. जबान भी लड़खड़ा रही थी. उपचार चल रहा था किंतु जल्दी सुधार की उम्मीद नहीं थी. गाड़ीवान उनके पास ही था. आयोजक चलने लगे तो गाड़ीवान ने धीरे से कहा, "मुझे सर के सभी प्रवचन जबानी याद हैं. यदि आप अनुमति दें तो मैं उनका एक प्रवचन मंच पर जाकर बोल सकता हूं." आयोजक इस मुश्किल घड़ी में भी जोर से हँस पड़े." तुम ठहरे एक अनपढ़ घोड़ा हांकने वाले. ज्ञान की बातें तुम्हारी समझ से परे हैं. मंच पर घंटों भाषण देना तुमसे नहीं हो पाएगा. क्यों हमारा मज़ाक बनाना चाहते हो ?

विचारक महोदय शांति से सब सुन रहे थे. उन्होंने हाथ के इशारे से आयोजकों को रोका और धीरे से कहा, "मेरा गाड़ीवान पढ़ा लिखा नहीं है, मैं जानता हूं किंतु यह सब जगह मेरे साथ जाता है और मेरी सभी बातें ध्यानपूर्वक सुनता है.अच्छा होगा यदि इसे बोलने का अवसर दे दिया जाए."

आयोजकों ने एक दूसरे की ओर देखा. वे जानते थे कि उस शहर में इससे पहले विचारक महोदय का कोई प्रवचन नहीं हुआ था. लोग उन्हें चेहरे से नहीं पहचानते थे. हाँ, उनके प्रवचन सबने सुने थे. विचारक महोदय के एक जोड़ी कपड़े गाड़ीवान को पहना दिए. प्रवचन हुआ और लोग बहुत प्रभावित हुए. कुछ लोग व्यक्तिगत समस्याओं के हल जानना चाहते थे.

गाड़ीवान ने चतुराई से कहा "इन प्रश्नों के उत्तर तो मेरा गाड़ीवान भी दे सकता है. बहुत सरल प्रश्न हैं और मेरा गाड़ीवान बहुत चतुर है." विचारक महोदय गाड़ीवान के कपड़े पहनकर तब तक मंच के पीछे आ गए थे. आयोजक तो हैरान थे ही,विचारक महोदय भी आश्चर्य चकित थे. उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि गाड़ीवान के रूप में ऐसा साथी उन्हें दिया है. आयोजकों ने गाड़ीवान को नमस्कार किया उनके अदभुत ज्ञान के लिए जो उसने महान पुरुष की संगति में प्राप्त किया था.

कोई भी जन्म से या भाषा से छोटा बड़ा नहीं होता है. सत्संगति भी कितने लोगों का जीवन बदल देती है.

*****

माँ को नमन

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

जन्म दिया हमें जिस माँ ने,
उस माँ की हम कदर करें.
करना सके कुछ माँ के लिए तो,
कम से कम हम नमन करें.

अपना निवाला हमें खिलाया,
रात जागकर हमें सुलाया.
सही गलत की पहचान दी,
उँगली पकड़कर चलना सिखाया.

छोटे से अब बड़े हो गए,
पैरों पे हम अब खड़े हो गए.
माँ के आंचल से दूर,
दुनिया में अब मशहूर हो गए.

माँ के हम दुलारे अब,
बुढ़ापे का सहारा बन गए.
माँ की आंखों के तारा हम,
अब उनकी नैय्या का किनारा बन गए.

उम्रदराज माँ की दुनिया के अब,
बाकी जीवन का हम तारा बन गये.
ममता से भरी माँ का,
हम सब एक सहारा बन गए.

*****

मंजिल की राह में

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

मंजिल की राह में बढ़ना होगा,
कदम मिलाकर चलना होगा.
राहें अपनी खुद ही गढ़ना होगा,
दिन रात मेहनत अब करना होगा.

होके मायूस न सूरज सा ढल,
बिन मेहनत के नहीं मिलता फल.
गिर कर उठ और फिर उठ कर चल,
रगो में साहस भर कर अब संभल.

छुट ना जाए अवसर पकड़ लेना,
लक्ष्य को कस कर तू जकड़ लेना.
जीत का ताज तेरे सर पर होगा,
बाधाओं से डटकर बस लड़ना होगा.

खाकर ठोकर संभल जाएगा,
वक़्त है जनाब बदल जाएगा.
जीत का फतह जब लहराएगा,
देख के दुनिया, दंग रह जाएगा.

*****

संघर्ष

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

थका नहीं हूँ, रुका नहीं हूँ,
डरा नहीं हूँ , बुझा नहीं हूँ.
पाने को मंजिल चल रहा हूँ,
दीपक सा पल-पल जल रहा हूँ.

मुश्किलों से लड़ लूँगा मैं,
आगे मुश्किलों से बढ़ लूँगा मैं.
राह की चट्टानों को तोड़ दूँगा मैं,
मुख उसका राह से मोड़ दूँगा मैं.

चुभ जाए कांटे तो गम नहीं,
आँखें मेरी होगी कभी नम नहीं.
लौट जाऊँ पीछे मैं इंसान नहीं,
संघर्ष बिना लक्ष्य आसान नहीं.

होगी गर शाम तो ढल जाऊँगा,
सूरज की फिर निकल आऊंगा.
मेरी मेहनत का भी फल होगा,
खुशियों से भरा मेरा कल होगा.

*****

The Cat

Poet- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

Once there was a cat lived in the jungle. She went to a village wandering aimlessly a day. As she entered into a house opened. Then she saw the hot milk put in a clay pot on the stove. The fragrance of milk hit her nose. She became very happy. After being cold she sipped the milk much. Then after that day she would get the milk somewhere else daily. Really she was so glad.

Then she thought that the food and water were got easily there to her. She gave up the idea of going back to the jungle. From that day the cat began living in the village areas.

Dear Children! And so the cat is living in the village today. She likes very much the village.

*****

माँ-बाप मेरे घर के

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

माँ-बाप मेरे घर के, बरगद से हैं,
फल-फूल ना सही, छांव उन्हीं से है.

जन्म दिया उन्होंने भगवान मेरे हैं,
संतान हूँ उनका, माँ बाप मेरे है.

कंधे पर बैठ कर, घूमे हूँ जहान,
माँ-बाप मेरे, जग में है महान.

उंगली पकड़ के चले है हम,
ममता के आंचल में पले है हम.

माँ-बाप की राह में चल कर हम,
लक्ष्य को हासिल कर गए हम.

नेकी के पथ पर चलते गए हम,
माँ-बाप का मान, रखते गए हम.

अनुभवों का वों भंडार लिए,
बच्चों को अपने संस्कार दिए.

माँ-बाप का जहां मान नहीं,
उस घर में भगवान का वास नहीं.

माँ-बाप मेरे लिए भगवान से है,
माँ-बाप बिना घर शमशान सा है.

*****

गाजर लाल, टमाटर लाल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

गाजर लाल, टमाटर लाल,
खाते इनको बाल गोपाल.
गाजर, कद्दू, आम, पापिता,
विटामिन ए इसमें रहता.

हरे भरे है प्याज के पत्ते,
ज़मी ऊपर प्याज सजते.
पत्ता गोभी, प्याज, सलाद,
विटामिन बी से होते आबाद.

लाल मिर्च की सुंदरता परे,
खाने को पर जी जान डरे.
नीबू, संतरा, मौसमी अंगुर,
विटामिन सी होते भरपूर.

संतरे का जूस जो सेवन करता,
अस्थि मजबूत उनका रहता.
आसमां मे जब धूप खिलता,
विटामिन डी हमे मिलता.

हरे भरे हैं सब सब्जी मेरे,
विटामिन से सब भरे-भरे.
अमरुद, राजमा, मूंग, मटर में,
प्रोटीन्स होते भरपूर इसमें.

हरा चना को हरा ही खाते,
सूखे चने का दाल बनाते.
पालक, दूध, मटर, बाजरा,
कैल्शियम है इसमें पसरा.

कैलोरी और ताकत देता,
फल फूल को जो है खाता.
केला, मटर, आलू का वजूद,
कार्बोहाइड्रेट है इसमें मौजूद.

*****

संकल्प गीत

रचनाकार- गौतम राम साहू

हम पढ़ेंगे काबिल बनेंगे, यह विश्वास हमारा हैं.
जग में नाम रोशन करेंगे, यह संकल्प हमारा है.

कर्ण, अर्जुन, आरुणि, एकलव्य बन, गुरु ज्ञान ग्रहण करेंगे.
भीष्म, विवेकानंद, सुभाष, भीम, गांधी सा, चैतन्यशील बनेंगे.

हम पढ़ेंगे सबको पढ़ायेंगे, यह संकल्प हमारा है
मुश्किल कितनी भी आ जाए, हम कभी न घबराएंगे.

मां भारती का वरदान हमें, तूफानों से टकराएंगे.
हम पग-पग बढ़ते जाएंगे, यह विश्वास हमारा है.

जग में नाम रोशन कर देंगे, यह संकल्प हमारा है.

*****

आषाढ़ के सुघ्घर महीना

रचनाकार- कलेश्वर साहू

आषाढ़ के सुघ्घर महीना आये हे,
बरसा ऋतु सबके मन ल भाय हे.

आषाढ़ के महीना बादर घम-घम छाये हे.
किसान के मन ल सुहाए हे,

नँदिया, नरवा, खोंचका, खेत-खार भर जाय,
धरती महतारी के पियास बुझा जाय.

गाँव-गाँव म धान बोअई हो गे हे सुरु,
किसान के मन अड़बड़ होवत हे हरु.

माई लोगन मन लगावत हे धान के रोपा,
मोर मयारू ह बाँधे हे गजरा के खोपा.

बादर ल देख किसान होवत हे मगन,
कोठी टिप टिप ले भर जाही कहत हे मन.

आषाढ़ के सुघ्घर महीना आये हे,
बरसा ऋतु सबके मन ल भाय हे.

*****

तीज

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

राह देखती भैया जी का, साथ मायके जाती है.
खुश हो कर सब माता बहनें, मिलजुल तीज मनाती है.

पति की उम्र बढ़ाने को सब, निर्जल व्रत को करती है.
शिव गौरी की पूजा करती, मन में श्रद्धा भरती है.

नये-नये पकवान बनाती, साथ बैठ कर खाती हैं.
खूब दिनों में मिलते बहनें, खुशहाली बिखराती हैं.

हँसी ठिठोली करते रहते, बचपन की यादें आती हैं.
बिछुड़ गये जो सखी सहेली, मिलने उनसे जाती हैं.

घूम-घूम कर सब बहने साड़ी कपड़े बनाती हैं.
रंग बिरंगे साड़ी लेकर, अपने अपने घर को आती हैं.

सालों का ये तीज तिहारी, मन में खुशियाँ लाती है.
खुशी-खुशी से सभी बेटियाँ, मन ही मन इठलाती है.

*****

अगर ना होते

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

अगर ना होते सूरज भैया,
कौन सवेरा लाता.
कहाँ से आती नन्ही किरणें,
धूप कौन दे जाता.

कैसी चलती पवन पुरवाई,
पंछी कैसे गाते.
कौन हितैषी आकर भैया,
हमको भोर जगाते.

काँव-काँव चिल्लाने वाले,
कौवे भी ना आते.
सोए रहते दोपहरी तक,
और बुद्धू कहलाते.

ना गर्मी ना सर्दी होती,
बादल ना बन पाते.
सूखी रहती ताल-तलैया,
हम प्यासे रह जाते.

*****

मेरी माँ

रचनाकार- सतीश चन्द्र भगत

सबसे पहले बड़े सवेरे,
हम बच्चों को जगती माँ.

झाड़ू लेकर और सुबह ही,
रोज प्रभाती गाती माँ.

सजी-धजी साड़ी में रहती,
दुखड़ा नहीं सुनाती माँ.

सबको खूब खिलाती है पर,
खुद थोड़ा-सा खाती माँ.

मुझे पढ़ाती राह दिखाती,
हंसती और हंसाती माँ.

कहती रहती मन से पढ़ना,
कभी न डाट लगाती माँ.

देती मुझको रोज दुवाएं
मन ही मन हर्षाती माँ.

सबसे बड़ा राष्ट्र धर्म है
बात मुझे समझाती माँ.

*****

सिक्छित कोन

रचनाकार- कलेश्वर साहू

आज अक्छर-गियान अउ जादा बुद्धि के सेती मनखे मन जादा ले जादा घमण्डी होवत हे. कहु हमन ला सही सिक्छा रइतिस त घमंड कम होतिस. हमन साधन मन ल अपन उद्देश्य मान के गलती कर बइठथन. आज हमन बिकटकन बिषय मन ल पढ़थन जइसे- भासा, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबंधन, धर्मज्ञान आदि. ये सब्बो ह सिक्छा के साधन आय. एखर ले जिनगी म बेवहारिक या बेवसाय बढ़िया उपजथे. बेवहारिक या बेवसाय ले सुमता उपजथे. सुमता ले झगड़ा-लड़ाई ह मिटा जाथे. झगड़ा-लड़ाई सीरा जाथे तहां ले सब्बो बुता ह बन जाथे. अउ ये सब्बो झगड़ा-लड़ाई ह असिक्छा के सेती होथे.

तइहा के सियान मन कहे हे कि "विद्या या विमुक्तये". जउन हमन ला मुकति करहि तउन विद्या आय. मुकति के आशय हे अगियान या असिक्छा ले मुकति. निराश के भाव ले मुकति. बेकार सोच ले मुकति. मनखे मन के एकठक परम लक्ष्य होथे निराश के भाव ले मुकति होके आत्म विकास करना. आनमन के विकास म बिना बाधा बने अपन खुद के विकास करना ही सही सिक्छा आय. लेकिन आजकाली के कुछ मनखे मन पहिली पूछथे का काम- बुता चलत हे फेर धीरे धीरे उंकर काम बुता म झपा जाथे मोर कहे के मतलब हे कि आजकाल कुछ मनखे मन अपन विकास ले जादा दूसर मन के विकास म नजर रखथे अउ उहला बाधा पहुचाय म लग जाथे जउन फेर मोला उचित नइ लागय. बाहरी दुनिया के गियान ह तो सूचना बस ताय. सही गियान तो खुद ल जानथे तउन ल कइथे. जउन खुद ल जानके सही रद्दा म बढ़हत हे उही सही गियानी अउ सही सिक्छित आय. सिक्छा बाहरी ल नइ बल्कि अपन भीतरी ल बदलथे. अब एखर अरथ ये नहीं कि हमन इसकूल, कॉलेज मन ल भूलाजन या पढ़े-लिखें बर छोड़दन. मनखे मन के बाहरी विकास अउ सही सिक्छा पाय के खातिर बर साक्षरता अउ अउपचारिक सिक्छा घलो अड़बड़ जरूरी हे.

गांधी जी ह कहे हे कि लबारी ले सही ल नइ पाय सकय. गांधी जी ह हर बेरा सही साधन मन के शुद्धता बर बल देवय. जउन सिक्छा के उचित गियान के बिना संभव नइ हे. उचित गियान बर सरकार के संगे-संग प्राइवेट संस्था मन ल तको अपन जवाबदारी ल समझ के सही रद्दा म आगु बढ़ना चाही नइ तो ये सब्बो प्रक्रिया ह तमाशा बन के रइजहि.आज समाज म हर जघा छटपटासी बड़गे हे अउ एखरे सेती आज वर्तमान बेरा म सिक्छा म सही मूल्य के कमी हे.

*****

हिंदी मेरी भाषा

रचनाकार- मईनुदीन कोहरी "नाचीज बीकानेरी"

प्यारी-प्यारी सबसे न्यारी मेरी भाषा,
हिंदी पर बिन्दी हिंदी प्यारी मेरी भाषा.

देश-विदेशों में है जिसका गुणगान,
सबसे अच्छी सबसे प्यारी मेरी भाषा.

ज्ञान-विज्ञान का अखूट भण्डार है ये,
इसलिए सब जन-जन पढ़ते मेरी भाषा.

हिंदी पढ़ेगा गर भारत का बच्चा-बच्चा,
सम्प्रेषण में भी उपयोगी होगी मेरी भाषा.

खेल-सिनेमा जगत ने जिसको अपनाया,
एकता का पाठ हमें पढ़ाने वाली मेरी भाषा.

सब भाषाओं के संग जिसने मेल बिठाया,
भाषायी-ज्ञान जन-जन तक लाई मेरी भाषा.

राष्ट्र-भाषा का मान-सम्मान जिसको मिला,
देवनागरी लिपि जिसकी वो वैज्ञानिक भाषा.

सूफ़ी-संत-साहित्यकारों ने जिससे यश पाया,
जाति-धर्म-पंथ सब के मुख शोभित मेरी भाषा.

सविंधान ने जिस भाषा को गौरवान्वित किया,
हिंदी दिवस के रुप में जिसे मनाते वो मेरी भाषा.

अटल जी ने यू.एन.ओ. में जिसका मान बढ़ाया,
हिंदी हैं हम वतन, हिंदी है प्यारी मेरी भाषा .

*****

शिक्षक जी

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

वेद वंदनीय है ज्ञान का स्वरूप जी,
महिमा प्रकाश चारों ओर है शिक्षक जी.

अज्ञान के विदारक अखिल लोक तारक,
रोग शोक निवारक, अभय प्रदायक है शिक्षक जी.

आपके भरोसे हर बालक का भविष्य,
देकर ज्ञान विद्या, बनों प्रेरक शिक्षक जी.

विद्या, विवेक और नेहशील देव तुम,
सरस गुरु के रूप आप स्वयं हैं शिक्षक जी.

*****

बचपन की यादें

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

बचपन, अपने आप में ही ख़ुशियों से भरा हुआ शब्द. इस संसार में ऐसा कौन होगा जिसे अपना बचपन गुदगुदाता नहीं होगा. खेल, मस्ती, संगी-साथी, मासूमियत, दुनिया के तमाम झंझटों से दूर, प्यार से परिपूर्ण, निश्छल जीवन यहीं तो यादों में रह जाता है. मुझे याद आता है वो गाँव का घर, जिसके चारों तरफ बरामदे और बीच में बड़ा सा आँगन था. बरामदे में लगे लकड़ी के खम्भे के गोल-गोल घूमना तो कभी उस पर झूलना . उस बरामदे से आँगन में कूदना. जैसे वो खेल का मैदान था हमारे लिए. गुड्डे-गुड़ियों की शादी से लेकर अनगिनत खेलों की यादें जुड़ी हैं उस आँगन और बरामदे से. बीचों-बीच बने तुलसी चौरा के चारों ओर घूमना फिर थक कर बैठ जाना. बारिश के दिनों में वही आँगन हमारे किये तालाब बन जाता था . बारिश होने पर नाली को बंद कर देते थे जिससे आँगन पानी से पूरा भर जाता था. फिर हमारी छपाक-छपाक चालू. कागज़ की कश्ती बनाकर उसमें चलाना, अद्भुत ख़ुशी देती थी. कई बार दादू की डाँट भी पड़ी, पर उस समय कहाँ कुछ असर होता था.

याद आती हैं वो गलियाँ, जहाँ हम रेलगाड़ी जैसे भागते थे. धूल मिट्टी से सने हाथ-पाँव के साथ धमाचौकड़ी चलती ही रहती थी . शाम होते तक बिना किसी डर के हम खेलते ही रहते थे. वो बरगद पीपल की छाँव, आम, इमली, बेर, अमरूद का बगीचा, खेतों की फसलें, तालाब, सब कुछ आँखों के सामने आ जाता है . चबूतरे में कहानी सुनने के लिए सारे बच्चों का इकट्ठा होना और देर तक कहानियाँ सुनना. आज तक दिमाग में वो कहानियाँ जीवित है. मंगलवार के दिन बजरंग बली के मंदिर के सामने नारियल के प्रसाद के लिए इंतजार करना. कितना सुखद होता है बचपन, दादा-दादी की गोद में सो जाना और उनका प्यार कौन भूल सकता है. हाट, मेला, त्यौहार, ख़ुशियाँ ही देते थे.

गर्मियों में आँगन में सोना और चाँद तारों की दुनिया में खो जाना. क्या-क्या नहीं तलाश लेते थे हम उन तारों में और उसे गिनना तो इतना मुश्किल था कि गिनते-गिनते सो जाते थे.

और हाँ, दीवाली में नए कपड़े और पटाखें मिलने की ख़ुशी आज के बच्चे क्या जानेंगे. हमें तो दीवाली और गर्मी में ही नए कपड़े मिलते थे और सम्हाल के रखना पड़ता था उसे, विशेष अवसरों और कहीं बाहर आने-जाने के समय पहनने के लिए. गर्मियों में नाना नानी, बुआ के घर जाना, मानों विदेश भ्रमण की ख़ुशियाँ देते थे. चंद शब्दों में अपने बचपन को समेटना आसान नहीं है. आज लिखते-लिखते फिर से मैं अपने बचपन को जी ली. काश आज के बच्चों का बचपन भी इतना ही सुखद हो पाता.

*****

छत्तीसगढ़

रचनाकार- रजनी

राग गुंजित जहाँ छत्तीसा,
कण-कण नाद जगाये जिज्ञासा.

जल, जंगल ने जिसे है पोसा,
घाटियाँ स्वर को देती दिलासा.

आदि से अनंत आकाशा,
गूंजे राग गुंजन व्योमकेशा.

लोक रंजन गीत में श्लेषा,
मुखरित सब कुछ नहीं अश्लेषा.

छत्तीसगढ़ का गीत विशेषा,
नारायण बसे जहाँ गीत की भेषा.

*****

सब पढ़े-सब बढ़े

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

शिक्षा की डगर पर, बच्चों दिखाओं चल के.
स्कूल है तुम्हारा, भविष्य तुम्हीं हो कल के.
पढ़े-लिखे रहोगे, तो मूर्ख नहीं बनोगे.
सारे कागजातों को, पढ़कर दस्खत करोगे.
लोग बहकायेगें चाहे जितना, तुम विवेक से काम करोगे.
जो नहीं पढोगे तुम तो, अनपढ़ बने रहोगे.
गर साक्षर बन गये तुम, तो रमन, कलाम बनोगे.
दुनिया करेगी नमन, आँखों के तारे बनोगे.
देश का उत्थान करोगे, तुम नव सृजन करोगे.

*****

जुगाली

रचनाकार- पेश्वर यादव

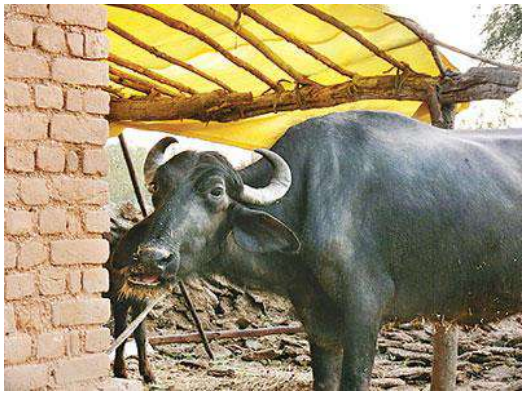

बहुत पहले की बात है पशुओं को खेती बाड़ी और अन्य काम के लिए पालतू बनाने से पहले ये जंगलों और मैदानों में विचरण करते थे. इनमे से कुछ जानवर हरे भरे घास, हरे पत्तियां को खाते थे जो सीधे और सरल स्वाभाव के होते थे जैसे- गाय, भैंस बकरी, खरगोश, भेंड़, हिरण. ये जो शाकाहारी कहलाते थे. वंही कुछ जानवर मांस भक्षण करने वाले होते थे जो बहुत आक्रामक, खूंखार, खतरनाक एंव भयानक होते थे. जैसे-बाघ, शेर, चीता ये मांसाहारी होते थे. जो चलते फिरते शाकाहारी जीवों को एक साथ शिकार करते थे. जिससे मैदानों एंव जंगलों में इन जानवरों की संख्या दिनों दिन कम होने लगी. ये शाकाहारी जानवर भोजन की तलाश में घास की मैदान और जंगलों में विचरण करते थे जंहा मौका पाकर मांसाहारी जीव उनका शिकार करते थे.

एक दिन इन डरे हुए जानवरों ने इस समस्या से निपटने के लिए अपने बिरादरी (शाकाहारी) की एक सभा बुलाई. जिनमे एक खरगोश ने एक उपाय सोच रखी थी. उन्होंने चिंता जताते हुए वह सबसे पहले बोला- क्यों न इन भयानक जानवरों से बचने के लिए घास और पत्तियों को जल्दी जल्दी निगलकर किसी सुरक्षित स्थान में भाग जाया करेंगे. वंहा पहुंचकर जल्दी जल्दी निगले हुए भोजन को जुगाली करके पचायेंगे. खरगोश की इस बात को सुनकर सभी शाकाहारी जानवरों ने एक स्वर में हामी भरी. उस दिन से सभी शाकाहारी जानवरों ने जुगाली करना शुरू किया. इस प्रकार इन जानवरों में जुगाली करने की आदत विकसित होती गई. तब से घास पत्तियां खाने वाले जंतु जुगाली करते है.

*****

मातृभाषा हिंदी

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

हिंदी हमारी मातृभाषा,
हिंदी हमारी शान है.
सितारों-सी चमकती हिंदी,
ये भारत की पहचान है।

भावनाओं को व्यक्त कराती,
आधे वर्णों का भी अर्थ बताती.
तरह-तरह के शब्द बनाती,
52 वर्णों संसार सजाती.

जन-जन के विचारों को,
देती एक आधार है.
सरल सहज रग-रग में बसती,
हिंदी जीवन का आधार है.

*****

इनको सच ना मानो

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

गधेराम जी को हुई,
दीमागी बीमारी,
मोती घोड़े को हुई,
हरी घास से यारी.

भूसा खाकर शेर अब,
अपनी भूख मिटाता,
ऊँट राम को अब सदा,
जीरा बहुत सुहाता.

बिल्ली मौसी छोड़ दी,
घर से दूध चुराना,
भोली गाय तेज हुई,
गाती फ़िल्मी गाना.

गुब्बारों से अब चलो,
ख़ुशी दिलों में तानों.
सुनो सब थीं गप्पें यारों,
इनको सच ना मानो.

*****

<u>गढ़बो नवा भविष्य</u>

रचनाकार- सपना यदु

गढ़बो नवा छत्तीसगढ़,
गढ़बो नवा छत्तीसगढ़.
लइका मन ल पढ़ाए लिखाए बर,
सुघ्घर बनाबो अपन गढ़.

रद्दा, कुरिया, गली-गली म,
शिक्षा के पाठ पढ़ाबोन.
अज्ञानता के अंधियारी ल भगा के,
ज्ञान के दिया जलाबोन.

कोन किसान, सुनार, लुहार अउ
कोन होथे कलेक्टर.
लईका मन ले जनवा लेबोन
का करथे पुलिस इंस्पेक्टर.

शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर अउ
पायलट ह काय करथे.
लेखक, नर्स अउ पोस्टमैन ह,
झोला म का धरथे.

लइका मन ले जनवा लेबोन,
येमन सब का करथे.
ये सबके हमर जिनगानी म,
अब्बड़ महत्तम रहिथे.

*****

हिंदी दिवस

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

बोलेंगे हम मिलकर हिंदी,
माथे इसकी लगती बिंदी.
हिन्द देश के हम हैं वासी,
सब के सुख के अभिलाषी.

हिंदी सीखो और सिखाओ,
हिंदी को पहचान बनाओ.
बच्चे बूढ़े सब मिल गाओ,
सबके मन में अलख जगाओ.

हिंदी भाषा लगती प्यारी,
प्यार से बोले दुनिया सारी.
हिंदी मातृ-शक्ति कहलाती,
मानव की पहचान बताती.

*****

मेरी टीचर

रचनाकार- कन्या पटेल

मेरी टीचर बनाती फ्यूचर,
बहुत खुशनुमा उनका नेचर.

हमें पढ़ातीं और सिखातीं,
जीवन की वह राह दिखातीं.

दिन-भर ध्यान हमारा रखतीं,
कभी-कभी वे हमें परखतीं.

कभी तो वे पेंटर बन जातीं,
और कभी बन जातीं सिंगर.

कभी गार्डनर वे बन जातीं,
और कभी बन जातीं डॉक्टर.

ऑल राउंडर मेरी टीचर,
बहुत एनर्जी उनके अंदर.

वेरी सिंपल उनका नेचर,
बहुत गुणी हैं मेरी टीचर.

*****

माँ

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

माँ तू तो महान है,
ममता की खान है.
यही तेरी पहचान है,
तेरा चारों ओर नाम है.

सुख-दुख की छाया में,
मुझको तू ने पाला है.
तेरे त्याग ने ही तो,
मुझे सदा सम्भाला है.

तू ने ही चलना सिखाया,
जब गिरा,उठना सिखाया.
मैं मिट्टी की बेजान मूरत,
गढ़ कर इंसान बनाया.

*****

जन, जल व जंगल

रचनाकार- सीमा यादव

जन अर्थात् जनता! जनता लोगों के एक व्यापक समूह का नाम है. जनता से ही किसी समाज की सभ्यता की पहचान होती हैं. दुनिया के सारे नियम एवं सारी व्यवस्थायें जनता को ध्यान में रखकर ही निर्मित की जाती हैं. जनता जनार्दन कहलाती है. जनता जब संगठित होकर किसी बात का विरोध करना शुरू करती है, तो सारी व्यवस्थाएँ चकनाचूर होकर बिखर जाती हैं. सब कुछ अस्त- व्यस्त हो जाता है. जनता उस शक्ति का नाम है,जिनसे समाज की सारी गतिविधियाँ निर्बाध रूप से निरंतर आगे की ओर बढ़ती हैं. जनता एक बहुत ही शक्तिशाली शक्ति है. जनता किसी भी राष्ट्र की मुख्य कर्णधार होती है.

जल- जल पानी का पर्यायवाची शब्द है. दुनिया की सबसे कीमती चीज जल ही है. किसी भी जीव के जीवन का सम्पूर्ण आधार जल ही होता है. जल के बिना किसी भी जड़- चेतन के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती. वैसे तो हमारा शरीर पाँच तत्वों से निर्मित है- जल, मिट्टी, प्रकाश (अग्नि), आकाश (गगन) और वायु. इन सबके बीच जल तत्व का अपना अलग ही स्थान व महत्व है. जल के संरक्षण हेतु सरकार द्वारा बहुत- सी मुहिम भी चलाई जा रही हैं. क्योंकि धरातल पर पीने योग्य पानी की मात्रा 30 प्रतिशत ही है. जो कि चिंतनीय है. अतः हम सभी को इस बारे में जागरूक होना होगा, तभी भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित भविष्य निर्मित हो सकेगा.

जंगल- जंगल जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि जंगल है तो मंगल है अर्थात् जहाँ भी हरियाली होती है वहाँ पर मंगल ही मंगल होता है. हरियाली समृद्धि का प्रतीक है. जिस प्रकार एक उत्साही मन अपने आस- पास को प्रफुल्लित कर देता है. ठीक उसी प्रकार हरी- भरी घास, नन्हें- नन्हें पौधे एवं लताएँ और वृक्ष हमारी धरती को सुन्दर, मनोहर, आकर्षक बना देते हैं. जंगल से ही समस्त जीव- जंतुओं का अस्तित्व है. जंगल के बिना किसी भी प्राणी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती. जंगल परोक्ष रूप में साक्षात् शक्ति का ही स्वरूप है. जो कि जड़- चेतन रूप में सारी धरती को आच्छादित किये हुए हैं.

जन, जल एवं जंगल ये तीनों ज से आरम्भ होने वाले शब्द हैं. वैसे तो जन, जर एवं जमीन के बारे में भी बहुत कुछ कहा गया है. इसके लिए एक उक्ति है कि जन, जर एवं जमीन ऐसे कारक हैं, जो भाई को भाई का दुश्मन बना देते हैं. इसीलिए "ज" अक्षर अपने आप में महत्वपूर्ण है. किन्तु उपयोगिता की दृष्टि से जन, जल एवं जंगल का अपना-अपना अलग ही औचित्य है. इनसे लाभ ही लाभ दृष्टिगोचर होते हैं. कहीं से भी विवाद के कारक नहीं परिलक्षित होते हैं. यही दोनों प्रकार के "ज" में अंतर एवं विशेषता हैं. अतः हमें इस पर सोचना चाहिए और इस दिशा में और भी सुन्दर, हितकारी निर्णय लेने चाहिए.

*****

हिंदी दिवस

रचनाकार- पी.व्ही. संजना

हिंदी से हिंदुस्तान,
हिंदुस्तान से हिंदी है.
हिंदी हमारी शान है,
हिंदी हमारी आन है.

हिंदी का उत्थान हो,
सदा यही अभियान हो.
हिंदी का उत्कर्ष हो,
हिन्दी पर अभिमान हो.

जात-धर्म बने ना रोड़े,
हिन्दी तो सबको जोड़े.
कर्म करो कुछ ऐसा साथी,
हिन्दी से कोई मुँह ना मोड़े.

*****

अलविदा, मेरे प्यारे बेटे!

रचनाकार- कपिल सहारे

बरसात का समय आ गया था पर सूखे दरख़्त पानी की आस में अब भी ऊपर की ओर टकटकी लगाए हुए थे. पूरे चार बरस हो गए थे आख़िरी बारिश आए हुए. कारण स्पष्ट ही था, फैक्ट्रियों और कांक्रीट के महल खड़े करने के लिए जंगल और पहाड़ काटने से वातावरण का संतुलन बिगड़ गया था. अपने रसूखदार होने का दंभ भरते हुए माटी का सीना चीरकर पी गए थे सारा पानी वो कमबख्त, जो अपने आपको सर्वोपरि मान बैठे थे.

“अब कैसी रही? अरे, अब कैसी रही बोलो, जब प्रकृति माँ ने तुम्हें तुम्हारी अदनी सी औकात दिखा दी” एक गाँव के सूने आँगन में खड़ा बूढ़ा पेड़, जो कई सावन देख चुका था, अपना गुस्सा निकालते हुए कह रहा था, मुफ्त में मिला, तो सारा कुछ अपनी बपौती समझ बैठे थे तुम इंसान. अब पानी कहाँ बचा है खुद तुम्हारे लिए, जो तुम हमें पिला दोगे, क्यों? आओ, घटिया सोच वालों, कहाँ भाग गए लालचियों, अपनी-अपनी आलीशान कोठियाँ छोड़कर, पानी की तलाश में?”

“क्या हुआ दादाजी?” पास ही पड़े एक बीज ने आतुर होकर पूछा, जिसकी अभी कोंपल भी नहीं फूट पाई थी.

“लगता है, अब मेरा अंतिम समय आ गया है बेटे” बूढ़ा पेड़ आह भरते हुए बोला, “निर्लज्ज और एहसान-फरामोशों को जरा भी दया नहीं आई थी, बड़ी-बड़ी मशीनों से काट डाला था मेरे अपनों को, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी उन शैतानों के लिए बलिदान कर दी थी. अरे, क्या कुछ नहीं किया था हमने? उन्हें खेलने दिया, झूलने दिया, मीठे-मीठे फल दिए, छाँव दी और तो और इनके आलीशान घरों को सजाने-संवारने तक के लिए हमने अपने आपको कुर्बान कर दिया था.”

“ये बलिदान क्या होता है दादाजी?” नन्हें बीज ने उत्सुकता से पूछा.

“किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपको पूरी तरह से समर्पित कर देना ही बलिदान कहलाता है, मेरे बेटे” बूढ़ा पेड़ रूँधे स्वर में समझा रहा था, “हम अपने जन्म से लेकर मरण तक निस्वार्थ भाव से सेवा करते रहते हैं; अपना प्रेम लुटाते हैं. माटी में अपने आप को न्योछावर कर बूढ़े होने तक बलिदान करना ही तो हमारा एकमात्र धर्म है बेटे.”

“और मनुष्यों का धर्म क्या है दादाजी, सिर्फ हमें काटना और अपना मतलब पूरा करना?” भोले बीज ने निराश स्वर में पूछा.

“नहीं बेटे, समय भी एक जैसा नहीं रहता. कभी हमारे पूर्वजों को पूजने और सहेजने वाले मनुष्य भी हुआ करते थे” बूढ़े पेड़ ने अपनी पुरानी यादों पर पड़ी मिट्टी साफ करते हुए बताया, “बहुत पहले की बात हैं, तब मेरी नन्हीं कोंपलें ही फूटी थीं, मैंने देखा कि इस घर के मालिक सहित पूरे गाँव के लोग नए-नए कपड़े पहने, ढ़ोल-नगाड़ों के साथ नाच-गाना कर रहे थे और हमारे आजू-बाजू घूम-घूम कर कुछ रीति-रिवाज कर खुशियाँ बाँट रहे थे. वे लोग बड़े आनंदित थे और हमें अपनी जान से भी ज्यादा चाहते थे, फिर कुछ सालों बाद ऐसा समय भी आया कि पेड़ों-पौधों, जंगलों सहित नदी-तालाब और यहाँ तक कि जमीन को भी कुछ मुट्ठीभर अमीरों को कौड़ियों के दाम बेच दिया गया. फिर उन सूट-बूट वालों ने, न रात देखी न दिन और अपनी पूरी ताकत हमें जड़ से उखाड़कर बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ और आलीशान कालोनियां बनाने में झोंक दी. बेटा, मैंने और मेरे परिवार ने इतना काला धुआँ पिया है कि हम अंदर से बिल्कुल काले और खोखले हो गए हैं. कई बार प्रकृति माँ ने अपना रौद्र रूप भी दिखाया, लेकिन इन जाहिल-गंवारों ने, प्रकृति को पूजने और सहेजने वालों के साथ-साथ हमें भी खत्म कर दिया.”

“दादाजी संभालिए अपने आप को, आप गिर रहे हैं.” बीज ने चिंतित होते हुए कहा, तो बूढ़ा पेड़ नम आँखों से बीज को निहारता हुआ बोला, “मेरे आखिरी शब्द हमेशा याद रखना बेटे, अगर जी पाओ, तो खुब फलना और फूलना. अपने नैसर्गिक धर्म का पालन करते हुए बलिदान की पराकाष्ठा को भी पार कर जाना, लेकिन कभी भी मनुष्य जाति पर विश्वास मत करना और न ही कभी उनपर उपकार करना. तुझे अपना ख्याल खुद ही रखना होगा बेटे, अब कोई नहीं आएगा तुझे सहेजने, तुझे पूजने. अलविदा, मेरे प्यारे बेटे, अलविदा.”

*****

भारत देश हमारा

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव

सब देशों मे देश हमारा, जैसे तारों में 'ध्रुव तारा' ,
प्यारा-प्यारा सबसे न्यारा ऐसा भारत देश हमारा.
फूल यहाँ खुशबू फैलाएँ, गीत गगन में पँछी गाएँ,
जय जवान जय किसान' का,यहाँ सदैव गूँजें नारा.

लहर-लहर लहराए गंगा, फहर-फहर फहराए तिरंगा.
आओ नाचें मिलकर गाएँ, जन गण मन अधिनायक प्यारा.
मन की बात तुम्हे बतला दी, हमको प्यारी है आजादी.
अमर रहा है, अमर रहेगा युग-युग तक 'गणतंत्र' हमारा.

*****

वृक्षारोपण

रचनाकार- निहारिका झा

लगा लिया है,
इक़ पौधा हमने
बने जो कल को नीड़
बने जो कल को नीड़
बदले सृष्टि की तस्वीर
बदले मानव की तकदीर.
लगा लिया.

हरित हरित हो छाया जिसकी
मिलेगी शुद्ध वायु
पाएं इससे औषधि
बालक युवा और वृद्ध
आस धरी हमने मन में
बने हरा-भरा परिवेश
एक नीड़ में इतनी ताकत
बचा ले यह परिवेश.

*****

कुकरी पिला के जान बाहचगे

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

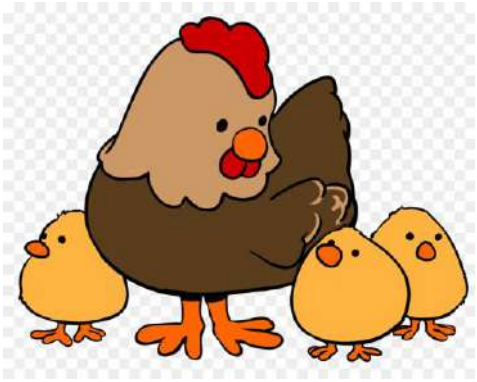

एक ठन बड़का कुकरी के तीन ठन चियां पिला रहय, तीनों चियां म अब्बड़ मया रहय.दिन भर कोला- बारी म अपन दाई के संग किंदर- किंदर के चरत रहय, अऊ संझऊती होवय त डोकरी दाई के घर के गोड़ा तरी म दुबक के सुते रहय. मियारी कुकरी ह अपन डेना म समेटके तीनों लईका ल पोटार के सुतावय. असने करत- करत चियां मन बने एकक पउवा भर के हो घलिन. मियांरी कुकरी ह ओमन समझाय रहय कि लईका हो तुमन मोर तीरेच म रहे करा जादा दूर झन जाय करा. तभो ल ओमन ओकर महतारी करा ल थोरकन धुरिहा घलो म जाके चरत - बुलत रहय.

गोड़ई म भियां ल खनय, कोड़ियावय अऊ चोंच म ठोनक- ठोनक के अपन खाय के लईक चरा ल खावत जावय. एक दिन अब्बड़ झोर-झोर के पानी गिरिस, चियां पिला मन घर के कोंटा म सपटे रहय. पानी के गिर के मारे घर निकले बर नई पाय रहय. तीन बजती के बेरा म पानी गिरई ह छोड़िस. कुकरी अऊ ओकर चियां मन कोरकीर - कोरकीर दउड़त चरे बर निकलिन.

चिखला ल खोदलके किरा- मकोरा मन ल गपागप खावत रहय. तभे सबले नानकन चियां के चोंच म चिखला ह सड़बड़ा गे, चियां ह बन कचरा अउ भियां म चोच ल घसरीच तभो ले नई हिटत रहय. चियां ह अगल- बगल ल देखिस त थोरकन धुरिहा म पानी के धार बोहावत रहय.

चियां ह ओई जगा जाके अपन चोंच ल धोहा कईके गईस.

त पानी के धार थोरकन जादा बढ़गे अऊ चियां ह बोहाय लागिस. चियां ह जोर- जोर से चियोक- चियोक नरियाईस, त ओकर दाई अऊ दूनो अऊ चियां मन दउड़त आईन. चियां ह बोहावत रहय अऊ संगे -संग एहुमन दउड़त जात रहय. एक जगा आघू म पानी के बीच म बड़का पथरा रहय.

चियां ह जाके पथरा म अरहज गे. अऊ चियोक- चियोक नरियावत रहय, तीनों लईका अऊ महतारी घलो ओकर सीधा म हबर घलिस, फेर ओला लाने नई सकता रहय. चियां के डेना ह गुदगुद ले भींज गे रहय अऊ जाड़ के मारे लदलदलद कांपत रहय. मियांरी कुकरी ह मने मन म गुनत रहय, का उदीम करके मोर लईका ल बहचावा भगवान् कईके, ओला रोवासी आवत रहय. मियांरी कुकरी बड़ चउतरा रहय, तभे ओकर नजर एक ठन झिटका म परिस, मियांरी ह झट ले अपन चोंच म धरके ओला घिल्लावत पानी के तीर म ले आनिस. तीनों महतारी पिला मन झिटका ल ढकेल के एक कोती ल चियां कोती सीधा रखिन, त धीरे- धीरे चियां ह झिटका के सहारा म पानी ल नाहक के अपन दाई करा आ घलिस. घाम म एक जगा बईठ के डेना ल सुखोईस अऊ चियां के जान बाहच गे, संझा होईस सब झन बड़का दाई के गोड़ाई तरी आ घलिन अऊ तीनों झन अपन महतारी के डेना ल धरके सुत घलिन. ओ दिन ले चियां मन अपन दाई के तीर- तखार म रहय, चरय, बुलय धुरिहा नई जावय.

*****

सावन आया झूम के

रचनाकार- सुनीता साहू

जाने कहाँ-कहाँ से, आया बादल घूम के.
देखो-देखो आया, फिर से सावन झूम के.

एक जमाने से ये धरती रानी कितनी प्यासी है?
पेड पौधों के चेहरे पर भी, न जाने कैसी उदासी है?
रिमझिम-रिमझिम बरस रही है, बूंदें पत्तों को चूम के.
देखो-देखो आया, फिर से सावन झूम के.

बंजर धरती में बिखरी, एक अजब हरियाली है.
ठंडी-ठंडी चल रही हवा भी कितनी मतवाली है.
फैल रही हवाओं में, खुशबू फूल-कुसुम के.
देखो-देखो आया, फिर से सावन झूम के.

*****

कैलाश में सावन

रचनाकार- सोमेश देवांगन

लग गय सावन बरसय पानी,
कैलाश मा पानी धार बोहाय.
पार्वती गणपती अउ कार्तिक,
भोले संग गण मन मजा उठाय.

बाबा डम डम डमरु ला बजाय,
रिमझीम रिमझीम पानी गिरय.
नंदी गण सब मिल झुमय गावय,
पानी मा फीज के मजा पावय.

मुसवा मजूर ऐति ओती भागय,
गणपति कार्तिक पीछू जावय.
लड्डू ला धर गपागप खावय,
सुघ्घर मोर कैलाश हा लागय.

भोले भंडारी भांग ला मंगाय,
नंदी जा झटकुन दौड़त लाय.
पार्वती माँ ला पीसे ल काहय,
भांग धतूरा ला पियत जाय.

पानी घलो नजारा ला देखय,
रुक रुक के थोक थोक बरसय.
भोलेबाबा के चरण ल देखय,
चरण पखारे पानी हा तरसय.

ब्रम्हा विषणु नजारा ला देखय,
भोले ला खेलत देख के हँसय.
जेखर चरण मा सँसार ह रहय,
तेन हर पानी मा नाच के खेलय.

लग गय सावन बरसय पानी,
कैलाश मा पानी धार बोहाय.
सब खेलय कुदय नाचय गावय,
भोले संग गण मन मजा उठाय.

*****

शंकर भोला

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

शंकर भोला औघड़ दानी,
बहे जटा से गंगा रानी.
पांव परे जम्मो नर नारी,
जिनगी के हे संकट हारी.

कानों पहिरे बिच्छी बाला,
गर में बइठे साँप निराला.
डम डम डम डम डमरू बाजे,
बघवा छाला अंग म साजे.

नाम हवै भोला भण्डारी,
येखर महिमा जग मा भारी.
धरती के ये पालन हारी.
करे सदा सब मंगल कारी.

भोला के जे गुण ला गाथे,
सदा खुशी आनंद ल पाथे.
सावन मास बहे जलधारा,
शिव के सबो लगाये नारा.

*****

सावन के सुवागत हे

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित"

बादर बदबदावत हे, बरसा बरसावत हे,
अमरित अमावत हे, सावन के सुवागत हे.

गली खोर मा चिखला, नाँगर, भँइसा, बइला,
खेती-खार, मुँहीटार, नसा चढ़गे हे सब ला.
जाँगर ला जगावत हे, करम ला कमावत हे.
अमरित अमावत हे, सावन के सुवागत हे.

चुहय छानी-परवा, छलकै नँदिया-नरवा,
दबकै चिरई-चाँटी, दउड़ै गाय- गरवा.
माटी ममहावत हे, चंदन जइसे लागत हे.

हरियर धरती धानी, सकेलय सुग्घर पानी,
जुच्छा हावय बिन जल ये जग जिनगानी.
भुँईया हा पियास बुझावत हे, छाती ला जुड़ावत हे,
अमरित अमावत हे, सावन के सुवागत हे.
बादर बदबदावत हे, बरसा बरसावत हे.

*****

चल रहा हूँ

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

चल रहा हूँ जल रहा हूँ,
सूरज सा निकल रहा हूँ.

जीत का मैं लक्ष्य लेकर,
सच का मैं पक्ष लेकर,
चल रहा हूँ.

मेहनत दिन रात कर,
राह अपनी गढ़कर.

जीत का जुनून लिए,
हौसलों को साथ लिए,
चल रहा हूँ.

मन में विश्वास लिए,
जीत का आस लिए.

शाम सा मैं ढलकर,
सूरज सा निकलकर,
चल रहा हूँ.

भुजाओं में बल लेकर,
समस्या का हल लेकर.

चट्टानों को तोड़कर,
मुख राह से मोड़कर,
चल रहा हूँ.

*****

ज्ञान -भक्ति का स्वरूप

रचनाकार- सीमा यादव

ज्ञान एवं भक्ति ये दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. देखने में, सुनने में एवं समझने में वैसे तो दोनों का पर्याय एक जैसे ही समझ में आता है.किन्तु गहराई में जाने पर दोनों में सूक्ष्म अंतर दृष्टिगत होते हैं.ज्ञानी ज्ञान पाकर अपने ज्ञान पर अभिमान कर सकता है, परन्तु एक भक्त भक्ति पाकर कभी भी अभिमानी नहीं हो सकता. यदि किसी भक्त में अभिमान आंशिक मात्र भी परिलक्षित होते हैं तो समझ लीजियेगा कि ये विद्वान, पंडित या ज्ञानी तो हैं किन्तु एक भक्त नहीं है.

भक्त का स्थान ज्ञानियों से भी श्रेयस्कर होता है. उनकी वाणी, उनके विचार, उनके व्यवहार में विनम्रता स्वाभाविक रूप से आ जाती है. ये उनमें निहित उदात्त गुण होते हैं. उनकी कोई भी विशेषता दीखावटी या बनावटी नहीं होती है. ये सारे उत्तम गुण सहज रूप में ही उनमें स्थायी रूप से व्याप्त हो जाते हैं. आजकल के लोगों को ये सारी बातें निरर्थक लग रही होगी कि आज के जमाने में विनम्रता का कोई स्थान नहीं है. विनम्रता दिखाने से लोगों की नजरों में सम्मान कम होने लगता है,इत्यादि बातें या डर उन्हें घेरे रहते हैं और इसीलिए उग्र व्यवहार या पद का रौब दिखाकर अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति कठोर बर्ताव करते हैं. मानसिक और शारीरिक रूप से भयभीत करके उन्हें प्रताड़ित करते रहते हैं. जो कि कदापि न्यायसंगत नहीं है. बल्कि ऐसा करके वे अपने ज्ञान का दुरूपयोग करते हैं.

ये बात निश्चित ही अच्छी हैं कि आपने कठोर, कड़ी और अनुशासित जीवनचर्या का पालन करके एक सर्वोच्च पद में आसीन हो जाते हैं. किन्तु अपने ज्ञान का दर्प करके लोगों को नीचा दिखाना, उन्हें तिरस्कृत करना कहाँ का नियम है? यदि इस बारे में तनिक भी कोई ज्ञानी अपने व्यवहार पर सोचना शुरू कर दें तो अवश्य ही बहुत कुछ समस्याओं से निदान पाया जा सकेगा. सामान्यतया हम देखते हैं कि लोगों का एक समूह ऐसा भी होता है जो कि

सीधे -सादे,सहज - सरल एवं नम्र स्वभाव के लोग होते हैं इनका जरा भी कद्र नहीं करता है. बल्कि उनकी अच्छाई का गलत ढंग से उपयोग करने लगता है. जो कि सर्वथा अनुचित है. यदि आज के भागमभाग दुनिया में कुछेक गुणीजन या बुद्धिजन ही ऐसे निर्मल, निश्छल एवं निष्कपट स्वभाव वाले होते हैं. अतः हमें ऐसे महामने, महामते ज्ञानियों के लिए अत्यंत आदर और सम्मान के भाव रखे जाने चाहिए. क्योंकि ऐसा करने से हम निश्चित ही प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से भगवान की भक्ति कर रहे होते हैं. भक्त को सम्मान या आदर देना अर्थात् भगवान की भक्ति को सम्मान देने जैसा होता है. अतः हमें यह बात समझ लेनी होगी कि विनम्रता किसी कमजोरी को नहीं दर्शाती है. वरन् यह तो हमारी परिपूर्णता एवं परिपक्वता की पहचान है. किसी का स्वभाव बहुत ही गंभीर होता है.तो इसका मतलब यह कदापि नहीं है कि उसे कुछ ज्ञान या समझ नहीं हैं. बल्कि ऐसे धीर-वीर-गंभीर स्वभाव वाले व्यक्ति ही क्रांति या परिवर्तन लाते हैं. वे अपनी शक्ति का सही समय एवं सही स्थान पर व्यय करते हैं. अनावश्यक या अनर्गल चीजों से स्वयं को कोसो दूर रखते हैं.

*****

जंगल के जीव

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

लम्बी पूछों वाली बन्दर,
पेड़ों की डाली में बन्दर,
गांव गली और शहर के अंदर,
उछल कूद करता है बन्दर.

उँची गर्दन लम्बी टाँगे,
देख उसे सब जानवर भागे,
नाम है उसका जी से जिराफ,
करता सबको वो है माफ.

जंगल का राजा हैं बाघ,
बैठ दुबके लगाता घात,
भूख लगी तो सबको खाता,
नहीं देखता जात और पात.

बिल्ली को जब लगी प्यास,
म्याऊँ म्याऊँ कर आई पास,
देख दूध से भरा गिलास,
बढ़ गई दूध पीने की आस.

गोल मटोल हाथी का तन,
लगता उसका हर्षित है मन,
सूपा जैसे उसके कान ,
देखों देखों उसकी शान.

उँची गर्दन पीठ कूबड़ पर,
पैर है ऊँट के गद्देदार,
रेगिस्तान का जहाज कहलाता,
रेत में चलता तेज रफ्तार.

*****

गुमनाम हो गई

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मैं हिंदी गुमनाम हो गई,
अंग्रेजी की आई बहार.
हिंदी भाषा गायब हो गई,
देशी अंग्रेजों की लगी कतार.

एक, दो,तीन गए सब भूल,
हिंदी भाषा पर बैठा धूल.
वन टू थ्री सबको है कबूल,
हिंदी लगे अब काटो वालो बबूल.

खुद के घर से बेदखल हो गई,
सब के मुख से ओझल हो गई.
गलती बस मेरे से इतनी हो गई,
छब्बीस के जगह मैं बावन हो गई.

*****

गरमी के छुट्टी

रचनाकार- आलोक कुमार शर्मा

गली खोर मा गूंजे किलकारी,
बारी - अंगना मा चुहुर परागे.
ममादाई के कोरा मा ओखर,
नाती नतुरा के टोली आगे.
पूरा गाँव जान - डारिस की
गरमी के छुट्टी के दिन आगे.
अब निकलही बांटी - भौरा,
गिल्ली डंडा आगे - आगे.
लेकिन ये का गजब होगे,
सरी लईका मोबाईल मा भुलागे.
लईका भुलागे आमा अमली,
चौमिन - मैगी के दिन हर आगे.
अटकन - बटकन दही चटाका,
छू - छुवाऊल के खेल नंदागे |
लईका मन के बचपना बुझागे,
मोबाईल के अंजोर मा बचपना सिरागे.
यहा विज्ञान के जुग मा संगी,
ममादाई के कहानी गवांगे |
अईसन नजारा ला देख के
ममादाई के डोकरी आँखी मा आंसू आगे.

*****

हिन्दी हिन्द की शान है

रचनाकार- श्रीमती टी.विजयलक्ष्मी

हिन्दी आन हमारी है,
हम सब को प्यारी है.
हिन्दी से सरस, सरल,
मधुर न कोई गान है.
हिन्दी के शब्दों की शक्ति,
देती है सशक्त अभिव्यक्ति.
यह व्यक्त करती जज्बात है,
हिन्दी में कुछ तो बात है.
हिन्दी में छुपे कुछ राज है,
ये भाषाओं की सरताज है.
हिन्दी हमारी साधना है,
हिन्दी ही आराधना है.
हिन्दी में एक साज है,
हिन्दी ही आवाज है.
हिन्दी पावन नाम है,
राष्ट्र की पहचान है.
वीणा की झनकार है,
अमृत की रस धार है.
हिन्दी का गुणगान है,
हिन्दी, हिन्द की जान है.

*****

ओ हो काली निराली कोयल

रचनाकार- श्रीमती टी.विजयलक्ष्मी

प्यारी-प्यारी न्यारी कोयल,
कुहू- कुहू कर गाती कोयल.
इस डाली से उस डाली पर,
फुदक-फुदक कर जाती कोयल.
ओ हो काली निराली कोयल.

आम के पेड़ों पे बौर आए जब,
गाती तुम तब सुर में कोयल.
खाकर आम मीठी रसीली,
इठलाती तुम डोली कोयल.
ओ हो काली निराली कोयल.

बागों में जब भी आती हो तुम,
झूम उठते हैं,भौरें-तितलियाँ.
मन को तुम लुभाती कोयल,
मीठी, सुरीली भोली कोयल.
ओ हो काली निराली कोयल.

*****

माटी के मुसवा

रचनाकार- सोमेश देवांगन

माटी के मुसवा, तोरे करम जागे हे.
गणपती संग तहू ला, देवता माने हे.
चंदन चोवा लगा, फूल पान चढ़ाय.
खा मिठई कहिके, आघू मा मढ़ाय.

माटी के मुसवा, तोरे करम जागे हे.
गणपती संग तहू ला, देवता माने हे.

हाँथ पाव ला मनखे, जोरत हे भारी.
गणपती देवा के, करे तय रखवारी.
कहे बिगड़े काम बना, मुसवा सवारी.
कहे जियत भर रइबो, तोरे अभारी.

माटी के मुसवा, तोरे करम जागे हे.
गणपती संग तहू ला, देवता माने हे.

माटी के हवस ता, हवय रे तोर मान.
जियत रइते तो, ले देतिस तोर परान.
इही तो मनखे हरय, जेन बदल जाथे.
जियत ल छोड़ के, बेजान ला मनाथे.

माटी के मुसवा, तोरे करम जागे हे.
गणपती संग तहू ला, देवता माने हे.

*****

जल की रानी है मछली

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

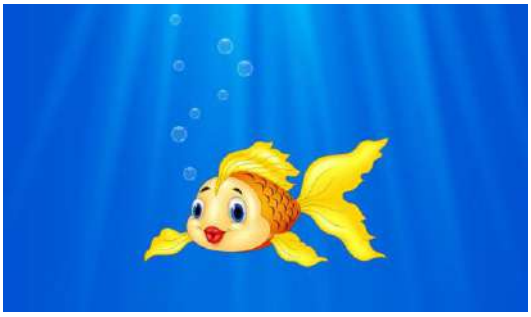

जल की रानी है मछली,
बड़ी सयानी है मछली.

चाँदी जैसे इनके रूप,
इनका जीवन है अनूप.

मछली बच्चों को है भाती,
मगर हाथ उनके ना आती.

छूने जो उसे हाथ लगाओ,
घबराकर वह छुप जाती.

जल से बाहर उसे निकालो,
तड़प-तड़प कर मर जाती.

*****

गुरु ऋण

रचनाकार- जय शेखर

गुरु ऋण में इतना डूबा हूँ
जीवन भर न उतार सकूँगा.

अंधकार को हरा आपने,
खाली घट को भरा आपने,
परछाई बन संग चलकर,
जीवन रोशन करा आपने.
जो कुछ पाया कृपा आपकी,
मेरा कुछ न, स्वीकार करूँगा.

बड़े यत्न से ज्ञान मिला,
यश वैभव सम्मान मिला,
इस जीवन का माली बनकर,
बाग आपने दिया खिला.
प्रण है खुशबू फैलाऊँगा,
निज शिक्षण से, विस्तार करूँगा.

*****

हमें बताओ

रचनाकार- सतीश चन्द्र भगत

हमें बताओ मम्मी जी,
फूलों से क्या बतियाती
तितली रानी छुप- छुपकर.

हमें बताओ मम्मी जी,
चीं- चीं, चूं- चूं क्या गाती
चिड़िया रानी उड़- उड़कर.

हमें बताओ मम्मी जी,
कैसे सूरज की किरणें
आ जाती है खिड़की पर.

हमें बताओ मम्मी जी,
हल्ला- गुल्ला क्यों मचाते
आदमी चौक- चौराहे पर.

*****

पितर पाख

रचनाकार- जितेंद्र सिन्हा

डोकरी दाई बैठे हे तेलई,
परवा ले ताकत हे बिलई.
बिलई बरा ल झाड़ दिही का,
डोकरी दाई मार दिही का.

बरा संग चुरत हे सोहारी,
कलछुल ल धरे हे सुआरी
कुकुर झांकत हे बैठ दुआरी,
अरे कुकुर झाड़ दीही सोहारी.

सोहारी संग चुरत हे गुजिया,
डोकरी दाई तरत हे गुलगुल भजिया.
पितर पाख में चूरे हे मछरी साग,
जुरियाये हे छानही में काग.

कौआ संग पितर मन खाहि प्रसाद,
आगे हे पितर पाख खाबो दार भात.

*****

ताल-तलइया

रचनाकार- महेन्द्र साहू

पानी आया छम-छम-छम,
भर गया ताल-तलइया.
चुन्नू-मुन्नू,टोनू-मोनू ,
नाचे ताता थईया.

मछली तैरती छप-छप-छप,
मेंढक टर्र - टर्र टर्राया.
ताल किनारे बैठा बगुला,
मछलीयों ने देख चिल्लाया.

इधर-उधर मेंढक कूदे,
टर्रटों-टर्रटों गाना गाया.
ताल किनारे बैठा साँप,
देख मेंढक जी घबराया.

मुन्नी डुबक-डुबक नहाये,
बड़े मजे से ताल में.
तैर रही सुंदर मछली,
फँस गयी मुन्नी के बाल में.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

रजनी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी

वृक्षनरी

आज सोनाधर बहुत खुश था. खेत में गन्ने की फसल लहलहा रही थी. अहा! इससे गुड़ बनेगा गुड़ बेचने से बढ़िया आमदनी होगी. गन्ने की फसल काटने के बाद उसके छोटे-छोटे तनों को खेतों में ही छोड़ दिया जाता है. इन्हीं से तो नई कोपलें फूटती है न.

सोनाधर बहुत मेहनती किसान था. पर उसे अपने खेतों की सिंचाई के लिए बड़ी दूर से पानी लाना पड़ता था. वह कभी-कभी सोचता, कि खेतों के आसपास ही जल स्रोत होता तो कितना अच्छा होता.

सोनाधर प्रतिदिन सुबह-सुबह ही चिड़ियों की चहचहाहट के साथ खेतों में पहुँच जाया करता था. आज जब वह अपने खेतों में पहुँचा तो उसने पिंपलिका पंक्तियां (चीटियों की कतार) देखी. यह साधारण चीटियाँ नहीं थीं. इसे देखकर सोनाधर परेशान होकर इधर-उधर दौड़ने लगा किसने किया? विश्वासघात! यह चींटियाँ तो पल भर में पूरी फसल चट कर जाएँगी. वह रुआँसा हो गया. खेत में जगह-जगह बाम्बियाँ उग आई थीं. उसने अपने आँसू पोंछे और सोचने लगा कि तुरंत ही कुछ ना कुछ किया जाए नहीं तो दो दिन में पूरी फसल यह कीट चट कर जाएँगे.

वह दौड़ा और अपने खेत के बीचों-बीच जगह-जगह गन्ने के रस से भरी हंडिया रखता गया. जब यह हंडिया भर जातीं तो दूर मैदान में जाकर उन्हें उलट देता. देखते ही देखते पिंपलिका पंक्तियों की दिशा उसके खेत से दूसरी ओर जाने लगी. यह कीट वृक्षनरी अर्थात दीमक थे.

जो फसलों में पाई जाने वाले शर्करा को चट करने के लिए फसलों के तनों में छेद कर देते हैं. सोनाधर द्वारा गन्ने के रस से भरी हाँडियों की ओर यह कीट आकर्षित होते गए. और फसल से इन चीजों का ध्यान हटता गया. मटकियाँ जब कीटों से भर जाती तो सोनाधर उन्हें दूर जाकर उलट आता था. धीरे-धीरे कीटों से फसल सुरक्षित हो गई.

अगली सुबह खेत में खुशी के आँसू आँखों में लिए सोनाधर भूमि पर बैठा लकड़ी के तिनकों को जमीन पर गाड़ कर कुछ सोचने लगा था. वह आश्चर्य से भर उठा लकड़ी के तिनके भूमि पर आसानी से गड़ते ही जा रहे थे. ऐसा पानी वाली भूमि में ही संभव होता है. और यह क्या लकड़ी के तिनकों पर कुछ कीट चिपके हुए मिले.

यह "वृक्षनरी" दीमक की बाँबियाँ जल स्रोतों का अच्छा स्रोत होने का संकेत भी बताती हैं. सोनाधर खुशी से झूम उठा. उसके खेतों के बीच पानी का स्रोत है. ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली.

आखिर प्रकृति इतनी स्वार्थी तो नहीं होती न? न ही इसके जीव. शर्करा प्रेमी वृक्षनरियों (दीमकों) ने शर्करा से भरी हाँडी का प्रतिदान भूमि में जल का पता बता कर दिया. अब यह पिंपलिका पंक्ति खेतों से दूर जा रही थी. यह वृक्षनरी सोनाधर की आँखों में और खेत की फसल को नीर(जल) से भरकर कहीं और जा रही थी. दूर, बहुत दूर.

<u>सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी</u>

<u>टिंकू की शरारत</u>

टिंकू 6 साल का लड़का था, दिनभर शैतानी करता और खेलता कूदता रहता. टिंकू का बड़ा भाई अंकू गंभीर स्वभाव का था परंतु टिंकू का ध्यान शरारतें करने में ज्यादा लगा रहता था. टिंकू के घर में एक छोटा सा बगीचा था, वहाँ पर पानी के छोटे छोटे पोखर बनाकर उनके ऊपर सुंदर छोटा सा फव्वारा भी बना हुआ था, जिससे पानी छन छन कर बाहर आता, और सभी पौधों पर फैल जाता और फिर रिसाइकल होकर उसी जगह पर पहुँच जाता था. बगीचे में छोटे-छोटे पौधों के साथ ही पीपल का एक बड़ा पेड़ भी था. पेड़ पर मधुमक्खियों ने अपना छत्ता बनाया था. बगीचे की घनी छाया और ठंडा वातावरण पाकर मधुमक्खियों ने अपना छत्ता बनाया था. और बड़ी शांति से वहाँ रह रही थीं. एक दिन टिंकू की नजर उस छत्ते पर पड़ी उसने घर आकर मम्मी पापा को यह बात बताई. मम्मी पापा ने कहा,वह मधुमक्खियों का छत्ता है, उसके अंदर शहद है, उन्हें छेड़ा ना जाए तो वे कुछ भी नुकसान नहीं करती हैं. शांति से उन्हें रहने दो. टिंकू ने चुपचाप बात सुन तो ली, पर जब भी वह बगीचे में जाता, एक बार उस छत्ते को जरूर देखता, उसे छत्ते के आसपास मधुमक्खियाँ भी भिनभिनाती हुई नजर आतीं. एक दिन उसे शरारत सूझी, उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाकर छत्ते पर दे मारा, पत्थर के प्रहार से छत्ता टूट कर दो भागों में बँट गया. एक टुकडा घर के सामने जाकर गिरा, दूसरा

छोटा टुकड़ा छोटे फव्वारे पर गिरा, और पानी मे बहने लगा. कुछ मधुमक्खियाँ पानी में गिर गईं. शहद से लिपटे होने के कारण पानी में तैर नहीं पा रही थीं, वे डूबने लगीं. उन्हें पानी में डूबता देखकर टिंकू अपनी शरारत भूल गया,वह जल्दी से पानी के पास आया और छोटी सी लकड़ी पानी में डालकर मधुमक्खियों को सहारा देकर उन्हें बाहर निकाल दिया. किनारे पर आते ही वो तेजी से उड़ गईं. शरारती टिंकू ने मधुमक्खियों के छत्ते को तोड़कर जो गलती की थी उसे उसने मधुमक्खियों की जान बचाकर ठीक कर लिया और घर आकर मम्मी पापा से क्षमा माँग ली.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

चींटी और किसान

श्यामू नाम का एक किसान था. वह रोज की तरह आज भी नदी किनारे अपने खेत जा रहा था. खेत पहुँचने के पहले श्यामू को नदी पार करनी थी. श्यामू नदी के पास पहुँचा ही था कि उसे बचाओ-बचाओ की आवाज सुनाई दी. रामू ने चारों ओर देखा लेकिन उसे कोई दिखाई नहीं दिया. वह आगे बढ़ा तभी उसकी नजर पानी में चीटियों के झुण्ड पर पड़ी. श्यामू को लगा कि बचाओ-बचाओ की आवाज चीटियों की है. श्यामू ने एक डंडे के सहारे चीटियों को नदी से निकाला.सभी चीटियों को निकालने के पश्चात श्यामू ने चीटियों से पूछा- "तुम सब कहाँ जा रहे हो और यह नदी पार करने की जरूरत क्यों पड़ गई." चीटियों की मुखिया रानी चींटी ने बताया- "किसान भाई! हम सब बहुत परेशान हैं, हमारा घर नदी के उस पार खेत के पास में है. घर पर एक सर्प ने कब्जा कर लिया है. "वह सर्प कहता है कि यह मेरा घर है, तुम लोग मेरे घर के आस पास आओगे तो सभी को मार डालूँगा उस सर्प के डर से हम लोग नदी के इस पार आए हैं. आप ही बताओ भाई हम सब उस सर्प का मुकाबला कैसे कर सकते हैं? श्यामू ने कहा - कब तक तुम लोग इस तरह भागते रहोगे? फिर घर बनाओगे, उस पर भी कोई कब्जा कर लेगा और तुम्हें परेशान करेगा. तुम सबको डरने की जरूरत नहीं है यदि तुम सब साथ मिलकर सर्प का मुकाबला करोगे तो निश्चित ही तुम्हारी जीत होगी. एकता में बल है. हिम्मत से और साथ मिलकर कार्य करने से बड़े-बड़े काम भी आसान हो जाते हैं. यह कहकर श्यामू ने सभी चीटियों को पुन: नदी के उस पार छोड़ दिया. श्यामू की बातों से प्रेरित होकर रानी चींटी के निर्देशन में अपने घर में सोए हुए सर्प पर एक साथ सभी चीटियों ने हमला कर दिया. सर्प पूरी तरह चीटियों की जाल में फँस गया. सर्प अपनी मृत्यु को निकट देखकर डर गया. उसने सभी चीटियों से क्षमा माँगते हुए कहा- मैं इस घर से निकल जाऊँगा, फिर कभी तुम्हारे घर नहीं आऊँगा और कभी परेशान नहीं करूँगा. रानी चींटी को सर्प पर दया आ गई. उसने अपनी साथी चीटियों से सर्प को एक बार क्षमा करने को कहा. चीटियों ने रानी चींटी के कहने पर सर्प को छोड़ दिया. सर्प अपनी जान बचाकर वहाँ से दूर चला गया. चीटियाँ अपना घर वापस पाकर खुश हो गईं और श्यामू को धन्यवाद दिया जिसकी प्रेरणा से सर्प का मुकाबला किया जा सका हुँ.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

भाखा जनऊला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

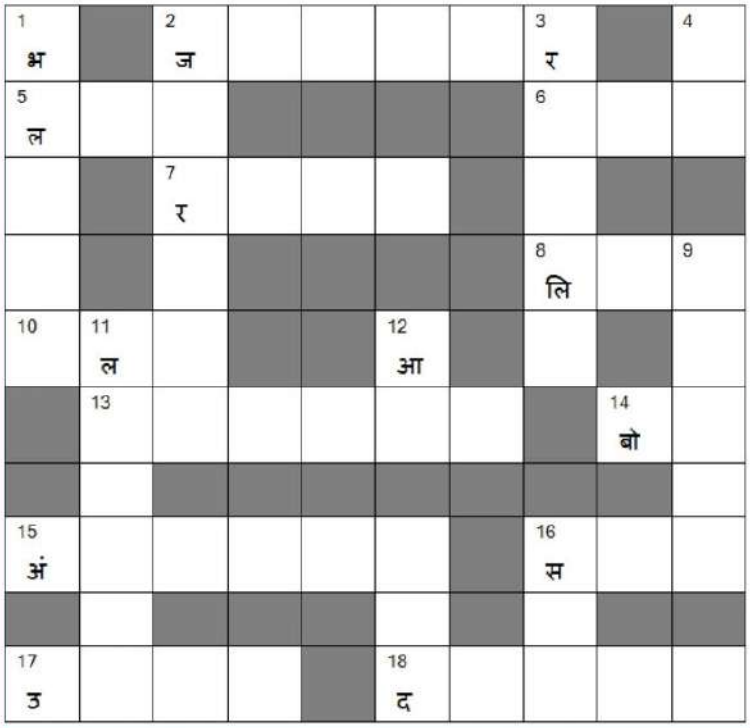

बाएँ से दाएँ

2. जगमगाहट 5. शर्माता
6. कद्दू 7. बचा-खूचा
8. कछुआ 10. हिलता
13. एक भाजी का नाम
14. घुसा, डाल
15. जल्दबाज़ी 16. साझा
17. रूमाल
18. दाल मथने का वस्तु

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

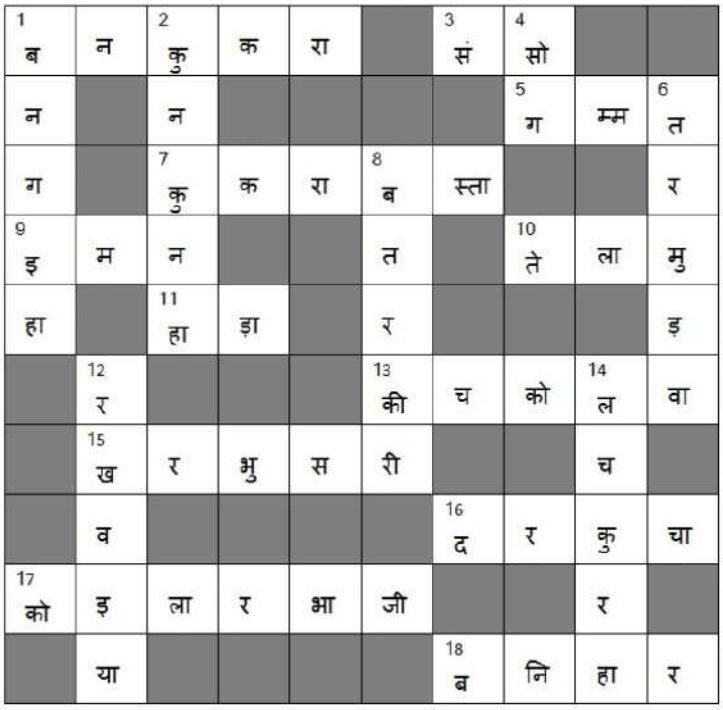

ऊपर से नीचे

1. ज़ोरज़ोर से बोलने - वाला, बातूनी,
2. तितर3 बितर-. भिंडी
4. कहावत 9. फालतू, बदमाश 11. जल्दी जल्दी-
12. इशारा 16. एक पूरा वस्तु

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्धन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।